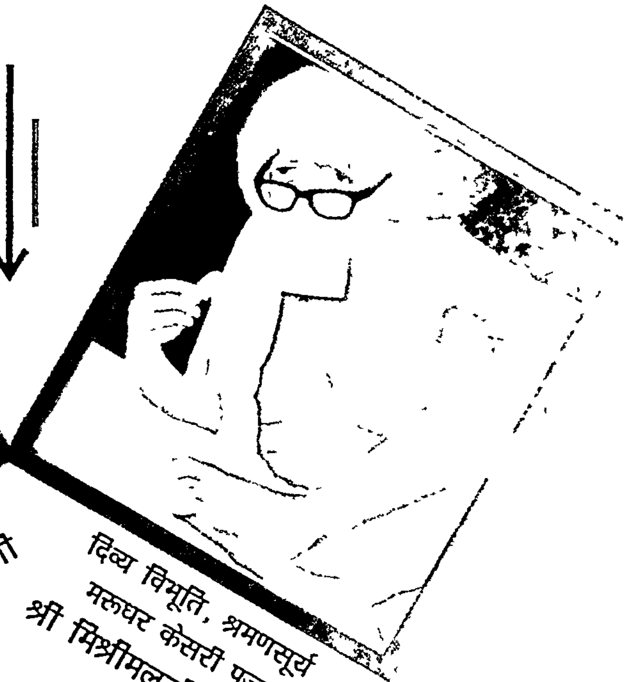
समर्पण



शांतमना कविवर्य स्वामीजी
पूज्य गुरुदेव श्री मोतीलालजी
म. सा.



दिव्य विभूति, श्रमणसूर्य
मरुधर केसरी पूज्य
श्री मिश्रीमलजी म. सा.

आस्थास्पद, श्रद्धेय, सद्गुरुदेव

श्री मोतीलालजी म. सा.

एवं श्रद्धास्पद काका गुरुदेव

श्री मिश्रीमलजी म. सा.

सरलता, क्षमा वात्सल्य की प्रतिमूर्तियाँ
एवं महान साधक द्वय
के श्री चरणों में सादर
श्रद्धामय समर्पित

सद्प्रेरक गुरुदेवगण



लोकमान्य संत, वरिष्ठ प्रवर्त्तक
श्री रूपचन्दजी म. सा.
'रजत'



श्रमणसंघीय सलाहकार,
उप प्रवर्त्तक
श्री सुकनमलजी म. सा.

अर्थ सहयोगी गण



गुरूभक्त, सुश्रावक श्री बी. जे. जेठमलजी सा. संचेती
एवं उनकी धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती सैनी देवी जी संचेती
सोजत रोड

इनके गुरूभक्त पुत्र
एवं सुश्राविका
पुत्रवधु



श्री जे. गौतमचन्दजी सा. संचेती एव
धर्मपत्नी जी. प्रमीला कवर जी संचेती

संचेती इन्वेस्ट्मेंट्स,

120/11 गोविन्दप्पा नाइकन स्ट्रीट,
चैन्नई 600001 फोन – 569049

अर्थ सहयोगी गण



गुरूभक्त, सुश्रावक स्व. श्री सम्पतराजजी सा. गुन्देचा
एवं उनकी धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती कमलाबाईजी,
सोजत रोड

एवं

उनके गुरूभक्त

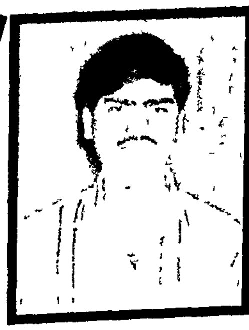
सुपुत्र



श्री अशोक कुमार जी गुन्देचा



श्री सज्जनराज जी गुन्देचा



श्री नरेश कुमार जी गुन्देचा



श्री राजेश कुमार जी गुन्देचा



श्री अरविन्द कुमार जी गुन्देचा

नरेश हार्डवेयर,

आजाद रोड, मुडीगिरी – (पिन – 577132)
जिला चिकमंगलूर – कर्नाटक
फोन – 08263–20547, 20657

मुक्ता मिश्री गुरुभ्यो नमः

'वंदे आइरियं धम्मदास मुणिंदं

बाल रूप प्राकृत

सम्प्रेरणा

लोकमान्य संत, श्रमण संघीय प्रवर्त्तक

मुनि श्री रूपचन्द जी म. सा. 'रजत'

लेखक

डॉ. उदयचन्द्र जैन

विभागाध्यक्ष

जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

—: प्रकाशक :—

मरूधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति

पिपलिया बाजार, ब्यावर

प्रथमावृति - 2100 प्रतियाँ

वर्ष 1999

मूल्य

सम्यक् अध्ययन

प्रस्तावना

प्राकृत–भाषा का परिचय

प्राकृत–भाषा के विषय में विचार करने से पहले भाषा–परिवार के विषय में जानना आवश्यक हो जाता है । भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा परिवार को तीन वर्गों में विभक्त किया है –

1. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा
2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा
3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा

1. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा वैदिक भाषा है । वेदों के शब्दों के आधार पर भाषा–वैज्ञानिकों ने यह कथन किया कि सबसे प्राचीन वेद हैं, वेदों की भाषा भी अति–प्राचीन है । वेदों के ऋचाओं में भाषा का जो स्वरूप निहित है, यह प्राचीनता का द्योतक है । इसमें जो वैभाषिक प्रयोग हैं, वे लोकभाषा के सूचक हैं तथा वे प्रयोग भाषा के अध्ययन में सहायक भी हैं । उन्हीं प्रयोगों के आधार पर प्राचीन भारतीय आर्यभाषा नाम दिया गया ।

प्राकृत की प्राचीनता

वैदिक भाषा के अध्ययन से यह ज्ञात हो जाता है कि जिस समय वेदों की रचना की जा रही थी, उस समय कोई जनबोली अवश्य थी । वह जन–बोली या जन–भाषा क्या थी ? यह तो नहीं कहा जा सकता है, पर इतना अवश्य है कि जो वेदों में प्रयोग हैं, वे प्रयोग ज्यों के त्यों उसी रूप में प्राकृत–भाषा में भी विद्यमान है जिससे यह बात सिद्ध होती है कि "प्राकृत–भाषा वेदों की रचना के समय लोक–व्यवहार में अवश्य प्रचलित थी ।" डॉ. पिशेल, पं. बेचरदास दोसी, डॉ. प्रबोध पंडित, डॉ. कत्रे, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री आदि ने इस विषय जो विचार प्रस्तुत किये, वे इस बात के प्रमाण हैं कि "प्राकृत–भाषा और वेदों की भाषा में बहुत कुछ साम्य है तथा यह बात भी सिद्ध की है कि वैदिक भाषा और प्राकृत–भाषा का मूल स्रोत एक है । वैदिक भाषा में मूर्धन्य ध्वनियों का प्रयोग, न के स्थान पर क्वचित् ण का प्रयोग, विभक्ति रूपों में कमी, एकवचन एवं बहुवचन की बहुलता, सीमित लकारों का प्रयोग आदि इस बात के प्रमाण हैं कि "वैदिक भाषा के साथ जन–भाषा प्राकृत का अस्तित्व तत्कालीन समय में अवश्य था ।

वैदिक भाषा के उपरांत पाणिनी ने जन व्याकरण ग्रंथ की रचना की, तब उन्होंने अपने से पूर्ववर्ती भाषा के विषय में स्पष्ट संकेत दिया तथा यह कथन किया कि जितने भी वैकल्पिक प्रयोग हैं, वे सभी छांदस हैं । जो प्राकृत की एक सामान्य विशेषता है ।

प्राकृत भाषा

भाषा वैज्ञानिकों ने प्रकृति अर्थात् स्वभाव से उत्पन्न लोकभाषा को प्राकृत भाषा कहा है । अत: प्राकृत का अर्थ हुआ - लोगों का या जनसाधारण का वचन-व्यापार । इसी जनसामान्य या जनसाधारण की विशेषता के कारण प्राचीन वैचारिकों ने कथन किया - "प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्" या प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्" । वाकपतिराज, राजशेखर, नगिसाधु आदि विद्वानों ने जनभाषा या स्वाभाविक वचन-व्यापार को प्राकृत कहा है ।

प्राकृत शब्द का अर्थ

प्राक्+कृत अर्थात् पहले किया गया । पहले जो भाषा ऋषिभापिता थी, यह स्वभाविक रूप से उत्पन्न हुई भाषा थी । द्वादशांग आदि ग्रंथ ऋषिभाषित हैं, इसलिए प्राकृत प्रारंभ में आर्ष-वचन के रूप मे प्रचलित थी । बाद में यही आर्षवचन देश-विशेष के कारण अलग-अलग रूप को प्राप्त होते गये । जिसके कारण भाषा वैज्ञानिकों ने तीन भेद कर दिये - (1) प्रथम युग की प्राकृत (2) मध्य युग की प्राकृत और (3) अपभ्रंश युग की प्राकृत । प्रथम युग और मध्य युग की प्राकृत को मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा में रखा है तथा अपभ्रंश युग की प्राकृत को आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के अन्तर्गत रखा है ।

प्रथम युग की प्राकृत

जब लोकभाषा या जनसाधारण की भाषा अधिक विकसित होकर साहित्य के क्षेत्र में आई, तव यह भाषा प्रथम युग की प्राकृत के नाम को प्राप्त हुई । जिसके पाँच भेद किये गये - (1) आर्ष प्राकृत (2) शिलालेखी प्राकृत (3) निया प्राकृत (4) धम्मपद की प्राकृत तथा (5) अश्वघोष के नाटकों की प्राकृत ।

(1) आर्ष प्राकृत

(क) अर्धमागधी (ख) शौरसेनी और (ग) पाली

(क) अर्धमागधी प्राकृत

अर्धमागधी प्राकृत ऋषिभाषिता प्राकृत है । इसका प्रयोग महावीर ने किया था । महावीर के कथित रूप को आचार्यो ने लिपिबद्ध करके सूत्र रूप में जो प्रयोग किया, वह आगम के रूप में हमारे सामने आया । अर्धमागधी का प्राचीन रूप कालसी, जौगढ़ एवं धौली नामक स्थानों पर उत्कीर्ण 14 प्रशस्तियों में मिलता है । इसका मूल उत्पत्ति स्थान मगध और मथुरा का मध्यवर्ती प्रदेश है । इसके वाद यह प्राकृत काशी-कौशल प्रदेश के भागों में भी फैलती गई ।

(ख) शौरसेनी प्राकृत

शौरसेनी प्राकृत भी ऋषिभाषिता है । इसके प्राचीनतम रूप अशोक के अभिलेखों में प्राप्त होते हैं । इसका लिखित साहित्य पट्खंगांग आदि् आगम ग्रंथों के रूप में हमारे सामने आया । वाद में यह भाषा संस्कृत नाटकों में विशेष रूप से प्रयोग की जाने लगी । यह प्राकृत शूरसेन-मथुरा के आस-पास बोली जाती थी जो वाद में काशी से होती हुई मध्यप्रदेश में फैली गई और दक्षिण पश्चिम में भी अपने स्थान को बनाये रही ।

(ग) पाली

पाली बुद्ध वचन के नाम से भी जानी जाती है । पाली भाषा का साहित्य पर्याप्त समृद्ध है । इसमें जो ग्रंथ लिखे गये, वे पिटक के नाम से विख्यात है । इसका प्रमुख क्षेत्र पाटलिपुत्र एवं मगध था । इस भाषा का इतना विकास हुआ कि यह भारत के अतिरिक्त एशिया के कई स्थानों में फैल गई थी ।

2. शिलालेखी प्राकृत

सबसे पहले अशोक ने अपने धर्म का प्रचार एवं प्रसार प्राकृत में किया । उन्होंने जो-जो शिलालेख उत्कीर्ण कराये, वे सभी प्राकृत में ही लिखे गये । अशोक के बाद खाखेल का हाथीगुंफा शिलालेख, उदयगिनी तथा खण्डगिरी के शिलालेख तथा पश्चिम भारत के कई शिलालेख साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं । ये सभी शिलालेख प्राकृत में हैं, इसीलिए ये महत्त्वपूर्ण माने गये हैं ।

3. निया प्राकृत

चीनी तुर्किस्तान से प्राप्त अभिलेखों में जो प्राकृत के रूप हैं, वे निया प्राकृत कहे गये हैं । इसका क्षेत्र पेशावर के पश्चिमोत्तर के आस-पास का माना गया है । खरोष्ट्री के अशोक के शिलालेखों में इसके रूप हैं । भाषा वैज्ञानिकों ने दरदी वर्ग की तोखारी भाषा के साथ इसका सम्बंध निश्चित किया है ।

4. धम्मपद की प्राकृत

खरोष्ठी लिपि में लिखा गया जो धम्मपद प्राप्त हुआ, उसके आधार पर भाषा-वैज्ञानिकों ने जो अध्ययन प्रस्तुत किये उस आधार पर धम्मपद की प्राकृत का यह रूप निश्चित किया है । इसकी भाषा पश्चिमोत्तर प्रदेश की बोलियों से मिलती है । इस धम्मपद में प्रथम युग की प्राकृत के रूप खोजे जा सकते हैं ।

5. अश्वघोष के नाटकों की प्राकृत

प्रथम युग की प्राकृत के विकास में अश्वघोष के नाटकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है । इसमें सर्वप्रथम विभिन्न प्राकृतों का प्रयोग किया गया था । इसलिए अश्वघोप के नाटकों का महत्त्व है । अश्वघोष के नाटकों में प्रयुक्त प्राकृतें अशोक के शिलालेखी प्राकृत से अधिक मेल खाती हैं ।

2. मध्य युग की प्राकृत

मध्य युग में प्राकृत का साहित्यिक क्षेत्र विकसित हुआ । इस युग में साहित्य की सभी विधाओं (काव्य, कथा, पुराण, स्तोत्र) पर लेखन कार्य हुआ है । इसलिए इसे प्राकृत साहित्य के विकास का स्वर्णयुग कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । इसी युग में वैयाकरणों ने प्राकृत को नियमबद्ध करने का कार्य भी किया है । इस युग की प्रमुख प्राकृतों का परिचय इस प्रकार हैं -

1. महाराष्ट्री प्राकृत

यह प्राकृत एक साहित्यिक प्राकृत मानी गयी है । इसी प्राकृत में महाकाव्य, खण्डकाव्य, चरितकाव्य, कथाकाव्य आदि लिखे गये हैं । यह प्रथम युग के प्राकृत के समय प्रचलित नहीं हुई थी । इसलिए भरतमुनि,

अश्वघोष आदि ने अन्य प्राकृतों के साथ इसका कथन नहीं किया है । यह प्राकृत महाराष्ट्र प्रदेश में सबसे अधिक प्रयुक्त होने के कारण इस प्राकृत को महाराष्ट्री काव्य कहा गया है । इसे महाकवि दण्डी ने उत्तम प्राकृत भी कहा है । इसका प्रयोग नाटकों में भी हुआ है ।

2. मागधी

इस प्राकृत का कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है । फिर सभी प्राकृत के वैयाकरणों द्वारा इस प्राकृत के नाम का उल्लेख किया गया है । इसका कारण यही कहा जा सकता है कि इसमें कई बोलियों का मिश्रण था । इसलिए इस भाषा में स्वतंत्र रचना न होकर संस्कृत नाटकों में जनजातियों के पात्रों के माध्यम से इस भाषा का प्रयोग किया गया है । इस प्राकृत में 'र' का 'ल', 'श, ष स' का प्राय: 'श' का ही प्रयोग किया गया है । इसकी मूल प्रकृति शौरसेनी है । परन्तु अकारांत पुर्लिग शब्दों के प्रथमा एकवचन में 'ए' प्रत्यय का ही प्रयोग हुआ है । 'ओ' प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है ।

पैशाची

जैसा कि इसके नाम से ही विदित हो रहा है कि यह प्राकृत किसी जाति विशेष की प्राकृत थी। भाषा वैज्ञानिकों ने इस भाषा में लिखित गुणाढ्य की 'वृहत्कथा' का उल्लेख किया है, पर यह कृति अभी तक अनुपलब्ध है । इस प्राकृत का प्रयोग संस्कृत नाटकों में हुआ है । इसकी तुलना पाली, अर्धमागधी और शिलालेखी प्राकृत के साथ की जाती है ।

चूलिका पैशाची

आचार्य हेमचंद्र और षड्भाषाचन्द्रिका के कर्ता ने अपने व्याकरण के ग्रंथों में इस भाषा की विशेषताओं का उल्लेख किया है । इसके उदाहरण हैं 'कुमारपालचरित', 'हम्मीरमर्दन' और षड्भाषा में भी इसका प्रयोग किया गया है ।

अपभ्रंश

जिस समय प्राकृतभाषा साहित्य की भाषा के रूप में प्रचलित हुई, उस समय अपभ्रंश भाषा बोलचाल की भाषा के रूप में सामने आई । प्राकृत वैयाकरणों ने इसे प्राकृत का ही एक अंग माना है । अपभ्रंश भाषा का साहित्य में प्रयोग ईस्वी सन् की पांचवी शताब्दी के पहले ही होने लगा था । अपभ्रंश के बहुत भेद हैं । ब्राचड़, लाटी, वैदर्भी, उपनागर, नागर आदि के भेद से 27 भेद माने गये हैं । इसी भाषा से आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ है ।

प्रेरणास्रोत : रूपरजत

परम श्रद्धेय, लोकमान्य संत, सद्गुरुवर्य, श्रमण संस्कृति प्रवर्त्तक मुनि श्री रूपचंद जी महाराज अन्तर्मानस की जड़ता को समाप्त करने वाले संत हैं जिनके व्यक्तित्व में ज्ञान का आलोक है, जन-जन की पीड़ा है तथा प्राणिमात्र के प्रति संवेदनशीलता है, वे ज्ञान शिरोमणि प्रकृतिजन्य जनमानस के हृदयगत शब्दों से परिचित हों वे महावीर के उस दिव्य देशना को उन्ही की व्यवहरित भाषा प्राकृत की प्रकृति को समझते हैं, जिनसे प्रतिपल लोक व्यवहार चलता है । वे निर्मल गंगा सम नीर में अवगाहन कराने के लिए उसी के रचना स्वरूप 'बाल रूप प्राकृत' का दर्शन कराते हैं । उनका साधक हृदय आगम के आलोक में रच-पचकर आगम के अर्थ को समझाना चाहता है । उनकी अन्तर्यात्रा का निरन्तर चलायमान रूप अन्तश्चेतना से प्राकृत का विकास चाहता है, क्योंकि तत्त्वचिन्तन इसके बिना संभव नहीं है । आगम ग्रन्थों के लिए इसकी परम आवश्यकता ही नहीं, अपितु प्राकृत के प्रवेश बिना आगम के रहस्य को नहीं जाना जा सकता है, ऐसा उनका विचार है जो अब तक शालि था, वह इसकी रचनाधर्मिता में रचकर शालिभद्र बन गया और जो मणि था, वह इसकी साधना से सरस्वती के वाग्-वैभव के समीप पहुंचने के लिए अठखेलियां करने लगा । आप श्री के मार्गदर्शन से इस महनीय एवं प्राचीनतम भाषा का स्वरूप श्रमणों के समीप अवश्य पहुंचेगा और इसी से श्रमण मार्ग में रत श्रमसाध्य प्राकृत के सत्य को समझ सकेंगे तो यह प्राकृत के प्रति अनन्य उपकार होगा ।

'यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति' – यह सूक्ति इस आकर्षण व्यक्तित्व के धनी के लिए यथेष्ठ है। इनका बाह्य व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली है, उससे कहीं अधिक आगम रहस्य के गुणों से भरा हुआ मां जिनवाणी भारती के चरणों में स्थित यही चिन्तन करता रहता है कि कोई भुवन का ईश बने, कोई सुकून देता रहे, कोई अमरत्व प्रदान करता रहे और कोई महावीर की वाणी को समझने के लिए उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा को समझ सके . यही रूप जी की उदारता है और आत्मीयता का स्वर है । वे युग के लब्ध प्रतिष्ठित मुनिराज हैं, सन्त परम्परा में उनका एक आदर्श है, पर वे इससे ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहते अपितु अहिंसा, संयम और तप की परिपालना को ज्ञान, दर्शन और चारित्र की त्रिवेणी बनाना चाहते हैं।

'तिण्णाणं तारयाणं' – मुनि श्री इस युग के चलते फिरते कल्पवृक्ष हैं, जिनकी छाया में समस्त प्राणियों के लिए आश्रय मिलता है । आधि-व्याधि, रोग-शोक, दीन-हीन एवं परितप्त जन आपकी दृष्टि से ही सुखी होना चाहते हैं, वही साहित्य-साधना में तल्लीन व्यक्ति आगम साधना के लिए प्राकृत के ज्ञान का आशीष चाहते हैं । उनकी दूरदर्शिता में स्वयं तिरने के भाव के साथ-साथ सभी को. तारने के भाव भी हैं । जो साहित्य साधना, ज्ञान साधना आदि को सम्मान देने में सक्षम हैं ।

उनका जीवन सभी के लिए आदरास्पद बना हुआ है । जैन, अजैन आदि सभी इस व्यक्तित्व से प्रभावित हैं । वे लाखों के श्रद्धास्पद मुनि रूपचंदजी 'रजत' इस लघु प्रकृति की प्रिय प्राकृत भाषा के 'बाल-रूप प्राकृत' को आगम के प्रकाश को समझने में सहकारी बनाकर अनन्य उपकार करेंगे । मैं नत हूं प्रवात हूं तथा प्राकृत के प्रति समर्पित हूं, गुरु कृपादृष्टि से । वे सभी आदारास्पद हैं, जिनके चिंतन ने यह रूप

प्रदान किया । श्रमण संस्कृति के संवाहक सदैव प्रेरणास्रोत बने रहें तथा परम आशीष से यह कार्य सम्पन्न हुआ है, वे सभी प्रगति में साधक बने रहेंगे । मैं सभी संतों, मुनिजनों एवं गुणीजनों के प्रति श्रद्धानत वना रहूं । यही मेरी अभिलाषा है ।

मैं विशेष मंगलकामना के साथ यह कामना करता हूं कि इस मार्ग में आप सबका निर्देशन प्राप्त होता रहे । प्रोफेसर प्रेमसुमन जैन इसके लिए साधु पात्र हैं, जिन्होंने अपने अनुभवों से दिशा निर्देश दिया। मेरे परिजन, मेरी श्रीमती डॉ. माया जैन, पुत्री पिऊ एवं प्राची जैन भी इसकी सहभागिता में अग्रणी रहे हैं, वे मंगलमय जीवन के पथिक बने रहें ।

दिनांक : 19-10-98

डॉ. उदयचंद जैन

पिऊ कुंज, अरविंदनगर

उदयपुर (राज.)

दूरभाष : 491974

बाल रूप प्राकृत

प्रस्तावना – "पद्य–पच्चीसी"

वन्दे आयरियं धम्मदासं मुणिंदं

'मुगता' 'मिसरी' 'सी' वर के, वन्दू शारद नेक ।
गिरवा गौतम देव जी, बखसो ज्ञान विवेक ॥१॥

प्राकृत भाषा रूप में, तीन वरग में बांट के ।
प्राकृत सीखन कारणे, कियो खुलासो छांट के ॥२॥

अर्वाचीन अर मध्य ही, अध्य आर्य वाणी ह,
वैदिक ऋचा सरूप में, जन भाषा जाणी ह ॥३॥

प्राकृत री प्राचीनता, रूड़ी जग विख्यात,
वेद भण्यां जाणी जसी, जन बोली री ख्यात ॥४॥

वेदों रा परयोग में, ज्यूं रात्यूं इया रूप में ।
विन्दुं भाषा रौ श्रोत यह, दरसै एकन कूप में ॥५॥

भाषन भरा दीवला, नखत्तर देय प्रमाण ।
"कत्रै" "वेचरदास" सा, पिंड़त्त लीणो जाण ॥६॥

"नेमीचन्द्र" प्रबोध सा, विदवांनां दी साख,
प्राकृत वेद रो मेल है, सिद्ध कियो खुद भाष ॥७॥

सिरे ध्वनी परयोग में, "न" जद "ण" बन जाय,
कभी विभक्ति रूप में, "वचन" ल–कार बताय ॥८॥

रचियौ व्याकरण ग्रन्थ, वेदों पाछे "पाणिनी" ।
पूरव भाग प्रयोग ने, छांदस प्रकृत जाणिनी ॥९॥

जन वचणां रौ पार, उपजेनिज स्वभाव सूं ।
''रूप'' प्राकृत को सार, लख वरणो धन चावसूं ॥१०॥

ऋषी भाषिता प्राक्कृत्ता, आर्ष वचन रो अंश ।
रूप–भेद त्रय युग पृथक, प्रथम–मध्य–अपभ्रंश ॥११॥

प्रथम मध्य युग अेकठी, मध्य आर्य जांणी ह ।
अपभ्रंश–रजत–जुग अद्य, भरत आर्य वांणी ह ॥१२॥

दुर्मिल–सवैय्या

विकसी जन भाष माहित्त क्षेत्र में प्रथम युग प्राकृत नाम सुहाई ।
पंच भेद बण भारत भू पर, आर्ष शिलालेखी मन भाई ॥
निया धम्मपद–प्राकृत शैली, ''अश्वघोष'' नाटक सरसाई ।
''अर्धमागधि'' ''शौरसेनी'' पाली'' प्रथमात्रय ''रूप'' कहाई ॥१३॥

ऋषि भाषित्त अर्ध–मागधि प्राकृत महावीर नव–रूप–सुझायौ ।
'कथित रूप लिपिबद्ध हुयां नवसूत्र रूप आगम बण आयौ ॥
जूनोरूप ''कालसी'' जोगड़ चौदह प्रशस्तियाँ मिलवायौ' ।
उतपत मूल मगध–मथुरा मझ काशी कौशल रूप केलायौ ॥१४॥

शौरसेनि ऋषि भाषिता जूनो रूप सुहावै ।
अभिलेखो है प्राप्त, अशोक महान कहावै ॥
साहित षट खंगांण, आगम ग्रन्थ जणावै ।
संस्कृत नाटक मांह–प्राकृत फूल खिलावै ॥
रजत–भाषतां वैण यौ, शूरसेन मथुरा जठै ।
काशी–मझ परदेश अर, दिखण थुण भू ठांण अठै ॥१५॥

पिटक शास्त्र विख्यात, बुद्ध वचन परमांण ।
साहित सद समरद्ध, ''पाली'' भाषा जांण ॥
मगध पाटलीपुत्र है, जिण रौ खास ठिकांणां ।
अणहद हुयौ प्रसार तौ, प्राकृत मरम पिछांणां ॥

'रजत' छोड़ भारत धरा, निज गौरव रै पांण ।
चावौ चहुं दिश एशिया, भाषा रौ घमसांण ॥१६॥

धर्म प्रचार प्रसार अशोक सबां पेहली इण भौम करायौ ।
प्राकृत भाषा सार समझ शिलालेख उत्कीर्ण जनां मन भायौ ॥
बाद अशोक खाखेल उयगिरि हाथी गुफा लेख लिखायौ ।
खण्ड गिरी शिलालेख "रजत" प्राकृत महताऊ मान दिरायौ ॥१७॥

चीनी तुरकिस्तान सुजान 'निया' प्राकृत अभिलेख कहावै ।
क्षेत्र पेशावर धुर आथूंण अशोक खरोष्ट्री लेख लखावै ॥
भाषा विद निश्चै कर भाखै प्राकृत–नियारो भेद सुझावै ।
दरदी वर्ग तणी तोखारी भाषा रूप सदा प्रकटावै ॥१८॥

खरोष्ठी लिपि लिखियौ पद धम्म भाषा विद निश्चै रूप कियौ है ।
आथूंणी धुर बैण सगाई रो इण पद सूं हिज मेल कियौ है ॥
परथम जुग री प्राकृत रो नव रूप धम्म पद में मिलियौ है ।
गूढ़ अमोलक भाव तणौ, पद धम्म "रजत" भाषा भरियौ है ॥१९॥

शिला लेखी प्राकृत सूं मिलती प्राकृत अश्वघोष समझावै ।
परथम जुग प्राकृत हित अश्वघोष नाटक महताऊ बतावै ॥
जूनी भारत आर्य भाषौ रौ सांगो–पांग है मेल करावै ।
साहित सार विचार विभिन्न प्रयोग "रजत" प्राकृत मन भावै ॥२०॥

विकस्यौ साहित क्षेत्र, मध्य युगी नव काल ।
काव्य स्तोत्र पुराण, कथा लेख संभाल ॥
प्राकृत साहित काज, स्वर्ण युग बाजै आछौ ।
नियम बद्ध व्याकरण भी, मध्य जुग प्राकृत पाछौ ॥
इण नवीन जुग प्राकृतां रो, परचौ है इण भांत रौ ।
महाराष्ट्री अर मागधी, "रजत" प्राकृत री ख्यात रौ ॥२१॥

महाराष्ट्री प्राकृत रौ सार साहित्य रै मांह घणो दरसावै ।
महाकाव्य खण्ड काव्य चरित गाथा रो काव्य प्राकृत है गावै ॥
नाटक मांह महाकवि दण्डी उत्तम प्राकृत नाम धरावै ।
महाराष्ट्र में सब सूं वेसी होण "रजत" प्राकृत मन भावै ॥२२॥

बिना सुतंतर ग्रन्थ रै, खरौ मागधी सार ।
साख भरै सब व्याकरण, प्राकृत नाम प्रकार ।।
मिश्रण मीठी बोलियाँ, संस्कृत नाटक मांय ।
जन जात्यां रै पात्र तणौ, भाषा प्रयोग सुहाय ।।
मूल प्रकृति है शौरसेनि, प्रत्यय पुर्लिंगकारांत में ।
प्रथमा इक वचन में "ए" झलकै, "रजत" औ प्रत्यय शांत में ।।२३।।

पाली अर्ध–मागधी और शिलालेखी प्राकृत रै संग ।
प्राकृत जाति विशेष "पैशाची" लिखित गुनाढ्य वृहत्कथांग ।।
हेमचन्द्र षड्भाषा चंद्रिका रै व्याकरण ग्रन्थ रौ ढ़ंग ।
"रजत" कुमार पाल हम्मीर मर्दन "चूलिका" पैशाची अंग ।।२४।।

प्राकृत साहित्त क्षैत्र मांह प्रचलित भाषा जद वणने आई ।
नाम हुओ "अपभ्रंश" व्याकरण री एक अंग वणी सुर थाई ।।
ब्राचड़–लाटी–वैदर्मी उपनागर भेद सत्ताईश थाई ।
"रजत" पंचमी सदी री प्राकृत आधुनिक भाषा विकसाई ।।२५।।

इति प्रस्तावणा पणवीशी सम्पूर्णम्

– लोकमान्य संत, श्रमणसंघीय प्रवर्त्तक श्री रूपचन्द जी म.सा. 'रजत'

मुक्ता मिश्री गुरुभ्यो नमः

वंदे आइरियं धम्मदासं मुणिंदं

पाठ – एक

मंगल गीत

सुत्तं सरुव–किरियं सउमाल–भावं
वीरं मुणीस–गणं–णायग–साहु–वाणिं ।
णामेमि बाल–पयडीजण–पाइयं च
दाएज्ज रुव–गुरु–मोदग–बालगाणं ॥

वर्ण विचार

प्राकृत – स्वर

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए. ओ ।

ह्रस्व स्वर

अ, इ, उ ।

दीर्घ स्वर

आ, ई, ऊ, ए, ओ ।

प्राकृत व्यञ्जन

कवर्ग

क, ख ग, घ, ङ ।

चवर्ग

च, छ, ज, झ, ञ ।

टवर्ग

ट, ठ, ड, ढ, ण ।

तवर्ग

त, थ, द, ध, न ।

पवर्ग

प, फ, ब, भ, म ।

य, र, ल, व, स, ह ।

व्यञ्जन प्रयोग

(1) कवर्गादि – क, ख आदि को स्वर सहित उच्चरित किया जाता है ।

(2) शब्द के मध्य या अन्त्य में स्वर रहित व्यञ्जन का प्रयोग किया जाता है । यथा – धम्म, णिज्जरं, मोक्ख ।

(3) वर्ग के अन्त्य व्यञ्जनों (ङ, ञ, ण, न, म का यदि मध्य में प्रयोग होता है तो प्रायः अनुस्वार के रूप में ही प्रयोग किया जाता है । यथा - अंक (अङ्क), अंजली (अञ्जली), दंड (दण्ड), बंध (बन्ध), संवर (सम्वर)

(4) व्यञ्जनों का उच्चारण बिना स्वर की सहायता के नहीं होता ।

वर्ग – कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग ये पाँच वर्ग हैं ।

वर्ग–उच्चारण स्थान – वर्ण को स्पर्श कहा गया है, क्योंकि इनका उच्चारण जीभ के कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त्य आदि से होता है ।

(1) अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ का उच्चारण स्थान कण्ठ है ।

(2) इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य का उच्चारण स्थान तालु है ।

(3) ट, ठ, ड, ढ, ण, र का उच्चारण स्थान मूर्द्धा है ।

(4) त, थ, द, ध, न, ल, स का उच्चारण स्थान दन्त्य है ।

(5) उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है ।

(6) ए, ओ का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है ।

(7) अनुस्वार (–) का उच्चारण स्थान नासिका है ।

(1) कण्ठ स्थान को **कण्ठस्थ** (2) तालु स्थान को **तालव्य** (3) मूर्द्धा स्थान को **मूर्द्धान्य** (4) दन्त स्थान को **दन्त्य** (5) ओष्ठ स्थान को **ओष्ठय** (6) कण्ठ और तालु स्थान को **कण्ठ तालव्य** और (7) नासिका स्थान को **अनुनासिक** कहते हैं ।

अभ्यास –

(1) प्राकृत में स्वर कितने हैं ? प्रत्येक के नाम बतलाइए ।

(2) व्यञ्जन कितने हैं ? उनका वर्ग सहित वर्णन कीजिए ।

(3) वर्ण को स्पर्श क्यों कहा गया ?

(4) इ, उ, ट, थ, ब, भ, ए, स का उच्चारण स्थान क्या है ?

(5) उच्चारण स्थान कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ और नासिका को क्या कहते हैं ।

(6) व्यञ्जनों का उच्चारण किसके साथ होता है ।

पाठ 1

शब्द विचार

शब्द परिचय – [illegible] है : यथा –

'अ' – अकारान्त शब्द – जिण, अरिहंत, वीर, देव, देविंद
'आ' – आकारान्त शब्द – [illegible]
'इ' – इकारान्त शब्द – [illegible]
'ई' – ईकारान्त शब्द – केवली, [illegible]
'उ' – उकारान्त शब्द – [illegible]
'ऊ' – ऊकारान्त शब्द – [illegible] ।

लिङ्ग –

(1) **पुर्लिंग** – जिण, अरिहंत, समण, कवि, साहु, केवली, जाति ।

(2) **स्त्रीलिंग** – आया, माला, वंदणा, वंदणा, आणा ।

(3) **नपुंसकलिंग** – वण, णाण, उरु, दहि, महु ।

वचन – (1) एकवचन और (2) बहुवचन

पुरुष – क्रिया के साथ कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुष कहलाते हैं । इनके तीन भेद हैं

प्रथम पुरुष – प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष भी कहते हैं कोई भी संज्ञावाचक शब्द या सर्वनाम जब क्रिया के कर्ता के रूप में प्रयुक्त किया जाता है तब उसे अन्य पुरुष कहते हैं । यथा

जे एगं जाणति से सव्वं जाणति । (आचारांग - 4/3/129)

पावे कम्मं झज्जति । (सूत्र - 2/2/171)

मध्यम पुरुष – तू, तुम सब का प्रयोग मध्यम पुरुष कहलाता है । यथा

तुमं जाणति, तुम्हे जाणेह ।

उत्तम पुरुष – मैं, हम, हम दोनों, हम सब का प्रयोग उत्तम पुरुष कहलाता है । [illegible]

अहं भासामि । अम्हे भासामो, वयं भासमो, पण्णवेमो, पण्णवेमो [illegible] । [illegible]

पाठ – तीन

कारक विचार

कारक –

व्याकरण के तीन विभाग है –

(1) वर्ण विभाग

(2) शब्द विभाग और

(3) वाक्य विभाग

(1) वर्ण विभाग

इस विभाग में वर्णो के उच्चारण स्थान, प्रयत्न, वर्गीकरण तथा सन्धि नियमों का उल्लेख किया जाता है।

(2) शब्द विभाग

इसके दो भेद हैं –

(1) शब्द व्युत्पत्ति / निरुक्ति और

(2) शब्द निर्माण ।

शब्द व्युत्पत्ति प्रकृति एवं प्रत्यय, क्रिया तथा कृदन्त आदि के योग से की जाती है और **शब्द निर्माण** में रूपसिद्धि, शब्द प्रयोग आदि को लिया जाता है ।

वाक्य –

विभाग को कारक / कारक प्रकरण कहते हैं। कारकों के व्यवहार को विभक्ति कहते हैं। "**किरियुवजोगी किरियाणरई कारगो**" वाक्य में क्रिया के साथ अन्वय/सम्बन्ध कारक है अर्थात् किसी क्रिया के संपादन में जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का प्रयोग होता है वह कारक कहलाता है । "**कुव्वेइ त्ति कारणं, किरियाए णिठवद्दगं कारगं । जेणं विणा किरिया – णिव्वाहो ण हवइ तं कारगं ।**" अर्थात् क्रिया का सम्पादन करता है वह कारक है या जो क्रिया का निर्वर्तक है वह कारक है या जिसके विना क्रिया का निर्वाह नहीं होता वह कारक है ।

कारक–व्यवहार/विभक्तियां –

क्रिया के सम्पादन के लिए जो सम्बन्ध दिया जाता है वह विभक्ति रूप होता है । सम्बन्ध छः हैं । कर्तृ, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण । सम्बन्ध भी क्रिया का कारक/प्रयोजन है । अतः संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों में लगने वाले प्रत्यय 'विभक्ति' कहलाते हैं ।

(1)	पढमा (प्रथमा)	कत्ता (कर्ता) ने	-	जिणो, वीरो, समणो ।
(2)	वीआ (द्वितीया)	कम्म (कर्म) को	-	जिणं, वीरं, समणं ।
(3)	तइया (तृतीया)	करण (करण) ने, से, के द्वारा	-	जिणेण, वीरेण, समणेण ।
(4)	चउत्थी (चतुर्थी)	संपदाण (सम्प्रदान) के लिए	-	जिणस्स, वीरस्स, समणस्स ।
(5)	पंचमी (पञ्चमी)	अपादान (अपादान) से गिरने/अलग होने के अर्थ में	-	जिणत्तो ।
(6)	छठी (षष्ठी)	संबंध (सम्बन्ध) का, की, के	-	जिणस्स ।
(7)	सत्तमी (सप्तमी)	अधिकरण (अधिकरण) में, पर	-	जिणम्मि ।
(8)	संबोहण	(सम्बोधन) हे, भो	-	हे जिण, जिणो ।

पाठ – चार

क्रिया विचार

क्रियाएं –

(1) परस्मैपद क्रिया – भणति भणंति

(2) आत्मनेपद क्रिया – भणते भणेंति

सामान्यतः प्राकृत में परस्मैपद और आत्मनेपद की क्रियाओं में भेद नहीं है ।

क्रियासूचक

(1) वर्तमान काल (लट्लकार – Present tense)

(2) भूतकाल (लङ्लकार – Past imperfect tense)

(3) भविष्यत् काल (लृट्लकार – Simple future tense)

(4) आज्ञार्थक (लोट् लकार – Imperative mood)

(5) विधि लिङ्ग (विधि लिङ्ग – Potential mood)

(6) क्रियातिपत्ति (लृङ्लकार – Conditional)

मूलतः वर्तमान, भूत, भविष्यत् आज्ञा/विधि एवं क्रियातिपत्ति का प्रयोग प्राकृत में है । विधि/आज्ञा एक है ।

(7) भाववाचक (Abstract Noun) और द्रव्य वाचक (Material Noun)

संज्ञा के भेद (Kinds of Noun)

किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या भाव का नाम संज्ञा है । इसके पांच भेद हैं :-

(1) व्यक्तिवाचक (Proper Noun)

(2) जातिवाचक (Common Noun)

(3) समुदाय वाचक (Collective Noun)

पाठ – पांच

कर्ता कारक

कर्ता कारक (प्रथमा) (–, ने)

सव्वणामो (सर्वनाम)

एगवयणं	**बहुवयणं**
पढमपुरिस, से = वह, सा (स्त्रीलिंग)	ते = वे, वे दोनों, वे सब ।
मज्झमपुरि, स – तुमं = तू	तुम्हे = तुम, तुम दोनों, तुम सव ।
उत्तमपुरिस – अहं = मैं	अम्हे = हम, हम दोनों, हम सव ।

सण्णा–सद्दो – (संज्ञा शब्द) जिणो गच्छति, समणो चिंतति ।

वाक्य प्रयोग

से जयति	=	वह जीतता है ।	से भवति	=	वह होता है ।
से जीवति	=	वह जीता है ।	से हसति	=	वह हसता है ।
से आसति	=	वह कहता है ।	से पचति	=	वह पकाता हे ।
से णयति	=	वह ले आता है ।	से चयति	=	वह छोड़ता हैं ।
से णमति	=	वह नमन करता है ।	से धावति	=	वह दौड़ता हैं ।

● प्राकृत कीजिए –

वह स्मरण करता है । वह जानता है । वह इच्छा करता है । वह रक्षा करता हैं । वह चलता है । वह बोध करता है । वह चढ़ता है । वह रहता है । वह प्रशंसा करता है । वह पालन करता हैं। वह गिरता है । वह भजता है ।

क्रिया प्रयोग –

सर (स्मृ स्मरण करना), बोह (बुध् = जानना), इच्छ (इष् = इच्छा करना), रक्ख (रक्षा करना), चल (चल् = चलना), रोह (रुह = चढ़ना), वस (वस् = रहना), संस (शंस = प्रशंसा करना), भज (भज् = भजना), प (पत् = गिरना), सर (सृ = जाना), चय (त्यज् = छोड़ना), करिस (कृष् = खींचना), वद (वद् = बोलना) ।

● निम्न प्रत्यय युक्त क्रियाओं का अर्थ लिखिए –

सरति, जीवति, णमति, चयति, इच्छति, पडति, वसति, रोहति, भवति, खादति, चलति, जीवति, दहति (दह् = जलाना), दवति (द्रु = बहना), णयति, खणति (खन् = खोदना), संसति, वजति (व्रज = चलना)

नियम – उक्त प्रयोग संस्कृत में भी प्रायः होते हैं। द्रवति, व्रजति, कर्षति, रक्षति, शंसति, स्मरति आदि में अन्तर है। प्रत्ययों में कोई अन्तर नहीं।

● निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी अनुवाद लिखिए

से जाणति, से विज्जति, से पुच्छति (पुच्छ – पृच्छ् = पूछना), से जाणइ, से विज्जइ, से प्रच्छइ, से वाएनि, (वाय = वाचना), से करेति, से जायति (जाय = जांचना), से सोयति, (सोय = शोक करना), जूरति (जूर = सूख जाना), से तिप्पति (तिप्प = आंसू बहाना), पिड्डति (पिड्ड = पीड़ा देना), परितप्पति (परि + तप्प = परितप्त होना)

स्त्रीलिंग प्रयोग

सा णच्चति = वह नाचती है। सा लिहति = वह लिखती है। सा पढ़ति = वह पढ़ती है। सा हसति = वह हंसती है। सा णवति = वह नमन करती है। सा सोधति = वह साफ करती है। सा पचति = वह पकाती है। सा गुंफति = वह गूंथती है।

● निम्न क्रियाओं का स्त्रीलिंग 'सा' सर्वनाम के साथ प्रयोग कीजिए –

णच्च (नृत् = नाचना), लिह (लिख् = लिखना), पढ (पठ् = पढ़ना), हस (हस् = हंसना), सोध (सोधना), णव (नमन करना), गुंफ (गूंथना), चिट्ठ (स्था = रुकना/ठहरना), पिव (पा = पीना), जिग्ध (घ्रा = सूंघना), जय (जी = जीतना), सीद (सद् = बैठना), गच्छ (गम् = जाना)

● प्राकृत कीजिए

वह जीतती है। वह बैठती है। वह जाती है। वह सूंघती है। वह बैठती है। वह रुकती है। वह सोधती है। वह गूंथती है। वह पकाती है। वह नाचती है। वह सोचती है। वह आंसू बहाती है।

● प्राकृत से हिन्दी कीजिए

सा पडिसुणेति। सा छोल्लेति (छोल्ल = छोलना)। सा गेण्हति (गेण्ह – ग्रह् = ग्रहण करना)। सा दलयति (दलय = देना)। सा गेण्हइ। सा सद्दहति (सद्दह = श्रद्धान करना)। सा झियाति (झिय = ध्यान करना)। सा सद्दहइ। सा सयति (सय = स्वप् = सोना)। सा तुयट्टति (तुयट्ट = तोड़ना)। भरति (भर = भरना) सा सयह।

नियम – अर्धमागधी प्राकृत में 'से' (पु.), 'सा' (स्त्री) के अतिरिक्त सो, स (पुं.) का प्रयोग भी होता हैं यथा – स पुज्जसत्थे (उत्तराध्यन 1/47) स पुव्वमेव ण लभेज्ज (उत्त. 4/9), सो एवं पडिमिदो (उत्त. 25/9)

- मागधी में 'से' (पु.) का ही प्रयोग है ।
- शौरसेनी, महाराष्ट्री में 'सो' का प्रयोग है ।
- मागधी/शौरसेनी में णमति के स्थान पर णमदि । अर्धमागधी में 'णमति' के अतिरिक्त भी 'णमइ' भी होता है । जाणइ (आ. 15/169)

वीअ–पण्णावणा

कर्ता (प्रथमा बहुवचन)	ते = वे, वे दोनों, वे सब ।
	ताओ = वे, वे दोनों, वे सब ।

वाक्य प्रयोग

ते जयंति = वे जीतते हैं ।	ते भवंति = वे होते हैं ।
ते जीवंति = वे जीते हैं ।	ते हसंति = वे हंसते हैं ।
ते भासंति = वे कहते हैं ।	ते पचंति = वे पकाते हैं ।
ते णयंति = वे ले जाते हैं ।	ते चयंति = वे छोड़ते हैं ।
ते णमंति = वे नमन करते हैं ।	ते धावंति = वे दौड़ते हैं ।

● प्राकृत कीजिए

वे स्मरण करते हैं । वे जानते हैं । वे इच्छा करते हैं । वे रक्षा करते हैं । वे चलते हैं । वे बोध करते हैं । वे चढ़ते हैं । वे रहते हैं । वे प्रशंसा करते हैं । वे दोनों गिरते हैं । वे सब भजते हैं ।

क्रिया प्रयोग

चर (चर् = चरता है), खाद (खाद् = खाना), भव (भू = होना), यच्छ (यम् = चाहना), गूह (गुह् = छिपाना), दस (दंश् = काटना), धम (ध्मा = नीचे जाना), पस्स (दृश् = देखना), दिव्व (दिव् = प्रकाशित होना), सम्म (शम् = शमन करना), सम (शम् = शमन करना), सम (श्रम् = परिश्रम करना), भिंस (भ्रंश = गिरना)

● निम्न प्रत्यय युक्त क्रियाओं का अर्थ कीजिए –

चरंति, खादंति, भवंति, यच्छंति, गूहंति, दसंति, हिंसंति (हिंस् = मारना), वधेंति (वध् = वध करना), संपतंति (सं + पत = गिरना), उद्दायंति (उत् + ताप् = जकड़ना), रमंति (रम् = रमण करना), भयंति (भय् = डरना), समंति (सम्मेंति), दिव्वंति, भिंसेंति, करेंति, तवंति (तप् = तप करना), सोहेंति (सोभ् = शोभित होना)

● निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

ते भासेंति । ते पण्णवेंति । ते परुवेंति । ते धावंति । ते समंति । ते रमंति । ते वधेंति । ते णच्चेंति। ते तवंति । ते सोहेंति । ते भयंति । ते संपतंति ।

स्त्रीलिंग प्रयोग

ताओ पस्संति । ताओ लिहंति । ताओ पालंति । ताओ रमंति । ताओ भासेंति । ताओ भयंति । ताओ चिंतेंति । ताओ मुंचेंति । ताओ पचंति ।

● निम्न क्रियाओं को स्त्रीलिंग 'ताओ' सर्वनाम के साथ प्रयोग कीजिए –

जाण (जानना), पवेद (प्र + विद् = कहना), फुस (स्पर्श = छूना), सेव (सेवा करना), हो (होना), मुज्झ (मुग्ध् = आसक्त होना), गच्छ (जाना), जय, लभ, मुण (जानना)

● प्राकृत कीजिए –

वे जानती हैं । वे नाचती हैं । वे दोनों सेवा करती हैं । वे सब आसक्त होती हैं । वे दोनों कहती हैं । वे सब रोती हैं । वे सब शमन करती हैं ।

● हिन्दी कीजिए –

ताओ विउंजंति (वि + उंज = प्रयोग करना), ताओ भासंति । ते वदेंति । ते विहरंति (विहार = विचरण करना), ते जाणेंति । ताओ णेच्चेंति । ताओ अवलंबेंति (अव + लंब = सहारा लेना) जएज्जेंति (जएज्ज = प्रयत्नशील होना)

अर्धमागधी प्राकृत में प्रथम पुरुष बहुवचन में 'ते' (पुं.), 'ताओ' (स्त्री.) में प्रयोग होता है । अन्य प्राकृतों में यही 'ते' एवं 'ताओ' सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है ।

त (तत्) का स, प्रथमा एकवचन में तथा एत (एतत्) का एस होता है । यथा – सो पस्सेति, स पहसेति । एस गंथे, एस मोह (आ. 1/5/44)

'त' सर्वनाम शब्द के प्रथमा एकवचन में 'तं' होता है । तं णो करिस्सामि (आ 1/4/40) तं जे णो करते । (आ 1/5/40)

इम (इदम्) का प्रथमा एकवचन में 'इमो' नपुंसकलिंग में 'इमं' एत (एतत) एतं, एयं का प्रयोग होता है । इमं पि जातिधम्मयं, एमं पि जातिधम्मयं । (आ 1/5/45)

● हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

से सोयति जूरति तिप्पति पिड्डति परिततति । (आ. 2/5/90) सो गच्छइ, ते पिवंति अहं लिहामि, तुम्हें भणह, अम्हे णमामो ।

संस्कृत प्रयोग

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः गच्छति	तौ गच्छतः	ते गच्छन्ति ।
	सा गच्छति (स्त्री)	ते गच्छतः	ताः गच्छन्ति ।
मध्यम पुरुष	त्वम् गच्छसि	युवाम गच्छथः	यूयम् गच्छथ ।
	अहम् गच्छामि	आवाम् गच्छावः	वयम् गच्छामः ।

● **पहचानिए और लिखिए –**

से सो गच्छति/गच्छइ । ते गच्छंति । इमो गच्छति/गच्छइ । इमे गच्छंति । ताओ णच्चंति । ताओ बालाओ पढंति । सा बालिगा सुणति/सुणइ । इमं पोत्थअं अत्थि । इमाणि फलाणि अत्थि ।

तइय पण्णावण्णा

कर्ता (प्रथमा एकवचन) मध्यम पुरुष प्रयोग (तुमं = तू)

वाक्य प्रयोग

तुमं जायसि = तू जीतता है ।

तुमं जीवसि = तू जीता है ।

तुमं भणसि = तू कहता है ।

तुमं णयसि = तू ले जाता है ।

तुमं णमसि = तू नमन करता है ।

तुमं भवसि = तू होता है ।

तुमं हससि = तू हंसता है ।

तुमं पचसि = तू पकाता है ।

तुमं चयसि = तू छोड़ता है ।

तुमं धवसि = तू दौड़ता है ।

● **प्राकृत कीजिए –**

तू स्मरण करता है ।

तू इच्छा करता है ।

तू चलता है ।

तू चढ़ता है ।

तू प्रशंसा करता है ।

तू गिरता है ।

तू जानता है ।

तू रक्षा करता है ।

तू बोध करता है ।

तू रहता है ।

तू पालन करता है ।

तू भजता है ।

क्रिया प्रयोग –

णिरत (णि + रत), विहिंस (वि + हिंस), लिप्प (आसक्त होना), जागर (जागृ = जानना), पमुच्च (प्र + मुंच् = छोड़ना), गच्छ, कह, मुण ।

● निम्न प्रत्यय प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ कीजिए –

गच्छसि, पण्णवेसि, दिस्ससिं, गिज्झसि (गिज्झ = आसक्त होना), संवेदयसि (सं + वेदय = अनुभव करना), संधेसि (संध = धारण करना), चिट्ठसि, जूरसि, अच्छसि (अच्छ = रहना), खवसि, करेसि ।

● निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

तुमं मण्णसि । तुमं चिंतत्ति । तुमं वंदसि । तुमं णमसि । तुमं पढसि । तुमं जाणसि । तुमं इच्छसि। तुमं पमोकरवसि । तुमं समारंभेसि । तुमं पस्ससि । तुमं पोसेसि (पोस = पोषण करना)। तुमं अच्चेसि (अर्च् = पूजना), तुमं सुणसि । तुमं लिहसि । आदि वाक्य पुर्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग में समान रूप से बनते हैं । तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि । (ज्ञाता. 2/14)

'तुमं' एवं तुम्हे सर्वनाम शब्द के प्रयोग होने पर तीनों लिंगों में समान ही वाक्य रचना होती है।

चउत्थपण्णावणा

कर्ता (प्रथमा बहुवचन) मध्यम पुरुष (तुम्हे = तुम, तुम दोनों, तुम सब)

वाक्य प्रयोग

तुम्हे जयह = तुम जीतते हो ।	तुम्हे भवह = तुम होते हो ।
तुम्हे जीवह = तुम जीते हो ।	तुम्हे हसह = तुम हंसते हो ।
तुम्हे भणह = तुम कहते हो ।	तुम्हे पचह = तुम पकाते हो ।
तुम्हे णयह = तुम ले जाते हो ।	तुम्हे चयह = तुम छोड़ते हो ।
तुम्हे णमह = तुम नमन करते हो ।	तुम्हे धावह = तुम दौड़ते हो ।

● प्राकृत कीजिए –

तुम स्मरण करते हो । तुम जानते हो । तुम इच्छा करते हो । तुम रक्षा करते हो । तुम चलते हो । तुम बोध करते हो । तुम चढ़ते हो । तुम रहते हो । तुम प्रशंसा करते हो । तुम पालन करते हो। तुम गिरते हो । तुम भजते हो ।

क्रिया प्रयोग –

बुच्च (कहना), समोसर (समाविष्ट होना), पविह (प + विश् = घुमना), सद्दाक (बुलाना), उवागच्छ (पहुँचना), संभाण (सम्मान देना), अणुवूह (अनुमोदन करना), पडिबुज्झ (जागृत करना)

● **निम्न प्रत्यय प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ कीजिए –**

पडिबुज्झेह, पडिविसज्जेह, सक्कारेह, संचिट्ठह, विणेह (विण = पूर्ण करना), पयच्छह (प्र + यच्छ् = प्रदान करना), उवागच्छह (उप + आ + गम् = पास आना), अणुगच्छइ (अनु + गम् = अनुगमन करना), णिग्गच्छह (निर् + गम् = जाना), ठवेह (स्था = ठहरना), कप्पेह (कप्प = काटना), पसारेह (फैलाना)

● **निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –**

तुम्हे विहरेह ।	तुम्हे पयच्छह ।
तुम्हे संचिट्ठह ।	तुम्हे पसारेह ।
तुम्हे उवागच्छह ।	तुम्हे अणुजाणह ।
तुम्हे गेण्हह ।	तुम्हे इच्छह ।
तुम्हे करेह ।	तुम्हे णमेह ।

पंचम पण्णावणा

कर्ता (प्रथमा एकवचन) उत्तम पुरुष - अहं (मैं)

वाक्य प्रयोग –

अहं जयामि = मैं जीतता हूं ।	अहं भवामि = मैं होता हूं ।
अहं जीवामि = मैं जीता हूं ।	अहं हसामि = मैं हसता हूं ।
अहं भणामि = मैं कहता हूं ।	अहं पंचामि = मैं पकाता हूं ।
अहं णयामि = मैं ले जाता हूं ।	अहं चयामि = मैं छोड़ता हूं ।
अहं णमामि = मैं नमन करता हूं ।	अहं धावामि = मैं दौड़ता हूं ।

● **प्राकृत कीजिए –**

मैं स्मरण करता हूं । मैं जानता हूं । मैं इच्छा करता हूं । मैं रक्षा करता हूं । मैं चलता हूं । मैं बोध करता हूं । मैं चढ़ता हूं । मैं रहता हूं । मैं प्रशंसा करता हूं । मैं पालन करता हूं । मैं गिरता हूं। मैं भजता हूं ।

क्रिया प्रयोग

चिट्ठ, पिह (छिपाना), णिवेद (निवेदन करना), परिवेस (परोसना), छड्ड (छोड़ना), संतुट्ठ ([illegible] करना), विमोइ (छोड़ना), पुच्छ, आढ (आदर करना), छेद, सिक्खाव (सिखलाना), जाण, संवड्ढ (बढ़ना), संगोव (संगोपन करना)

- **निम्न प्रत्यय प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ कीजिए –**

सारक्खासि (रक्षा करना), जाएमि (जाना), छड्ढेमि, परिट्ठवामि, आढामि, संगोवामि, सिक्खावामि, विहरामि, जाणामि, उवागच्छामि, करेमि, पक्खवेमि (पक्खव = फैंकना), उत्तारेमि (उत्तार = उतारना), बंधामि, पडिसुणेमि, भुंजामि, णिंदामि (णिंद = निन्दा करना), अणुगच्छेमि ।

- **निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –**

अहं करेमि । अहं पणिसुणेमि । अहं बंधामि । अहं उवणेमि (उव + णे = ग्रहण करना) । अहं संघट्टामि (सं + घट्ट = स्पर्श करना) । अहं ठावेमि । अहं गच्छेमि । अहं अग्घेमि (अग्घ = अर्घ देना)। अहं विहरामि । अहं सोच्चामि । अहं पक्खेवेमि । अहं चिंतामि । अहं पढामि । अहं लिहामि ।

नियम – अर्धमागधी प्राकृत में 'अहं' के स्थान पर 'हं' (उत्तम पुरुष एकवचन) का भी प्रयोग होता है । यथा – अकरिस्सं च हं, काराविस्सं च हं । (आचा 1/1/4)

छट्ठ – पण्णावणा

कर्ता (प्रथमा बहुवचन) उत्तम पुरुष – अम्हे = हम, हम दोनों, हम सब ।

वाक्य प्रयोग

अम्हे जयामि = हम जीतते हैं ।
अम्हे जिवामि = हम जीते हैं ।
अम्हे भणामि = हम कहते हैं ।
अम्हे णयामि = हम ले जाते हैं ।
अम्हे णमामि = हम नमन करते हैं ।
अम्हे भवामि = हम होते हैं ।
अम्हे हसामि = हम हंसते हैं ।
अम्हे पचामि = हम पचाते हैं ।
अम्हे चयामि = हम छोड़ते हैं ।
अम्हे धावामि = हम दौड़ते हैं ।

- **प्राकृत कीजिए –**

हम स्मरण करते हैं । हम जानते हैं । हम इच्छा करते हैं । हम रक्षा करते हैं । हम चलते हैं। हम बोध करते हैं । हम चढ़ते हैं । हम रहते हैं । हम सब प्रशंसा करते हैं । हम दोनों पालन करते हैं । हम गिरते हैं । हम भजते हैं ।

- **क्रिया प्रयोग –**

सुव्व (सुनना), हो (होना), पच्चक्ख (प्रत्याख्यान करना), वोसर (त्यागना), फुस (स्पर्श करना), समोसढ (आना), समुप्पण्ण (होना), समागच्छ (आना)

● निम्न प्रत्यय प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ लिखिए –

अभिसिंचामो (अभि + सिंच् = अभिषेक करना), संकमाम्मो (सं + क्रम् = संक्रमण करना), परियाणामो (परि + याण = जानना), उववज्जामो (उप + व्रज् = उत्पन्न होना) पुज्जामो, अच्चामो, णिवारामो, समुप्पण्णामो, समागच्छामो, फुसामो, बोसिरामो, णमामो, पडिक्कमामो, सद्दामो, भासामो, इच्छामो ।

● निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

अम्हे अभिसिंचामो । अम्हे पज्जुवासामो (पज्जुवास = उपासना करना), अम्हे खामेमो । अम्हे उववज्जामो। अम्हे झियायामो । अम्हे खादामो । अम्हे मुंचामो । अम्हे परियाणामो । अम्हे एडामो (एड = फैंकना), अम्हे हमामो ।

नियम – अर्धमागधी प्राकृत में 'अम्हे' सर्वनाम के अतिरिक्त 'वयं' (उत्तम पुरुष वहुवचन) का प्रयोग भी होता है । यथा - वयं संपेहाए । (आचा 1/2/1/64)

वयं पुण एवमाचिक्खामो, एवं भासामो, एवं पण्णवेमो, एवं परुवेमो । (आचा 4/2/138)

वट्टमाण – कालो (वर्तमानकाल)

'भण' धातु

	एगवयणं	**बहुवयणं**
पढमपुरिसो	भणति	भणंति
मज्झमपुरिसो	भणसि	भणह
उत्तमंपुरिसो	भणमि	भणमो

नियम निर्देश

(1) अर्धमागधी प्राकृत में 'ति' प्रत्यय के प्रयोग (प्रथम पुरुष एकवचन के प्रत्यय के प्रयोग) के अतिरिक्त 'ए' प्रत्यय और 'इ' प्रत्यय भी होता है । अन्य प्राकृतों में यही होते हैं । शौरसेनी, मागधी में 'दि' का प्रयोग होता है । यथा - भणए, भणइ (त्यादिनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौं । हे प्रा 3/139) (अत एवेंच से 3/145) - भणदि (शौ., मागधी)

(2) वर्तमानकाल प्रथम पुरुष एकवचन के प्रत्यय 'ति' या 'इ' से पूर्व धातु में 'ए' भी हो जाता है। (वर्तमान-पञ्चमी-शतृषु वा 3/158)

(3) वर्तमानकाल प्रथम पुरुष बहुवचन में 'न्ति' 'न्ते' प्रत्ययों का प्रयोग पाया जाता है । यथा - भणंति, भणंते (बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे 3/142)

(4) वर्तमानकाल प्रथम पुरुष बहुवचन में 'न्ति' से पूर्व 'अ' का ए भी हो जाता है । यथा - भणेंति (3/158)

(5) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष एकवचन में 'सि' प्रत्यय के अतिरिक्त 'से' का भी प्रयोग होता है यथा - भणति, भणसे (द्वितीयस्य सि से 3/140)

(6) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष एकवचन में 'सि' से पूर्व 'अ' का 'ए' भी होता है। यथा - भणसि-भणेसि (3/158) कहीं-कहीं पर दीर्घ भी होता है। यथा - जाणासि

(7) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष बहुवचन में 'ह' प्रत्यय होता है। यथा - भणह

(8) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष बहुवचन में 'ह' प्रत्यय से पूर्व 'अ' का 'ए' भी होता है। यथा - भणह - भणेह (मध्यमस्येत्था हन्चों 3/143)

(9) वर्तमानकाल उत्तम पुरुष एकवचन में 'मि', प्रत्यय होता है। यथा - भणमि।

(10) वर्तमान काल उत्तम पुरुष एक वचन में 'मि' प्रत्यय से पूर्व 'अ' का 'ए', 'अ' का 'इ' तथा 'अ' का 'आ' भी होता है। यथा भणमि - भणेमि - भणामि (मौ वा 3/154)

(11) वर्तमान काल उत्तम पुरुष बहुवचन में 'मो', 'मु' और 'म' प्रत्यय होते हैं। यथा भणमो, भणमु, भणम (तृतीयस्य मो - मु - मा (3/144)

(12) वर्तमानकाल उत्तम पुरुष बहुवचन में 'मों', 'मु', 'म' से पूर्व 'अ' का 'इ' होता है। यथा - भणिमो, भणिमु, भणिम।

(13) 'मो', 'मु', 'म' होने पर कवचित् 'ए' भी होता है। यथा - भणेमो, भणेमु, भणेम

संस्कृत क्रिया रूप

प्रथम पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम पुरुष	नमसि	नमथः	नमथः
उत्तम पुरुष	नमामि	नमावः	नमामः

संस्कृत शब्द रूप

'जिन' पुर्लिग अकारान्त

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जिनः	जिनौ	जिनाः
द्वितीय	जिनम्	जिनौ	जिनाः
तृतीय	जिनेन	जिनाभ्याम्	जिनैः
चतुर्थी	जिनाय	जिनाभ्याम्	जिनेभ्यः
पंचमी	जिनात्	जिनाभ्याम्	जिनेभ्यः
षष्ठी	जिनस्य	जिनयोः	जिनानाम्
सप्तमी	जिने	जिनयोः	जिनेषु
सम्बोधन	जिन !	जिनौ !	जिना !

पाठ – छह

अव्यय विचार

सत्तम – पण्णावणा

अव्यय

जिन शब्दों के काल, वचन, लिंगादि नहीं होते हैं तथा जिनके रूप नहीं बदलते, वे अव्यय हे।

सरिच्छुं तिसु लिंगेसु, सव्वासु य विभत्तीसु ।
वयणेसु स सव्वेसु जं ण वर्णते अव्वयं ॥

क्रिया विशेषण

अंतो अंतो	=	भीतर भीतर	–	अंतो अंतो पूतिदेहेतराणि पासति । (आ 2/5/92)
अग्गतो	=	आगे	–	सिविगा अग्गतो गच्छति ।
अग्गे	=	आगे	–	अग्गे अग्गे धावति ।
अचिरं	=	शीघ्र	–	सो अचिरं लिहति ।
अचिरत्तो	=	शीघ्र	–	तुमं अचिरत्तो आगच्छसि ।
अतो	=	इसलिए	–	स पीडति अतो ण पढति ।
अतीव	=	बहुत	–	अतीव दुहेति ।
अह	=	अनन्तर	–	अहं अह गच्छेमि ।
अत्थ	=	यहां	–	तुम्हे अत्थ परिवदेह ।
अज्ज	=	आज	–	सो अज्ज चिंतति ।
अलं	=	पर्याप्त	–	अलं ते एतेहि (आ 2/4/85) ।
अवि	=	भी	–	अहं अवि पडिक्कमामि ।
अहुणा	=	अब	–	अहुणा तुमं किं पढेमि ।
अंतरेण	=	विना	–	चारित्तं अंतरेण मुत्ती ण ।
अंतरा	=	बीच में	–	सो अंतरा वट्टति ।

अण्णच्च	=	और भी	–	अहं अण्णच्च चिंतामि ।
अण्णत्थ	=	अन्यत्र	–	तुम्हे अण्णत्थ पच्चक्खेह ।
अभितो	=	चारों ओर	–	वीरं अभितो उवासगा ।
अलं	=	पर्याप्त	–	एस अलं ।
इच्चेवं	=	इस प्रकार	–	इच्चेवं समुट्ठिते । (आचा 2/1/65)
इतो ततो	=	इधर उधर	–	इतो ततो परिभमंति ।
इति	=	इस प्रकार	–	इति भासति । इति से गुणट्ठी (आचा 1/2/1/63) इति ते वदंति (आ 6/1/18)
इत्थं	=	इस प्रकार	–	ते इत्थं वोसिरेंति ।
ईसि	=	किंचित्	–	ईसि चिंतेह ।
इह	=	यहां	–	इह चिट्ठेंति, जीविते इह जे पमत्ता । (आचा 2/166)
इदाणिं	=	इस समय	–	इदाणिं सो परिभमति ।
उ	=	तु, किन्तु	–	जहां उ से (ज्ञाता 4/13)
उच्चं	=	ऊंचा	–	उच्चं वदति ।
उभयतो	=	दोनों ओर	–	अम्हे उभयतो गच्छामो ।
एगत्थ	=	एक जगह	–	एकत्थ अरचिट्ठेंति ।
एगगो	=	एकाकी	–	एगगो परिवसति ।
एगदा, एगया	=	एक बार	–	एगदा भुंजति, एगया मूढभावं जणयंति (आचा 1/2/1/64) ततो से एगदा (आ. 2/3/79)
एत्थ	=	यहां	–	तो इत्थ झायति । एत्थ वि जाणह (आ 4/2/138)
एव	=	ही		
एवं	=	इस प्रकार	–	एवं पण्णवेमो, एवं परूवेमो । (आचा 4/2/138)

कंचणं	=	कुछ	-	कंचण णत्थि ।
कंचि	=	क्या ?	-	कंचि स जाणति ।
कहं	=	कैसे ?	-	कहं सो पततिं ।
कदा/कया	=	कब ?	-	कदा पढति ।
कदाचि	=	कभी ।	-	कदाचि चिंतति ।
किं	=	क्या ?	-	किमत्थिउवधी (आचा 3/4/131)
कुतो	=	कहां से ?	-	सो कुतो आगच्छति ।
केवलं	=	केवलं	-	सो केवलं झाति ।
खलु	=	निश्चय ही	-	अप्पं च खलु आउं इहमेगेहिं माणवाणं (आ 2/1/64)
जइ	=	यदि	-	जइं णं तुलभेहिं (ज्ञाता 9/46)
जह, जहा	=	जैसे	-	जहा अंतो तहा बाहिं (आ 2/5/92) ।
झटिति	=	शीघ्र	-	सो अत्थ झटिति आगच्छति ।
झत्ति	=	शीघ्र	-	अहं झत्ति चिंतामि ।
तओ	=	तब/तदनन्तर	-	तओ धावति ।
ततो	=	तब	-	ततो से एगदा विप्परिसिट्ठं । (आचा 2/3/79)
तत्थ	=	वहां	-	तत्थ णं दो उऊ साहीण । (उत्तराध्ययन 9/25)
तेण	=	तब, तो	-	तत्थ णं तुब्भे । (उत्त. 9/24) तेण णो सियां । (आ. 2/4/83)
तत्थ, तहेव	=	तथा, वैसे ही		
ण, णो	=	नहीं	-	अज्झयणे ण चिट्ठति । (आ 2/3/79)
णालं	=	पर्याप्त नहीं समर्थ नहीं	-	णालं पास । अलं ते एतेहिं । (आ 2/4/85)

णं	=	क्योंकि, चूंकि	-	तए णं सा । (ज्ञाता 9/43) नस्स णं (ज्ञा 9/3)
णणु	=	कृपया	-	णणु ! सो किं भासति ।
दिवा	=	दिन में	-	सो दिवा गच्छति ।
णाम	=	नामक	-	चंपा णामं णयरी (ज्ञा. 9/2) ।
णिगसा	=	निकट	-	गामं णिगसा गच्छति ।
णिम्मं	=	नीच	-	णिम्मं वदति ।
णूणं	=	निश्चय ही	-	णूणं सो कहति ।
परितो	=	चारों ओर	-	गामं परितो वणमत्थि ।
पच्छा	=	पश्चात्	-	पच्छा अणुगच्छति । जेण पुण जहाइ (उत्त. 16/8)
पुण/पुणो	=	पुनः, फिर	-	पुण्णे जणाइयं । (ज्ञा. 4/13) पुणो तं करेमि (आ 2/5/93)
पुरतो	=	आगे	-	पुरतो सो गच्छति ।
पुरा	=	प्राचीन	-	पुरा णयरी वाराणसी अत्थि ।
पुह/पुह	=	पृथक पृथक	-	पुह पुह आसति ।
पइदिणं	=	प्रतिदिन	-	सो पइदिणं पणिक्कमति ।
पच्चुत	=	उलटा	-	पच्चुत भासति ।
पाग	=	पहले	-	पाग णच्चति ।
पातो	=	प्रातः	-	पातो जग्गति ।
पायो	=	प्रायः	-	पायो सो पुच्छति ।
बहिं	=	बाहर	-	बहिं अणुगच्छति ।
भूयो	=	बार बार	-	भूयो णमति ।
मुहु	=	बार बार	-	मुहु चिंतति ।
मुसा	=	झूठ	-	मुसा वदति ।
विणा	=	विना	-	तं विणा सो ण णिवसति ।
सइ	=	सदा	-	सइ चिंतति ।

सणियं सणियं	=	धीरे धीरे	–	सणियं सणियं गच्छति ।
सदा/सइ	=	सदा	–	सदा पुच्छति ।
सव्वदा	=	सर्वदा, सब दिन	–	सव्वदा भुंजति ।
सद्धिं	=	साथ	–	सद्धिं गच्छति । सद्धिं रोयमाणे (ज्ञाता 2/31)
सह	=	साथ	–	सह भासति ।
सम्म	=	भली भांति	–	सम्मं सुणति ।
सव्वत्थ	=	सभी जगह	–	सव्वत्थ सुहं इच्छतिं ।
सव्वतो	=	कभी ओर	–	सव्वतो पमरुस्सभयं । (आ 3/4/129)
सयं	=	स्वयं	–	सयं पद्धति ।

समुच्चयबोधक अव्यय

अह/अहरा		मित्तं अह अमित्तं । सुहं अह असुहं । अहरा तइयाए । (उत्त. 30/21)
तु	क्योंकि	गुणाणं तु सहस्साइं (उत्त 19/25) ।
चेव	ही	तालणा तज्जणा चेव । (उत्त. 19/33)
हिं	निश्चय	
हु	निश्चय	से किंचि हु णिसामिया । (उत्त 17/10)

मनोविकार सूचक अव्यय

इन अव्ययों का वाक्य से सम्बन्ध नहीं रहता ।

अहो	अहो ! आसति ।
धिग	धिग धिग तुमं ।
हा	हा ! कह दुहं ।

● प्राकृत से हिन्दी कीजिए –

सो तत्थ गच्छति । किं पुच्छसि । अम्हे अज्ज पढामो । ते पइदिणं अच्चंति । सो सव्वत्थ अनुधावति । अहं सम्मं जाणामि । तुमं सणियं सणियं भाससि । सो पातो आगच्छति । ताओ किं तहिं गच्छंति । तुम्हे पुरतो पस्संति ।

● उत्तर दीजिए –

(1) प्रथम पुरुष को क्या कहते हैं ? दोनों वचन के उदाहरण लिखिए ।

(2) मध्यम पुरुष में 'तुमं' और 'तुम्हे' होते हैं । वाक्य बनाइए ।

(3) उत्तम पुरुष के वाक्य बनाइए ।

(4) उक्त प्राकृत वाक्यों के अव्यय किसके बोधक हैं ?

(5) अव्यय का स्वरूप लिखिए तथा समुच्चयबोधक या क्रिया विशेषण का उदाहरण लिखिए ।

● स्मरण कीजिए

(6) प्राकृत में एकवचन और बहुवचन ये दो वचन होते हैं ।

(7) अर्धमागधी एवं अन्य प्राकृत में तीन लिंग एवं तीन पुरुष हैं ।

(8) स, सो, से (पु. एकवचन) ते (पु. बहुवचन) ताओ (स्त्री. बहुवचन) हैं । अर्थात् प्रथम पुरुष में तीनों लिंगों का प्रयोग होता है ।

(9) मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के तीनों लिंगों में समान रूप हैं ।

(10) प्रथम पुरुष एकवचन में ति, ते प्रत्ययों की बहुलता हैं । इ और ए प्रत्यय भी पाए जाते हैं (त्यादिनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचों 3/139) यथा – पुणों तं करेति लोभं । (आ. 2/5/93) एत्थ सत्थोवरते (आ 3/1/106) नमी नमेइ । (उत्त. 9/61), रमए पंडिए सासं । (उत्त. 1/37)

(11) 'ति' या इ प्रत्यय से पूर्व 'अ' का ए भी हो जाता है । यथा सव्वं पावं कम्मं झोसेति । (आ 3/2/117), ण करेति पावं (आ 3/2/112) जंसि एगे पमादेंति (आ 3/3/127)

(12) वर्तमानकाल प्रथम पुरुष बहुवचन में 'न्ति', न्ते प्रत्यय होते हैं । यथा गच्छंति अवसा तमं । (उत्त. 7/10) उंवेंति माणसं जोणिं । (उत्त. 7/20) (बहुष्वांद्यस्य न्ति न्ते इरे 3/142)

(13) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष एकवचन में 'सि' और 'से' प्रत्यय होते हैं । (द्वितीयस्य सि से 3/140) भणसि, भणसे ।

(14) वर्तमानकाल मध्यम पुरुष एकवचन में 'ह' प्रत्यय होता है । (**मध्यमस्येत्था** – हचो 3/143) महाराष्ट्री में 'इत्था' होता है ।

(15) वर्तमानकाल उत्तम पुरुष एकवचन में 'मि' प्रत्यय होता है । 'मि' प्रत्यय होने पर 'अ' का ए एवं 'अ' का 'आ' भी होता है । यथा – भणेमि, भणामि (तृतीयस्य मि 3/141)

(16) वर्तमानकाल उत्तम पुरुष बहुवचन में 'मो' प्रत्यय की बहुलता है । भणमो, भणामो, भणेमो (तृतीयस्य मो–मु–मा : 3/144)

पाठ – सात

संज्ञा विचार

वीअ–पण्णावणा पवेरा

पढम–पण्णावणा

संज्ञा शब्द – अकारान्त पुर्लिग 'जिण'

	एगवयण	बहुवयणं
पढमा	जिणे, जिणो	जिणा
वीआ	जिणं	जिणा, जिणे
तइया	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिं
चउत्थी	जिणस्स, जिणाए जिणाते, जिणाय	जिणाण, जिणाणं
पंचमी	जिणत्तो, जिणातो जिणातु, जिणाओ जिणाउ, जिणाहि जिणाहिंतो, जिणा	जिणत्तो, जिणातो जिणातु, जिणाओ जिणाउ, जिणाहि जिणाहिंतो, जिणासुंतो
छट्ठी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
सप्तमी	जिणंसि, जिणम्मि, जिणे	जिणेसु, जिणेसुं
संबोहण	जिण ! जिणे ! जिणो ! जिणा !	जिणा !

● **'जिण' शब्द की तरह निम्न संज्ञा शब्दों के रूप बनाइए –**

वीर, तित्थयर, आइरिय, उवज्झाय, उवासग (श्रावक), समण (मुनि), विणय, णर, मणुज, किविण (कृपण-कंजूस), खत्तिय (क्षत्रिय), जिणदत्त, अरह, सुय (सुत = पुत्र), सेणिग (श्रेणिक राजा), कुमर गाम, चेल, णिग्गंठ (निर्ग्रन्थ), उसह (सृपभ/वृपभ = वैल), तस (त्रस), तित्थ (तीर्थ), तेल्ल, धण्ण, देव, धम्म, पउम (पद्म), पुरिस, पोग्गल, भाव ।

- अर्धमागधी प्राकृत में 'भगवत्' शब्द का प्रथमा एकवचन में भगवं, मतिमंत = मतिमं, भगवेतो, मतिमंतो । यथा - वसुमंतो, मतिमंतो (आ 8/8/229) भगवं च । (आ 9/1/268)
- तृतीया एकवचन में भगवता, भगवया । भगवता परिण्णणा पवेदिता (आ. 1/3/24)
- षष्ठी एकवचन में भगवतो, भगवयो । भगवतो अणगाराणं (आ 1/3/25)
- मण, वय, काय आदि शब्दों के तृतीया एकवचन में मणसा, वयसा, कायसा, जोगसा
- 'कम्भ' एवं 'धम्म' के तृतीया एकवचन में कम्भुणा, धम्मुणा जैसे रूप प्रयुक्त हैं । कम्भुणा बंभणो होइ (उत्त. 25/33)
- शौरसेनी के पंचमी एकवचन एवं बहुवचन 'आदो', 'आदु' प्रत्यय होते हैं । जिणादो, जिणादु
- शौरसेनी के सप्तमी एकवचन में 'म्हि' प्रत्यय होता है । जिणम्हि

कर्मकारक

वीअ-पण्णावणा

कम्म-कारग (कर्मकारक का) - कर्ता जिसको चाहता है वह कर्म है या जिस वस्तु या पुरुष के ऊपर क्रिया प्रभाव पड़ता है, वह कर्म है । यथा अकामा जंति दोग्गइं । (उत्त. 9/53) **(कर्तुरीप्सिततमं कर्म)**

वाक्य प्रयोग

सो विज्जालयं गच्छति = वह विद्यालय को जाता है । सो देवं णमति = वह देव को नमन करता है । सो वीरं सरति = वह वीर को स्मरण करता है । सो वसहं णयति = वह बैल ले आता है । सो छत्तं पढति = वह छात्र को पढ़ाता है । सो जीवं रकखति = वह जीव को बचाता है । सो समणं अच्चति = वह श्रमण को पूजता है । सो धम्मं सुणति = वह धर्म सुनता है । सो विणयं कुणेति = वह विनय करता है । सो लेहं लिखति = वह लेख लिखता है ।

- **प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए -**

सो महावीरं णमति । तं अच्छति । तं धम्मं पालति । णियमं गिण्हेति । सेणिगं कहेति । वीतरागं मुणेति । तेजं चिंतति । मेहं पस्सति । समणं सेवति । धम्मं पगडति । संतिसायरं पणमति । सो पुत्तं पस्सति।

- **निम्न शब्दों का द्वितीया एकवचन में प्रयोग कीजिए -**

णर (नर-मनुष्य), सुग (शुक = तोता), अस्स (अश्व = घोड़ा), खग्ग (खड्ग), छत्त (छात्र), खल (दुष्ट), गज (हाथी), हय (घोड़ा), वसह (बैल), पुत्त (पुत्र), सुज्ज (सूर्य), चंद, णड (नर), रुक्ख (वृक्ष), मूसग (चूहा), जणग (पिता), चाव (चाप), गह (ग्रह), णकरवत्त (नक्षत्र), वग (वक), कूव (कूप), कुक्कुर (कुत्तः), अणिल (हवा):, अणल (अग्नि), मेहकुमार, सेणिक (श्रेणिक), देव, सुर, असुर, वड्ढमाण, अजित, संभव, पास, विमल ।

बहुवचन प्रयोग –

सो समणा पुच्छति । सो हए णेति । सो गिहा पासति । सो गजा अवलोगति । सो छत्ता/छत्ते सरति। सो पुत्ता सरति । सो मूसगा/मूसगे गुंजति । सो सुगा/सुगे पालति । सो णरा/णरे पदसति । सो अरिहंते णमति। सो सिद्धा/सिद्धे पणमति । सो आइरिया/आइरिए पुज्जति । सो उवज्झाए णमति । ते णमंति । ते समणे पेसंति। ते देवा/देवे णमंति । असुरा पणमंति ।

शब्द रूप

इकारांत 'मुणि' शब्द

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	मुणी	मुणी, मुणिणो
वीणा	मुणिं	मुणी, मुणिणो
तइया	मुणिणा	मुणीहि, मुणीहिं
चउत्थी	मुणिस्स, मुणिणो	मुणीण, मुणीणं
पंचमी	मुणित्तो, मुणीहि, मुणिणो	मुणित्तो, मुणीहिंतो, मुणीसुंतो
छट्ठी	मुणिस्स, मुणिणो	मुणीण, मुणीणं
सत्तमी	मुणंसि, मुणम्मि	मुणीसु, मुणीसुं
सम्बोहण	मुणि !	मुणि ।

'मुणि' शब्द की तरह निम्न शब्दों के रूप भी बनेंगे –

अरि (शत्रु), करि (हाथि), रवि (सूर्य), हरि (विष्णु), अग्गि (अग्नि), उदहि, वारिहि, जलहि, णीरहि, गिरि, कवि (कपि – बन्दर), असि (तलवार), णरवइ (नृपति), णिहि (निधि – खजाना), अतिहि (अतिथि = मेहमान), पाणि, वाहि (व्याधि = रोग), विहि (विधि = भाग्य), जति (यति = योगी), [illegible], णेमि, सारहि (सारथि)

● निम्न वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

मुणी गच्छति । करी समति । गिरी पहसति । सो हरी । (एकवचन कर्ता) मुणिं पुच्छति । [illegible] पस्सति । करिं पालति । असिं णमति । कसिं इच्छति । (द्वि. ए) मुणी णमंति । मुणिणो [illegible] करिणो णएंति । असिहिणो सम्माणेंति । णिहिणो सुरक्खंति । णइवई/णइवइणो सरंति । (द्वि. [illegible]

● प्राकृत में अनुवाद कीजिए –

ये दोनों मुनियों को देखते हैं । मैं राजाओं को बुलाता हूं । नेमि को लिखता हूं । [illegible] देते हैं । निधि को सुरक्षित करता है । कपि को मारता है । उदधि की ओर देखता है । [illegible]

आता है । असि चलाता है । तुम दोनों वारिधि देखते हो । हम सब व्याधि को नहीं चाहते हैं । समाधि को श्रमण चाहता है । क्षत्रिय तलवार को सजाता है । श्रेणिक राजा को कहां देखता है । वह चारों ओर शत्रुओं को देखता है । वह धीरे-धीरे पढ़ता है ।

उकारांत पुर्लिंग 'भाणु' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	भाणू	भाणू, भाणूणो
बीआ	भाणुं	भाणू, भाणूणो, भाणवो
तइया	भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं
चउत्थी	भाणुस्स, भाणुणो	भाणूण, भाणूणं
पंचमी	भाणुत्तो, भाणुहिंतो भाणुणो	भाणुत्तो, भाणुहिंतो, भाणुसुंतो
छट्ठी	भाणुस्स, भाणुणो	भाणूण, भाणूणं
सप्तमी	भाणुंसि, भाणुम्मि	भाणूसु, भाणूसुं
संबोहण	भाणु !	भाणू !

'भाणु' शब्द की तरह निम्न रूप बनेंगे –

गुरु, वाउ, इंदु, पसु (पशु), विण्हु (विष्णु), रिउ (रिपु = शत्रु), सिंधु, सत्तु (शत्रु), तरु (वृक्ष) पंसु (पांशु = धूलि), मिउ (मृदु), विहु (विधु = चेऽवा), इसु (इषु = वाण), सूणु (सुनु = पुत्र) सिसु (शिशु = पुत्र), भाउ, पिउ ।

वाक्य प्रयोग –

गुरुं णमामि । भाणुं पस्सामि । ते विण्हुं सरंति । सिंधु पेंरत गच्छामि । तरुं पस्सति । पंसुं णिक्खेवति। ताओ मिउं वयणं वदंति । सुणवो णिमंतति । रिउणो ललकारेति । तुमं सत्तुणो हणसि । तुम्हे इसुणो णयंति। विहुं पस्सति । इंदुं अवलोगति । वाउं पदूसति ।

● निम्न हिन्दी वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए –

हम दोनों गुरुओं को निमंत्रित करते हैं । वे शत्रु को देखते हैं । आज तू वृक्ष काटता है । वह पंशु को फैलाता है । वे दोनों बालिकाएं चंद्रमा देखती हैं । मैं शिशु को पढ़ाता हूं । तुम सब कब सिंधु की ओर जाते हो । देव वीर को णमन करता है ।

पुर्लिग ईकारांत 'केवली' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	केवली	केवली, केवलिणो
वीआ	केवलिं	केवली, केवलिणो
तइया	केवलिणा	केवलीहि, केवलीहिं
चउत्थी	केवलिस्स, केवलिणो	केवलीण, केवलीणं
पंचमी	केवलित्तो, केवलीहिंतो केवलिणो	केवलित्तो, केवलीहिंतो केवलीसुंतो
छट्ठी	केवलिस्स, केवलिणो	केवलीण, केवलीणं
सप्तमी	केवलिंसि, केवलिम्हि	केवलीसु, केवलीसुं
संबोहण	केवलि !	केवलि !

● 'केवली' शब्द की तरह 'णाणी' सामी के रूप चलेंगे

वाक्य प्रयोग

केवलिं णमामि । केवलिणो णमंति । ते णाणिं पुच्छंति । तुम्हे णाणिणो पुच्छह । तुमं केवली णमसि। सो णाणिं पस्सति ।

ऊकारान्त पुर्लिग 'जंबू' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	जंबू	जंबू, जंबुणो
वीआ	जंबुं	जंबू, जंबुणो
तइया	जंबुणा	जंबूहि, जंबूहिं
चउत्थी	जंबुस्स, जंबुणो	जंबूण, जंबूणं
पंचमी	जंबुत्तो, जंबूहिंतो, जंबूणो	जंबूत्तो, जंबूहिंतो, जंबूसुंतो
छट्ठी	जंबुस्स, जंबुणो	जंबूण, जंबूणं
सप्तमी	जंबुंसि, जंबुम्मि	जंबूसु, जंबूसुं
संबोहण	जंबु !	जंबू !

आकारांत पुर्लिंग 'आया' शब्द

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	आया	आया
वीआ	आयं	आया, आए
तइया	आएण, आएणं	आएहि, आएहिं
चउत्थी	आयस्स, आयाते, आयाए	आयाण, आयाणं
पंचमी	आयत्तो, आयातो, आयाहिंतो आयाओ, आयाउ	आयत्तो, आयातो, आयाहिंतो आयासुंतो
छट्ठी	आयस्स	आयाण, आयाणं
सप्तमी	आयंसि, आयम्मि	आयासु, आयासुं
संबोहण	आया !	आया !

● 'आया' या आता, आदा, अप्पा आदि के रूप इसी तरह चलेंगे ।

'राया' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	राया	राया, रायाणो, राइणो
वीआ	रायं	राया, रायाणो, राइणो
तइया	राएण, राएणं, रण्णा	रायाहि, रायाहिं
चउत्थी	रायस्स, रायाते, राइणो रण्णो	रायाण, रायाणं
पंचमी	रायत्तो, रायातो, रायाहिंतो राइणो	रायत्तो, रायातो, रायाहिंतो रायासुंतो
छट्ठी	रायस्स, राइणो, रण्णो	रायाण, रायाणं
सप्तमी	रायंसि, रायम्मि	रायासु, रायासुं
संबोहण	राय ! राया !	राया !

आकारांत स्त्रीलिंग 'चंदणा' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	चंदणा	चंदणा, चंदणाओ
वीआ	चंदणं	चंदणा, चंदणाओ
तइया	चंदणाए	चंदणाहि, चंदणाहिं
चउत्थी	चंदणाए	चंदणाण, चंदणाणं
पंचमी	चंदणाए	चंदणाहिंतो, चंदणासुंतो
छट्ठी	चंदणाए	चंदणाण, चंदणाणं
सप्तमी	चंदणाए	चंदणासु, चंदणासुं
संबोहण	चंदणे ! चंदणा !	चंदणा !

'चंदणा' के समान खमा, भद्दा, सुभद्दा, णंदा, सुणंदा, गंगा, चंचला, पमदा, केता, सिला (शिला-पत्थर), भज्जा/भारिया, भज्जा/भारिया, कहा, कण्णा, साला (शाला), वालिगा, रमा, माला, रमा, लता, सुता, विमला, अंजणा, रेजणा, अंबा, इच्छा, भिक्खा (भिक्षा), दिक्खा (दीक्षा), सिक्खा (शिक्षा) आदि के रूप चलेंगे ।

इकारांत स्त्रीलिंग 'बुद्धि' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ
वीआ	बुद्धिं	बुद्धी, बुद्धीओ
तइया	बुद्धीए	बुद्धीहि, बुद्धीहिं
चउत्थी	बुद्धीए	बुद्धीण, बुद्धीणं
पंचमी	बुद्धीए, बुद्धीहिंतो	बुद्धित्तो, बुद्धीहिंतो, बुद्धीसुंतो
छट्ठी	बुद्धीए	बुद्धीण, बुद्धीणं
सप्तमी	बुद्धीए	बुद्धीसु, बुद्धीसुं
संबोहण	बुद्धी !	बुद्धी !

तृतीया एकवचन से लेकर सप्तमी एकवचन पर्यन्त अर्धमागधी शौरसेनी में प्रायः 'ए' प्रत्यय होता है, कहीं-कहीं पर 'इ' भी होता है । साहित्यिक प्राकृत में अ, आ, इ और ए प्रत्ययों का प्रयोग होता है ।

अकारान्त नपुंसकलिंग 'णाण' शब्द के रूप

	एगवयणं	बहुवयणं
पढमा	णाणं	णाणाइ, णाणाइं, णाणाणि णाणाणिं
वीआ	णाणं	णाणाइ, णाणाइं, णाणाणि णाणाणिं
तइया	णाणेण, णाणेणं	णाणेहि, णाणेहिं
चउत्थी	णाणस्स, णाणाते णाणाए	णाणाण, णाणाणं
पंचमी	णाणत्तो, णाणातो णाणातु, णाणाओ णाणाउ, णाणाहि णाणाहिंतो	णाणत्तो, णाणातो, णाणातु णाणाओ, णाणाउ, णाणाहि णाणाहिंतो, णाणासुंतो
छट्ठी	णाणस्स	णाणाण, णाणाणं
सप्तमी	णाणंसि, णाणे	णाणेसु, णाणेसुं
संबोहण	णाण ! णाणे !	णाणाणि !

● **'णाण' शब्द की तरह निम्न रूप बनेंगे –**

पवयण, वयण, णयण, चयण, धण, मण, वण, पोत्थअ, जल, सुह, दुह, सत्थ (शास्त्र), वत्थ (वस्त्र) सवण (श्रवण-कान), उज्जाण (उद्यान), झाण (ध्यान), ठाण (स्थान), माण, रतण, रदण (रयण), णेत (नेत्र), दंसण (दर्शन), चारित्त (चारित्र), मित्त, विस (विष), जलज (कमल), णीरज, सरोज, कुसुम, कुमुद पुंडरीग, सोगंधिग आदि के रूप चलेंगे।

इकारांत नपुंसकलिंग 'अक्खि' शब्द के रूप

पढमा	अक्खिं	अक्खीइ, अक्खीइं, अक्खीणि, अक्खीणिं
वीआ	अक्खिं	अक्खीइ, अक्खीइं, अक्खीणि, अक्खीणिं

शेष पुर्लिग की तरह रूप बनेंगे। 'अक्खि' शब्द की तरह दहि, वारि, अट्ठि।

उकारांत नपुंसकलिंग 'वत्थु' शब्द के रूप

पढमा	वत्थुं	वत्थूइ, वत्थूइं, वत्थूणि, वत्थूणिं
वीआ	वत्थुं	वत्थूइ, वत्थूइं, वत्थूणि, वत्थूणिं

दारु, जाणु, महु, अंबु, वणु, अस्सु, जतु (लाख), समसु (श्मश्रु-दाढ़ी), साणु (चोटी), तिपु, तालु आदि के रूप 'वत्थु' की तरह चलेंगे ।

नियम निर्देश 'कर्मकारक' (कत्तु-इट्ठनमं कम्म)

(1) कर्ता अपने क्रिया व्यापार के द्वारा जिस वस्तु को सबसे अधिक प्राप्त करने की इच्छा करता है, वह कर्म है । (कम्मणि वीआ) वीरं णमामि । धीरं सरामि ।

(2) दुह, याच, पच, दंड, रुध, पुच्छ, चि, वद, सास, जि, मह, मुस क्रियाओं के योग में द्वितीया होती है । यथा - गावं दुहति । बलिं याचते । विणयं याचते । ओदणं पचति । सो छत्तं दंडति । कम्मं रुधति/रोधति । पण्हं पुच्छति । पुष्फाणिं चिणेति । धम्मं वदति, धम्मं सासति । दहिं महति । चोरं मुसेति / समणं णयति । धणं हरति । हलं कस्सति । गीरं वहसि ।

(3) देस, काल, भाव, गंतव्य आदि में 'कर्म' कारक होता है । यथा - राजपुरं समति । मासं असति। गोदोहणं करेति । कोसं चलति ।

(4) गत्यर्थक, गम, रण, बुध्यर्थक - बुह, णा, विद/वेद, प्रत्यवसानार्थक - अक्ख, अद, मुंज, शब्दकर्मवाचक,- पढ, उच्चर आदि में कर्म का प्रयोग होता है । यथा - सत्तुणो सग्गं गच्छति । णाणं णाति । वेदं वेदति । फलं भक्खति/अदति/भुंजति/पाठं पढति/उच्चरति ।

(5) उव, अणु - आधि और 'आ' पूर्वक 'वस' धातु में द्वितीया होती है । यथा गामं उववसति । समणं अणुवसति/पुरं अधिवसति/गुरु वणं आविसति ।

(6) अधि + सय, अधिचिट्ठ और अहि + आस में द्वितीया होती है । यथा - गामं अधिसमति । गामं अहिचिट्ठति । गामं अहिआसति ।

(7) अधि + णिविस क्रिया में द्वितीया होती है । पव्वयं अहिणिविसति ।

(8) समया, णिणसा, हा, धिग, अंतरा, अंतरेण, अति, जेण, तेज, विना, सव्वतो, उभयतो, परितो, अभितो आदि में भी द्वितीया होती है । यथा - समयां पव्वयं णई । णिअसा पव्वयं वणं । हा णरिंद वाही । इणं जम्मिगंधिश अंतरा णयइं णामो । अंतरेण धम्मं सुहं च । अइवुइं महाबलं कुणंति । जेण जिणवरं सरति, तेण झाणं हवति । सव्वतो णयरं संती । उभयतो वणं । परितो जिणं देवगा। जिणं बिना ण गई ।

(9) लक्खण, अभि, वीप्सा, इत्थंभूत, पडि, परि, अनु आदि के योग में द्वितीया होती है ।

(10) क्रिया विशेषण शब्द में द्वितीया होती है । आसो सत्तरो धावति ।

● प्राकृत - वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

से आनवते, से णानबले, मित्तवले, से पेच्चबले, से देवबले, से रायबले, से चोरबले, से अतिहिबले, से किवणबले, से समणबले, इच्चेतेहिं विरुवरुवेहिं कज्जेहिं दंडसमादाणं सपेहाए भय कज्जंति, त्ति मण्णमाणे अदुरा आसंसाए ।

पिंड वा लोयं वा खीरं वा दहिं वा णवणीतं वा धयं वा गुलं वा तेल्लं वा महुं मज्जं वा मंसं वा संकुलिं फाणितं पूपं वा सिहरिणिं वा लभिस्सामि ।

● **निम्न वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए –**

महावीर नगर में प्रवेश करते हैं । वहां उद्यान में बैठते हैं । वे लोगों को समझाते हैं । चारों ओर कर्म हैं । कर्मों को जो समझता है, वह मुक्त होता है । चंदणा जीवों के प्रति दया करती है । वह माता को पूजती है । पिता को आदर देती है । वह बुद्धि को फैलाती है । वह महावीर के समीप आती है। चंदना का हृदय धर्म की ओर अग्रसर होता है । वह जीवन पर्यन्त धर्म तक रहती है । महावीर से शिक्षा मांगती है । दीक्षा को कहती है । वह उनसे धर्म पूछती है । धर्म से तत्त्व मथती है । ज्ञान के बिना सुख नहीं ।

● **उत्तर दीजिए –**

(1) कर्म क्या है ? वस्तु का व्यापार क्या है ?

(2) कर्म में द्वितीया कब होती है ?

(3) दुह, याच, पुच्छ में द्वितीया का प्रयोग कीजिए ।

(4) अभितो, परितो, उभयतो के वाक्य प्रयोग कीजिए ।

(5) अंतरा, अंतरेण, विणा के सरल वाक्य बनाइए ।

(6) उसहमजियं च वंदे, संभव-अहिणंदणं च सुमइं । वा पूर्ण पद लिखकर विभक्ति का निर्देश कीजिए

द्वितीया प्रयोग –

	(पुं) जिणं णमइ ।	जिणा णमंति ।
	स्त्री - धारणिं देविं पणमइ ।	ताओ अंजणं सरंति ।
	(नपुं) इमं दहिं भुंजइ ।	इमाणिं आगमसुत्ताणिं पढंति ।

● **क्रिया प्रयोग कीजिए –** मालं, पुत्तं, सत्थं, णाणं, पवयणं, आयारं, सायरं । मालाओ, वयणाणिं, णयणाणिं, सुत्ताणिं, फलाइ, जलाइं ।

करण कारक

तइय–पण्णावणा पवेस

तदिया विहत्ती - करणकारग - (साधकतमं करणं) से, के द्वारा ।

जो क्रिया की सिद्धि में सबसे अधिक सहायक होता है वह करण कहलाता है । यथा - पवयणेणं अप्पसुद्धिं करेति । दंसणेण लाहं पत्तेति ।

वाक्य प्रयोग

समणो सहावेण पवित्तो । सुहेण आता सुहो हवति । असुहेण अपवित्तो । णाणेण, दंसणेण चरित्तेणं च आतं रक्खति । अज्झयणेणं वसति । धणेण किं पयोजण ! सो णाणेण हीणो । बालगो अज्झयणेणं सुहं पावति । आसवेण कम्माणि आगच्छंति । मासेण उववासं करेति । गुरुणा सह सिस्सो अज्झयणं कुणेति । तवेण साकं / समं / सद्धिं झाणं झाति । णाणेण विणा ण चरित्तं दंसणेण विणा ण णाणं । दंसणेण णाणेण चरित्तेणं एगेण विणा ण मोक्खो ।

समणेणं भगवता महावीरेणं आइगरेणं सय-संबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिस-वर-पुंडरीएणं पुरिस-वर-गंध-हत्थिणा लोगुत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोग-पज्जोअगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं बोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायएणॅ धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंत-चक्खवट्टिणा अप्पडिहय-वर-णाण-दंसण-धरेणं वियट्ट-छउमेणं जिणेणं जावएणं तिन्नेणं तारएणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सच्चन्नुणा सच्चदरिसिणा । (समवायांग 1)

● प्राकृत कीजिए –

चारित्र से मनुष्य पवित्र होता है । शुभ से स्वर्ग पाता है । अशुभ से कुनर होता है । शुद्ध से परमात्म स्वरूप को प्राप्त करता है । श्रमण से धर्म चलता है । महावीर से पूछता है । तप से मन वश करता है । आश्रव से कर्म आते हैं । बन्ध से मुक्ति नहीं है । पर्यावरण से वातावरण शुद्ध होता है । प्रदूषण से मानसिक और शारीरिक कष्ट होता है ।

नियम निर्देश

1. कत्ति करणम्मि तदिया (कर्तृ करण में तृतीया होती है ।) झाणेण तवेण कम्मं झएति ।
2. प्रकृति अर्थ में तृतीया होती है । यथा – सहावेण सुंदरो लोओ ।
3. फल प्राप्ति अर्थ में तृतीया होती है । यथा – संवच्छरेणं झाणेणं मुत्ती ।
4. सहत्थे नदिया – सह अर्थ में तृतीया होती है । पितुणा सह गच्छति ।
5. कार्यसिद्धिं अर्थ में तृतीया होती है । (सिद्धीइ तदिया) मासेण झाणं ।
6. अंग विगारत्थ-लक्खणे 'जहां अंग विकार लक्षित होता है, वहां तृतीया होती है । णेत्तेण हीणो । पादेण खंजो । कण्णेण वहिरो । कटिणा कुब्जो ।
7. इत्थं भूत-लक्खणे-इत्थंभूत अर्थ में तृतीया होती है । उवगरणेण साहू । मोणेण मुणी ' कमंडुलेणं साहगो ।
8. हेतुम्भि – हेतु अर्थ में तृतीया होती है । साहणाए परिवसति अत्थ । सवेण सुद्धी । झाणेण [illegible] । धणेण कुलं । दाणेण पत्तं । पुण्णेण दंसणं ।
9. किं, कज्जं, अट्ठ (अर्थ), पयोजणं एवं अलं के योग में तृतीया होती है । धणेण किं ? धणेण कज्जं । किमट्ठं णरिंदेण याचते । अलं समेण ।

10. शपथ अर्थ में तृतीया होती है। (सपथेणं च।) यथा - सच्चेण सवामि।
11. सत्तमीए तदिया - तेणं कालेण भगवता महावीरेणं

जिणेण जिणेहि, जिणेहिं

णाणेण णाणेहि, णाणेहिं

● **उत्तर दीजिए –**

1. किसके योग में तृतीया होती है ?
2. फलार्थ, इत्थभूतार्थ में तृतीया होती है, उदाहरण दीजिए।
3. हेतु अर्थ में कौन सी विभक्ति होती है ?
4. कत्थ (कुत्र), ईसिं (ईषत् - थोड़ा), कल्लं (कल), सं जहा - (जैसा कि), सह, सांक, सद्धि पुरा आदि अव्ययों के प्रयोग के साथ तृतीया के वाक्य बनाइए।
5. भुज्ज (भुंज् = खाना), अस (होना), संगह (एकत्रित करना), भूत (सजाना), कुण, कर, चत्त, अच्छ, आढव (प्रारंभ करना), किण (क्रीण खरीदना), धुण, धर, गण, गज्ज आदि क्रियाओं का तृतीया के वाक्यों के साथ प्रयोग कीजिए।

सम्प्रदान कारक

चउत्थ पण्णावणा पवेस

चतुत्थी विहत्ती (चतुत्थी संपदाणम्मि) संप्रदान अर्थ में चतुर्थी होती है। यथा - समणाणं सत्थाणि। छत्ताणं पोत्थगाणिं। बालाणं सिक्खा। णिंदाणं दया। वणप्फदीणं च रक्खणं देंति।

वाक्य प्रयोग –

जिणस्स णमेमि। तुमं समणस्स सत्थं देसि। तुम्हे जिणस्सभत्ती। अरिहंताणं सिद्धाणं आइरियाणं उवज्झायाणं साहूणं णमो। अहं जलस्स गच्छामि। मुणी सज्जणाणं उवदेसति। गुरु णाणस्स पेसति।

गाथा का अर्थ कीजिए -

अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो।
तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गाय - विराहणा॥ (उत्त. 2/17)

● **प्राकृत कीजिए –**

वह ज्ञान के लिए विद्यालय जाता है। श्रमणोपासक श्रमणों को नमन करता है। श्रावक गुरु की प्रशंसा करता है। श्राविका श्रमणियों के लिए आहार देती है। बालक पुस्तक के लिए पैसे मांगता है। तुम सब अरिहंत प्रभु को नमन करते हो। उपाध्यायों के लिए यह उपकरण है। बालिकाओं के लिए

शिक्षा, श्रमणों के लिए भिक्षा, ज्ञानियों के शास्त्र, छात्रों को पुस्तक और निर्धनों के लिए दान देता हूं। मुनि तप के लिए वन में जाते हैं।

नियम निर्देश

1. 'कम्मुणा अहिप्पेति स संपदाणं' जिसको भली भांति प्रदान किया जाए वह चतुर्थी होती है। यथा- समणाणं आहारं देति।
2. संपदाणे तु। सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। यथा - णाणिस्स सत्थं देति।
3. रुच्चत्थे चतुत्थी - रुच/रोच अर्थ में चतुर्थी होती है। सणणस्स रोचते णाणं।
4. तादत्थे वि। तादर्थ/के लिए अर्थ में चतुर्थी होती है। पढणत्थं विज्जालयस्स गच्छति।
5. कोह-दोह-ईरिस-असूयत्थे चतुत्थी। कोह (क्रोध) दोह (द्रह्-द्रोह करना), ईरिस (ईर्ष्य् - ईर्ष्या करना), असूय अर्थ में चतुर्थी होती है। यथा - दुट्ठो सज्जणस्स कोहति/दोहति/ईरिसति/असूयति।
6. इच्छत्थे। इच्छा अर्थ में चतुर्थी होती है। सो णाणस्स इच्छति।
7. सलाह (श्लाघ् - प्रशंसा करना), गुह (हनु - छिपाना), चिट्ठ, सप (शप् = शपथ लेना) अर्थ में चतुर्थी होती है। (ललाह-गुह-चिट्ठ-सपत्थे चतुत्थी। यथा णाणिस्स सलाहति। पावस्स णुहति। उज्जाणस्स चिट्ठति। सिरस्स सपति।
8. गत्यत्थे - गति अर्थ में चतुर्थी होती है। यथा - आहारं गच्छति साहू।
9. हित - सुहत्थे चतुत्थी। हित और सुख अर्थ में चतुर्थी होती है। यथा - आइरियो हितस्स परिभमति। गच्छति। सव्वेसिं जीवाणं सुहं अस्थि।
10. भह्-खेम-अत्थ-सक्क-णम-कल्लाण-इच्छ-कहत्थे चतुत्थी।
11. प्राकृत में चतुर्थी और षष्ठी में समानता है अर्थात् चतुर्थी के स्थान पर षष्ठी के प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जीवस्स (एकवचन) जीवाण (बहुवचन)
12. चतुर्थी की पहचान वाक्य रचना से होती है। जैसे

    णमो अरिहंताणं = अरिहंतों को / अरिहंतों के लिए नमन। 'नम' के योग में चतुर्थी।

    णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
    णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व-साहूणं॥

चतुर्थी - जीवस्स (पुं.)	जीवाण (पुं)
वणस्स (नपुं.)	वणाण (नपुं.)
सव्वस्स (पुं.) नपुं. सर्वनाम।	सव्वाण, सव्वेसिं (पुं. नपुं) सर्वनाम
मालाए, मालाइ (स्त्री.)	मालाण, मालाणं (स्त्री.)

अपादान कारक

पंचम – पण्णावणा

पंचमी - विहत्ती - (अपादान कारक) ध्रुवमपाए अवादाणं । अवादाणे पंचमी । पदार्थ से विच्छेद होने अर्थ में पंचमी विभक्ति होती है । यथा – संजोगा / संजोगातो विप्पमुक्कस्स ।

वाक्य प्रयोग

महावीर आज नगर से आते हैं । वे संजोग से मुक्त हैं । वे कहते हैं – जो धर्म से प्रमाद करता है वह नष्ट हो जाता है । प्रमाद से रहित शीघ्र मुक्त होता है । ध्यान से च्युत व्यक्ति नष्ट हो जाता है। ध्यान से शीघ्र कर्म क्षय कर लेता है ।

● प्राकृत वाक्यों का अनुवाद कीजिए

जो इमातो दिआतो वा अणुदिसातो वा अणुसंचरंति, सव्वातो दिसातो, सव्वातो अणुदिसातो सहेति, अणेग-रुवातो जोणीतो संधेति विरुव-रुवे फासे पडिसेवेदयति । (आ 1/1/6) तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरं पंचहत्थुत्तरे यानि होत्था हत्थुत्तराहिं चुते, चइत्ता गभं वक्कंते, हत्थुत्तराहिं गब्भातो गब्भं साहरिते, हत्थुत्तराहिं जाते, हत्थुत्तराहिं सव्वतो सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वइते, इत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अव्वाघाते णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवल-वर-णाण-दंसणे समुप्पण्णे सातिणा भगवं परिणिव्वुते ।

नियम निर्देश

1. अवादाणे पंचमी । यथा – पावातो विरमति । कम्मातो मुरुए ।
2. जुगुच्छ-विराम-पमादत्थे पंचमी । पावातो जुगुच्छते । पावातो विरमति । धम्मातो पमादयते ।
3. भयत्थे पंचमी । भय अर्थ में पंचमी होती है । यथा – पावातो भएति । कम्मातो विभेति । चोरातु विभेति ।
4. हैउत्थे वि । हेतु अर्थ में भी पंचमी होती है । णियमातो सम्मदिट्ठी ।
5. वारणत्थे पंचमी -निवारण अर्थ में पंचमी होती है । पावातो णिवारयक्ति ।
6. परा + जि अर्थ में पंचमी होती है । अज्झयणातो पराजयते ।
7. ववधाणत्थे पंचमी । व्यवधान अर्थ में पंचमी होती है । वीरो णिलीयते कम्मातो ।
8. उप्पत्ति-जोगे पंचमी । उत्पत्ति के योग में पंचमी होती है । गंगा पहवेति हिमालयातो णम्मादा अमरकंटकातो पहवेति ।
9. लज्जि रत्थे पंचमी । लज्जा अर्थ में पंचमी होती है । ससुरातो बहू लज्जेति ।
10. विणत्थे । विना के अर्थ में पंचमी होती है । सेवातो बिना ण फलं ।

11. दिशा, विदिशा या अन्य किसी स्थान से आने या जाने में भी पंचमी का प्रयोग होता है । सो दाहिण दिसाओ आगच्छइ = वह दक्षिण दिशा से आता है । ते उवासगा पासाओ विरमंति = वे/वे दोनों/वे सब श्रावक पाप से दूर होते हैं ।

	एक वचन	बहुवचन
पंचमी -	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ
(पु.)	जिणाहि, जिणाहिंतो, जिणा	जिणाहि, जिणाहिंतो, जिणासुंतो जिणेहि, जिणेहिंतो, जिणेसुंतो

● नपुसंकलिंग में उक्त प्रकार से ही रूप बनेंगे ।

● स्त्रीलिंग -	मालाओ, मालाउ मालाए, मालाइ	मालाओ, मालाउ मालाहि, मालाहिंतो, मालासुंतो
● सर्वनाम (पुं.) (नपुं.)	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहि, सव्वाहिंतो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहि, सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो सव्वेहि, सव्वेहिंतो, सव्वेसुंतो
● स्त्री (सर्व.)	सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो

सम्बन्ध कारक

छट्ठ–पण्णावणा

संबंध कारक – का, की, के (संबंधत्थे छट्ठी) सम्बंध अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती हैं । यथा- वीरस्स मातु पिअकारिणी । आइरियस्स एस उवएसो अत्थि ।

वाक्य प्रयोग

सत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा रायपेसियाण वा रायवंसट्ठियाणं वा अंतो वा बाहिं वा गच्छंताण वा संणिविट्ठाण वा विमंतेमाणाण वा अणिमंतेमाणाण वा असणं वा लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । (आ द्वि 1/3/346)

जस्स णं विक्सुस्स एवं भवति । (आ 8/7/277) एगस्स अद्धमासस्स आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा णीससंति वा । तेसिं ऐणं देवाणं एगस्स वास-सहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति । (सम 2 8)

● प्राकृत कीजिए –

वैशाली गणराज्य का शासक चेटक, चेटक की पुत्री त्रिशला, त्रिशला का पुत्र [illegible], [illegible] का शासन जिनशासन अमर है । उस शासन के श्रावक-श्राविका हैं । श्रमण-श्रमणी उनके [illegible] जो सूत्र हैं, आगम हैं । आगम का सार आचार है वे आचार का आचरण करते हैं । [illegible]

से है । चारित्र की पवित्रता आचरण से है । दर्शन का नाम श्रद्धा है, प्रबल विश्वास, उत्तम विश्वास का यही कारण है ।

नियम–निर्देश

1. छट्ठी हेउप्पजोगे - हेतु प्रयोग में षष्ठी होती है । यथा - अज्झयणस्स वसति ।
2. लक्खितत्थे छट्ठी - लक्षित अर्थ प्रगट करने में षष्ठी होती है । यथा - चंपा-णयरीए बहिं उज्जाणं राजपुरस्स पच्छिमो वणं ।
3. अधि-इ-ज्ज-ईसत्थे छट्ठी । अधि + इ दय (दया) ईस (समर्थ होना) अर्थ में षष्ठी होती है । चंदणा णिय - कम्माण सरति । णेमी पसूण दयते । गुरु सिस्सस्स ईसते ।
4. दूरंतिगत्थे छट्ठी । दूर और अन्तिक (पास) अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है । वणं गामस्स दूरं । महावीरस्स अंतिगं के वि णत्थि ।
5. कत्ति-कम्मणो कित्ती । 'कृत्' प्रत्ययों के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है । वीरस्स झाणं। सेणिगस्स भत्ती ।
6. आयुस्स-मद्द-भद्द-कुसण-सुह-अत्थ-हितत्थे छट्ठी । छत्तस्स भद्दं ।
7. जोग्ग-उचितुवजुत्त-अणुरुव-सरिसत्थे छट्ठी । एस नव जोग्गो णत्थि ।
8. कड-समक्खत्थे छट्ठी । कृत और समक्ष अर्थ में षष्ठी होती है । धम्मस्स कडे । रण्णो समक्खे।
9. हिंसत्थे वि । हिंसा अर्थ में षष्ठी होती है । खलो पसूण णिहंति ।

● सोचिए और समझिए –

(पुं.)	महावीरस्स देसणा अत्थि	समणाण/समणाणं समूहो अत्थि ।
(स्त्री.)	समणीए अज्झयणं अत्थ अत्थि ।	समणीण/समणीणं चाउमासो अत्थि ।
(नपुं.)	णाणस्स सारो इमो अत्थि	सुत्ताण सारो आयारो अत्थि ।

अधिकरण कारक

सत्तम पण्णावणा

सत्तमी विहत्ती – अधिकरण कारक । आधारो अहिकरणं । आधार का नाम अधिकरण है । अहिकरणे सत्तमी । यथा - मोक्खे इच्छा । झाणे उववसति । णाणम्मि रतो । तवम्मि पवीणो ।

वाक्य प्रयोग

नगर में श्रमण हैं । श्रमण पर विश्वास है । हम सब प्रार्थना में जाते हैं । हम ध्यान में लीन होते हैं । पंच परमेष्ठि - पद में पढ़ते हैं । अरिहंत में रमते हैं । सिद्ध में सिद्धि देखते हैं । आचार्य में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप होते हैं । वे ज्ञान में रत, ध्यान में लीन, तप में प्रवीण और चारित्र में रुचि रखते हैं । तू पर्व में उपवास करता है । तुम दोनों अनगार में श्रद्धा रखते हो । मैं धर्म में प्रवीण होता हूं ।

नियम निर्देश

1. जिस समय कोई कार्य होता है, उस समय सप्तमी होती है । यथा - चेत्तमासस्स तेरहम्मि जम्मो महावीरो ।
2. साहु - असाहुप्पजोगे । साधु और असाधु के प्रयोग में सप्तमी होती है । यथा - साहू अत्थि। जिणालयम्मि । असाहू अत्थि विकालेगोचरम्मि ।
3. णिमित्ततो कम्मजोगे - जहां निमित्त/प्रयोजन से कार्य किया जाता है, वहां सप्तमी होती है । कम्म खयम्मि तवे ।
4. जस्स भावेण भावो । जिस भाव से दूसरी क्रिया का होना लक्षित हो वहां सप्तमी होती है । यथा- गोसु दुद्धासु गते । दिक्खासु गते सो गच्छति ।
5. जहां किसी वस्तु में विशेषण द्वारा विशेषता निर्दिष्ट की जाती है, वहां सप्तमी होती है । णिद्धारणंसि सत्तमी । यथा - आइरिएसु एत्थिभलो ।
6. णेह-आदर-अणुरागत्थे सत्तमी । स्नेह, आदर, अनुराग आदि अर्थ में सप्तमी होती है । यथा - धम्मे अणुरागो, णाणंसि रुई । आगमेसु सद्धा । मुणीसुं समादरो ।
7. कारणत्थे य सत्तमी । कारणवाची शब्दों के योग में सप्तमी होती है । यथा - देववसं वुड्ढि-खए ।
8. कुसल - णिउण-पडु-पवीण-सोण्ड-पंडित्थे सप्तमी । यथा - ववहारे कुसलो मेहकुमारो । गणहरो णाणे पंडिए । अभयकुमारा पडु कलाए ।

सम्बोधन

जहां निमन्त्रण, आमन्त्रण आह्वान आदि किया जाता है, वहां सम्बोधन होता है । जैसे - सुयं मे आउसं ! हे आयुष्मान्, मैंने सुना ।

लज्जमाणा पुढो पास ! लज्जित होता हुआ तू देख । जइणं भंते ! हे भगवन् यदि ऐसा है । एवं खलु जंबु ! हे जम्बू ! निश्चय ही ऐसा है । समणा उसो ! हे आयुष्मान् श्रमणो ! गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति । हे गौतम ! जीव लघुता को प्राप्त होते हैं । जइ णं देवाणुप्पिया । तुब्भे मए सद्धिं पव्वयह। - देवानुप्रिय ! यदि तुम प्रव्रजित होते हो तो हमारे लिए अन्य कौन सा आधार है ? वीर ! उपदेश दें।

समणा ! तव मग्गो कडिणो अत्थि - हे श्रमणों ! आपका मार्ग कठिन है ।

भंते ! तुमं मित्तं ! हे भाग्यशाली ! तुम मित्र हो । सुबुद्धी ! ससो सेयो अत्थि - हे सुबुद्धि ! यह ठीक है ।

देवि ! गच्छ धम्मझाणं कुणसु । हे देवी ! तुम जाओ । धर्म ध्यान करो ।

मो तेयलिपुत्ता ! पुरओ पवाए - हे तेतलिपुत्र ! आगे प्रपात (गर्त) है ।

सुवरियं खलु भो ! दोवईए । अहो ! द्रोपति से अच्छा वरण किया ।

सम्बोधन में प्रथमा की तरह रूप बनते हैं । इसके एकवचन में दीर्घांत प्रयोगों का प्राय: ह्रस्व हो जाता है और ह्रस्वांत प्रयोग प्राय: ह्रस्व होते हैं । कभी-कभी ह्रस्व का दीर्घ भी होता है ।

पाठ – आठ

क्रिया विचार

(क) वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भणइ, भणए भणइ, भणति (अर्धमागधी) भणदि (शौरसेनी)	भणंति, भणेंति
मध्यम पुरुष	भणसि, भणेसि भणसे	भणित्था भणह, भणेह (अर्धमागधी, शौरसेनी)
उत्तम पुरुष	भणमि, भणेमि भणामि	भणमो, भणेमो भणामो

वर्तमान काल में ज्ज, ज्जा प्रत्यय लगाकर तीनों पुरुषों के रूप बनाए जाते हैं। भणेज्ज, भणेज्जा यह प्रयोग आर्ष प्राकृतों में विशेष रूप से पाया जाता है।

अस्–है–अत्थि

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सो अत्थि	ते अत्थि, ताओ अत्थि, ते सन्ति, ताओ सन्ति।
मध्यम पुरुष	तुमं अत्थि, तुमं सि	तुम्हे अत्थि, तुम्हे त्था
उत्तम पुरुष	अहं अत्थि अहं किम्हि	अम्हे अत्थि, वयं अत्थि अम्हे म्ह, वयं म्ह

– झा –

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	झाइ	झांति
मध्यम पुरुष	झासि	झाइत्था
उत्तम पुरुष	झामि	झामो

● **दा, णी, णे आदि के रूप इसी तरह बनेंगे ।**

इनके प्रयोग कारक में दिए गए हैं ।

सो हसइ = वह हंसता है । (अकर्मक)

सो पढइ = वह पढ़ता है । (सकर्मक)

सो हसइ के बीच कर्म नहीं प्रयुक्त हो सकता ।

सो पढड के बीच कर्म 'सुत्तं' हो सकता है ।

सो सुत्तं पढइ = वह सूत्र पढ़ता है । यहां सूत्र को पढ़ना कर्म है इसलिए सकर्मक प्रयोग है ।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा
	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा
	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा

सो भणेज्ज = वह कहता है, ते भणेज्जा = वे कहते हैं । तुम भणेज्ज, तुम्हे भणेज्जा, अहं भणेज्ज = मैं कहता हूं । अम्हे भणेज्जा = हम/हम दोनों/ हम सब कहते हैं ।

अट्ठम – पण्णावणा

अवि–काल–भविष्यत् काल – गा, गी, गे

	एगवयणं	बहुवयणं
पढम पुरिस	भणिस्सति, भणेस्सति, भणिस्सते	भणिस्संति, भणेस्संति
	भणिस्सइ, भणेस्सइ, भणिस्सए	भणिस्संते, भणेस्संते
	भणिहिति, भणेहिति, भणिहिते	भणिहिंति, भणेहिंति
	भणिहिइ, भणेहिइ, भणिहिए	भणिहिंते, भणेहिंते
मध्यम पुरुष	भणिस्ससि, भणेस्ससि, भणिस्ससे	भणिस्सह, भणेस्सह
	भणिहिसि, भणेहिसि, भणिहिसे	भणिहिह, भणेहिह
उत्तम पुरुष	भणिस्समि, भणेस्समि	भणिस्समो भणेस्समो
	भणिस्सामि, भणेस्सामि	भणिस्सामो, भणेस्सामो
	भणिहिमि, भणेहिमि	भणिस्समु, भणेस्समु
	भणिहामि, भणेहामि	भणिस्सामु, भणेस्सामु
	भणिस्सा, भणेस्सा	भणिस्सम, भणेस्सम
	भणिस्स, भणिस्सं	भणिस्साम, भणेस्साम
		भणिहिमो, भणेहिमो

भणिहिमु, भणेहिमो
भणिहामु, भणेहामु
भणिहिम, भणेहिम
भणिहाम, भणेहाम

वाक्य प्रयोग

महावीर चंपा नगरी में आएंगे, वहां ध्यान करेंगे। लोगों को तत्त्व उपदेश देंगे। वे कहेंगे - जो तत्त्व ज्ञान करेगा, तत्त्व श्रद्धान करेगा, वह सम्यक्त्व प्राप्त करेगा। ज्ञान से आत्म विशुद्धि को प्राप्त होगा और उसकी विशुद्धि मुक्तिपथ को प्राप्त कराएगी।

● निम्न धातुओं का भविष्यत् काल में प्रयोग कीजिए –

अच्च, असूय, आस, अधीय (अधि + आ = पढ़ना), इच्छ, इक्ख (ईक्ष = देखना), कंप (कम्प् = कांपना), कोव (कुप् = क्रोध करना), कस्स (कर्ष् = खींचना), कुद्द (कूर्द् = कूदना), कप्प (कृप् = समर्थ होना), किर (कृ = बिखेरना), कंद (क्रन्द), कम (क्रम = चलना), कीण (क्री = खरीदना), किलिम (क्लम् = थकना), खम, छाल (क्षत् = धोना), खिव (क्षिप् = फैंकना), खुह (क्षुभ् = क्षुभित होना), खण, गज्ज, गवेस, जुगुच्छ (गुप् = निन्दा करना), घोस (घुष् = घोषणा करना), चिण (चि = चुनना), चोर (चुर् = चुराना), छिण्ण (छिद् = काटना), जण, जिण्ण (जृ = जीर्ण होना), जल (जलना), डीय (डी = उड़ना), तड = पीटना, तण (तव् = फैलाना), तव (तर्क), तज्ज (तर्ज् = डांटना), तोल (तुल् = तोलना), तस (तुष् = तुष्ट होना), तिप्प (तृप् = तृप्त करना), तप (त्रप् = लजाना), धार (धारण करना), पेरय (प्रे + ईर् = प्रेरणा देना), बाध (पीड़ा देना), भक्ख (भक्ष् = खाना), भाज (भ्राज् = चमकना), मथ (मथना), सिव (सीना), सिज (सृज् = रचना)

● प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठा वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणभंतं करिस्संति। (समवायांग पृ. 82)

● निम्न क्रियाओं से पूर्व कर्ता एवं कर्म का प्रयोग कीजिए –

आणवखेक्खामि, सातिज्जिस्सामि, दलियिस्सामि, लिहिहिइ, चिंतिहिंति, जाणिस्संति, मुणेहिसि, मुणिस्सह, गच्छेहिह, रोचिस्सइ, वइस्संति।

नियम

(1) भविष्यत् काल में ज्ज, ज्जा प्रत्यय लगाकर तीनों पुरुषों के रूप बनाए जाते हैं।

(2) भविष्यत् काल में कुछ क्रियाओं के आदेश होते हैं, जिनके कारण 'हिं या स्स' का प्रयोग नहीं करना पड़ता है। (1) सोच्छ (श्रु), सोच्छामि = सुनुंगा (2) गच्छ (गम्) गच्छामि = जाऊंगा (3) रोच्छ (रुदि) रोच्छामि = रोऊंगा (4) वोच्छ (वद्) वोच्छामि = कहूंगा (5) दच्छ (दृश्)

दच्छामि = देखूंगा (6) मोच्छ (मुच्) मोच्छामि = छोड़ूंगा (7) वेच्छ (विद्) वेच्छामि जानूंगा (छेच्छ - छिद्) छेच्छामि = छेदूंगा (8) भेच्छ (भिद्) भेच्छामि = भेदूंगा भोच्छ (भुज्) भोच्छामि = खाऊंगा ।

(3) उक्त क्रियाओं में वर्तमानकाल सम्बन्धी प्रत्यय लगाकर सभी रूप बनाए जाते हैं ।

णवम–पण्णावणा

विधि/आज्ञा प्रयोग

प्रथम पुरुष	भणतु, भणेतु, भणउ, भणेउ	भणंतु, भणेंतु
मध्यम पुरुष	भणसु, भणेसु, भणहि, भणेहि भण, भणि	भणह, भणेह
उत्तम पुरुष	भणमु, भणेमु, भणिम	भणमो, भणेमो, भणिमो

वाक्य प्रयोग

तुम्हे वेरग्गपुव्वं चिंतेह । अच्छेरियं दिक्खा ण होतु । णाणिस्स दिक्खं हेतु । ते पवयणं सुणेंतु । आयारंग-आगमे चारित्तस्स वण्णेसु तुमं अज्ज चिंतेहि । तुम्हे वीयरागस्य वयणं सुणेह । मा बाधयेसि । अहं भाजमो । अम्हे पेरयमु ।

● प्राकृत में अनुवाद कीजिए –

संयोगों से रहित अनगार या भिक्षु विनय का आचरण करे । विनय के विचारों को सुने । जो तू इष्ट समझे, उसे तू पाल कर । तुम आचरण करो, उस पर ध्यान दो । वीतराग वाणी को समझो । गुरु की आज्ञा, निर्देश, उपकार आदि को पहचान । श्वान, शूकर और मनुष्य के दृष्टांत को समझो । प्रमत्त जन, हिंसक और अविरत जन इस तरह विचारें । मोक्ष है, कृत कर्मो के लिए मोक्ष नहीं है । इस संसार में वित्त से त्राण कैसे ? विचारो, उठो । तुम सब मोह को छोड़ो, परिग्रह त्यागो, विषय-प्रवृत्ति से हटो, जागृत होओ तथा आत्मज्ञानी बनो । मुझसे सुनो-सब भिक्षुओं, सभी अनगारों एवं साधकों में ऐसी रुचि बने, कि वे विषय-लीला से मुक्त हो जाएं ।

नियम – विधि काल में ज्ज, ज्जा प्रत्यय लगाकर प्रथम मध्यम उत्तम पुरुष के सभी रूप बनाए जाते हैं ।

प्रथम पुरुष	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा
मध्यम पुरुष	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा
उत्तम पुरुष	भणेज्ज, भणेज्जा	भणेज्ज, भणेज्जा

दसअ–पण्णावणा

भूतकाल – इंसु, एंसु

भणिंसु, भणेंसु	भणिंसु, भणेंसु
भणिंसु, भणेंसु	भणिंसु, भणेंसु
भणिंसु, भणेंसु	भणिंसु, भणेंसु

भूतकाल में भणेज्ज, भणेज्जा जैसे प्रयोग तीनों पुरुषों एवं दोनों वचनों में समान रूप से होते हैं।

वाक्य प्रयोग

सो भणिंसु = उसने कहा । ते भणिंसु = उन्होंने कहा । तुमं भणेंसु = तूने कहा । तुम्हें भणिंसु = तुम सबने कहा । अहं भणिंसु = मैंने कहा । अम्हे भणिंसु = मैंने कहा ।

● प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

ते हंता हंता बहवे कंदिंसु । पुट्ठो वि णाभिभासिंसु । अभिरुज्झ कायं विहरिंसु ।
आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु । संबुज्झमाणे पुणरवि आसिंसु भगवं ।
जाणवया लूसिंसु । समणा तत्थ एव विहरिंसु । परिस्सहाइं लुंचिंसु ।
पंसुणा अवकरिंसु । आसणाओ खलइंसु । उच्चातइयं णिहणिंसु ।

नियम

(1) प्राकृतों में भूतकाल के लिए पृथक रूप नहीं । अपितु वचन, लिंग एवं पुरुष के अनुसार क्रियाओं में विभक्ति सूचक प्रथमांत प्रत्यय लगा लिए जाते हैं । यथा – सो गओ, महावीरेण पण्णत्तो । चंदणा समगया । अंजणा दुही जाया । आसिंसु = खड़े, लूसिंसु = कष्ट दिया, लंचिंसु = लोचा, अवकरिंसु = ढका

(2) महाराष्ट्री प्राकृत में 'ईअ' प्रत्यय लगाकर तीनों पुरुषों में समान रूप बनाए जाते हैं ।

प्रथम पुरुष	भणीअ	भणीअ
मध्यम पुरुष	भणीअ	भणीअ
उत्तम पुरुष	भणीअ	भणीअ

● प्राकृत में अनुवाद कीजिए –

वे महावीर चंपा नगरी में आए । उन्होंने जनपद के लोगों को प्रवचन दिया । उन्होंने कहा, समझाया, बोध कराया, ज्ञान दिया, तत्त्वचिंतन प्रस्तुत किया । तृतस्पर्श, शीतस्पर्श, तेजस्पर्श और दंक्षमशक भी परिषह हैं जो इनको सहन करता है, वह मोक्ख की साधना में सफल होता है । जो वीर हैं, उन्होंने ही नाना प्रकार की वज्रभूमि, शुभ्रभूमि के प्रान्तों की शय्याओं का सेवन किया । उन्होंने दंडों, मुष्टि, कपालों एवं मिट्टि के ढेलों को सहन किया । जिन्हें आसन से गिराया, वे ही ऊँचे हुए उत्कृष्ट मार्ग की ओर गए।

पाठ – नौ

कृदन्त विचार

एगारह–पण्णावणा

कियंत–पजोग – (कृदंत प्रयोग)

धातुओं के अन्त में जोड़कर जिस प्रत्यय द्वारा संज्ञा, विशेषण और अव्यय के वाचक शब्दों को बनाया जाता है, उन्हें कृत् कहते हैं तथा उनके योग से बने शब्दों को कृदन्त कहते हैं । यथा - भण + न्त = भणंत = भणंतो । भणंतो बालो अत्थ आगच्छति ।

कृदन्त

(1) वर्तमानकालिक कृदंत - न्त, माण - हुआ (शतृ, शानच)

(2) भूतकालिक कृदन्त - त/य - (क्त)

(3) भविष्यत्कालिक कृदन्त - न्त, माण से पूर्व 'हि' या 'स्स' का प्रयोग ।

(4) पूर्वकालिक कृदन्त (सम्बन्ध कृदंत) तूण, तूणं ऊण, ऊणं, दूण, दूणं (कत्वा)

(5) निमित्तार्थक कृदंत (हेत्वर्थ कृदन्त) तुं, उं, दुं (तुमुन्)

(6) विध्यर्थ कृदंत (विधि - अर्थक कृदन्त) तव्व, दव्व, यव्व (तव्यत्)

(क) वर्तमानकालिक कृदन्त

(1) वर्तमान काल का बोध कराने के लिए 'न्त' और 'माण' इन दो प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है ।

लघ/लव	लघंतो	लघंता/लघंती	लघंतं
लिह	लिहंतो	लिहंता/लिहंती	लिहंतं
वस	वसंतो	वसंता/वसंती	वसंतं
सक्क	सक्कंतो	सक्कंता/सक्कंती	सक्कंतं
सास	सासंतो	सासंता/सासंती	सासंतं
सिज	सिजंतो	सिजंता/सिजंती	सिजंतं
चिट्ठ	चिट्ठंतो	चिट्ठंता/चिट्ठंती	चिट्ठंतं

फास	फासंतो	फासंता/फासंती	फासंतं
सय	सयंतो	सयंता/सयंती	सयंतं
सर (स्मद्)	सरंतो	सरंता/सरंती	सरंतं
हर (हृ)	हरंतो	हरंता/हरंती	हरंतं

● क्वचित् 'न्त' एवं 'माणं' प्रत्ययों से पूर्व प्राकृत में 'अ' का 'ए' या 'अ' का 'इ' भी होता है।

आत्मनेपदी धातुओं में 'माण' प्रत्यय

धातु	पुर्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
इक्ख (ईक्षु)	इक्खमाणो	इक्खमाणा/इक्खमाणी	इक्खमाणं
कंप	कंपमाणो	कंपमाणा/कंपमाणी	कंपमाणं
कर	करमाणो	करमाणा/करमाणी	करमाणं
जण	जणमाणो	जणमाणा/जणमाणी	जणमाणं
तुर(त्वर)	तुरमाणो	तुरमाणा/तुरमाणी	तुरमाणं
ताय (त्रै)	तायमाणो	तायमाणा/तायमाणी	तायमाणं
दय	दयमाणो	दयमाणा/दयमाणी	दयमाणं
दिप्प	दिप्पमाणो	दिप्पमाणा/दिप्पमाणी	दिप्पमाणं
णय	णयमाणो	णयमाणा/णयमाणी	णयमाणं
मण्ण (मन)	मण्णमाणो	मण्णमाणा/मण्णमाणी	मण्णमाणं
जत (यत्)	जतमाणो	जतमाणा/जतमाणी	जतमाणं
जुज्झ (युध्)	जुज्झमाणो	जुज्झमाणा/जुज्झमाणी	जुज्झमाणं
लह	लहमाणो	लहमाणा/लहमाणी	लहमाणं
वंद	वंदमाणो	वंदमाणा/वंदमाणी	वंदमाणं
वत्त/वह	वत्तमाणो	वत्तमाणा/वत्तमाणी	वत्तमाणं
वड्ढ	वड्ढमाणो	वड्ढमाणा/वड्ढमाणी	वड्ढमाणं
विथ	विथमाणो	विथमाणा/विथमाणी	विथमाणं
सय (शी)	सयमाणो	सयमाणा/सयमाणी	सयमाणं
सेव	सेवमाणो	सेवमाणा/सेवमाणी	सेवमाणं
सह	सहमाणो	सहमाणा/सहमाणी	सहमाणं

उभयपदी पुर्लिंग धातुओं में न्त, माण प्रत्यय

कर	करंतो	करमाणो
छिंद	छिंदंतो	छिंदमाणो
जाण	जाणंतो	जाणमाणो
धाव	धावंतो	धावमाणो
णय	णयंतो	णयमाणो
पच	पचंतो	पचमाणो
लिह	लिहंतो	लिहमाणो
वह	वहंतो	वहमाणो
दुह	दुहंतो	दुहमाणो
तण	तणंतो	तणमाणो
दह	दहंतो	दहमाणो

वाक्य प्रयोग

एगे पवयमाणा = कोई कहते हुए । लज्जमाणा पुढो पास = लज्जित होते हुए देख । सत्थं समारंभमाणे = शस्त्र समारम्भ करते हुए । सत्थ समारंभमाणे समणुजाणति = शस्त्र समारम्भ करते हुए अनुमोदन करता है । आरंभमाणा विणयं वदंति = आरंभ करते हुए विनय का उपदेश करते हैं । से अबुज्झमाणे हतो = वह अबुद्ध होता हुआ दुःखी है । एगं विगिंचमाणे पुढो विगिंचति पुढो विगिंचमाणे एगं विगिंचति = एक को जीतने वाला दूसरे को जीतता है, जो दूसरे को जीतने वाला है, वह एक को जीतता है । संसार पडिवण्णाणं संबुज्झमाणाणं = संसार प्रतिपन्न/स्थित सम्यक् बोध वालों के लिए । इंदिएहिं गिलायंतो समियं साहरे मुणी = इन्द्रियों से ग्लान करते हुए मुनि समत्व को धारण करते हैं । परिक्कमे परिकिलंते = अदुवा चिट्ठे अहायते = बैठे हुए थक जाने पर अथवा थक जाने पर बैठ जाए ।

● प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

रुदंती चंदणा अत्थ चिट्ठति । सा वीरं झायमाणा हवति । पंथपेही चरे चतमाणे । एस विधि अणुक्कंतो। अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा लुब्भे णं कुप्पह । पाणाइं अकुव्वमाणो सोयति । सं कमसो अणुणंतं णिमंतयंतं च । परितप्पमाणं लालप्पमाणं सतत्तं । ओसज्झमाणा परिरक्खियंता तं नेव भुज्जो वि ममायरामो । फाना फुरंतो असमंजसं ।

(ख) भूतकालिक कृदंत – 'त' 'य'

(1) भूतकाल कृदंत में 'त' (क्त) प्रत्यय लगता है । 'स' प्रत्यय सकर्मक धातुओं में कर्मवाच्य के लिए होता है । मए कज्जाणि किते/कडे ।

(2) अकर्मक धातुणों में 'त' प्रत्यय जुड़ने पर विशेषण नहीं होता उससे बना हुआ शब्द नपुंसकलिंग में ही होता है । यथा – जयनामो जिणक्खातं पत्तो = जय ने जिनेन्द्र दीक्षा प्राप्त की ।

(3) अकर्मक धातुओं में भाववाच्य होता है । भाववाच्य में कर्ताकारक में तृतीया विभक्ति होती है और कर्म का अभाव होता है । यथा- तुमं भूतो = तू हुआ (कर्तृवाच्य) तुए भूतो = तेरे द्वारा हुआ ॥

धातु	त	व
अधि + इ	अधीतो	अधीतवं / अधीतवंतो
अणविस	अणविसिते	अणुविसितवं, अणविसंतो
अच्च	अच्चिते	अच्चितवं
अस	भूते	भूतवं
आकण्ण	आकण्णिते	आकिण्णतं
आप	अत्ते	अत्तवं
आरंभ	आरंभे / आरद्धे	आरंभवं / आरद्धवं
आरुढ	आरुढे	आरूढवं
आ + लंब	आलंबिते	आलंबितवं
इक्ख	इक्खिते	इक्खितवं

'तं' प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल या समाप्ति अर्थ में किया जाता है ।

वाक्य प्रयोग

अहं पढिते = मैंने पढ़ा । केवली वूया = केवली ने कहा । अकडं नो कडे = अकृत/कुकृत्य को नहीं करे । अप्पा हु खलु दुद्दमो = आत्मा ही दुर्दम है । आउक्खए चुया = आयुक्षय से च्युत हुए । हत्थगया इमे कामा = ये काम हस्तगत हैं । महावीरेण देसितं = महावीर के द्वारा कहा गया ।

भूत कृदन्त के भेद

सामान्यभूत कृदंत – गते, हसिते, चलिते, हसिते आदि ।

प्रेरणार्थक कृदंत – क्रिया में आवि, आवे आदि प्रेरणासूचक प्रत्यय से प्रेरणार्थक कृदंत बनते हैं । यथा – पुढविसत्थं समारंभावेति = समारंभ – सम + आरंभ + आवे + ति = समारंभवेति = समारंभ करवाता है ।

भण	भणावि/भणावेतं	कारिवितं/कारिवेतं	मुणावितं/मुणावेतं
हस	हसावि/हसावेतं	हसावितं/हसिवेतं	मुणावितं/सुणावेतं

अनियमितभूत कृदन्त – जिन कृदन्तों में नियम न लगकर सहज रूप में प्रयुक्त हो जाते हैं वे अनियमित कृदंत हैं । यथा –

सुयं/सुतं मे आउसं । आयुष्मन् मैंने सुना । णो णातं भवति = ज्ञान नहीं है । सव्वातो अणुदिसातो जो आगतो = जो सभी दिशाओं से आया है । भगवता परिण्णा पवेदिता = भगवन ने परिज्ञा कही । तिविधा इड्ढी पण्णत्ता = तीन प्रकार की ऋद्धियां प्रज्ञप्त हैं । सरट्ठाणा विद्दायिता = स्वर स्थान कहे गए ।

● निम्न प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

भगवता महावीरेणं कासवेणं पवेदिता । समणो किह जानो ।

सव्वं विलवियं गीयं सव्वं णट्टं विड्वंवियं ।

सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥ उत्त 13/16 ॥

कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय ! विचिंतिया ।

तेसिं फलविवागेण विप्पओगमुवागआ ॥ उत्त 13/8 ॥

सच्च-सोयप्पगडा कम्मां मए पुरा कडा ।

ते अज्ज परिभुंजामो, किं तु चित्ते वि से तहा ॥ उत्त. 13/9 ॥

गलेहिं मगरजालेहिं मच्छो वा अवसो अहं ।

उल्लिओ फालिओ गहिओ मारिओ अ अणंतसो ॥ उत्त. 19/15 ॥

कुहाड – फरसुमाईहिं वड्ढईहिं दुमो विव ।

कुट्टिओ फालिओ छिन्नो तच्छिओ य अणंतसो ॥ 9/67 ॥

● याद कीजिए –

गया = गए, कडं = किया, पणट्ठं = नष्ट हुआ, ठितं = स्थित हुआ, हतं = मारा गया । अक्खातं = कहा गया । छिण्णो = तोड़ा, जिए = जीना । रिए = विचरण किया ।

(ग) भविष्यत् कृदंत

चर + इस्स + न्त = चरिस्संतो, चर + इस्स + माण = चरिस्समाणो । (पुं.)

भण + इस्स + न्त = भणिस्संते, भण + इस्स + माण = भणिस्समाणे । (पुं.)

चिंत + इस्स + न्त = चिंतिस्संतो, चिंत + इस्स + माण = चिंतिस्समाणी (स्त्री)

(घ) पूर्वकालिक कृदन्त (सम्बन्ध कृदन्त)

तूण/तूणं (क्त्वा)

पूर्वकालिक कृदन्त (कर या करके) का अर्थ व्यक्त करने के लिए तूण/तूणं, दूण, दूणं [illegible] तुं/उं आदि प्रत्यय लगाए जाते हैं ।

तूण = इस प्रत्यय से पूर्व क्रिया में 'अ' का 'इ' या 'अ' का 'ए' भी हो जाता है ।

भण + तूण = भणितूण/भणेतूण, भणितूणं/भणेतूणं, भणिऊण/भणेऊण भणिऊणं/भणेऊणं

अन्य प्रत्यय –

म्म – णिसम्म (उ. सू. 75)

च्च आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा ।

मोच्चा नेआउयं मग्गं वहवे परिभस्सइ ॥ (उत्त. 3/9)

च्चा किच्चा, सोच्चा अहं गच्छामि । ते सोच्चा उवएसंती ।

त्ता – गेणिहत्ता, करित्ता, जयित्ता, मुणेत्ता ।

त्तु – गेण्हित्तु करित्तु, जयत्तु. मुणेत्तु ।

आय – धम्ममादाय, गेहिं परिण्णाय (आ चा 6/2/184) उट्ठाय (उ. सू. प. 75)

आत धम्ममादात, परिण्णात

(च) निमित्तार्थक कृदन्त (हेत्वर्थ कृदन्त) – उं तुं (अर्धमागधी) दुं (शौरसेनी)

सो भणिउं आगच्छउ – वह कहने के लिए आता है । ते अज्झेउं गच्छंति = वे/वे दोनों/वे सब अध्ययन के लिए जाते हैं ।

तुमं गहिउं पढसि = तुम ग्रहण करने के लिए पढ़ते हो । तुम्हें मुणेउं गच्छह = तुम सब समझने के लिए जाते हो ।

अहं सुणिउं आगच्छामि = मैं सुनने के लिए आता हूं । अम्हे णच्चिउं गच्छामो = हम सब नाचने के लिए जाते हैं ।

(ज) विध्यर्थ कृदन्त – (तव्व, अव्व, यव्व) तव्व (अर्धमागधी) दव्व (शौरसेनी)

गंतव्वं चिट्ठियव्वं णिसीयव्वं तुयद्दियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं संजमियव्वं पमाएयव्वं । (उत्तराध्ययन पृ. 74)

पाठ – दश

सर्वनाम विचार

● **सर्वनाम** – जो संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त किए जाते हैं । जैसे सो गच्छइ, ते गच्छंति । सो समणो उवएसइ । सर्वनाम में पुर्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग तीनों ही लिंग होते हैं ।

● **सर्वनाम के भेद**

→ (1) **पुरुषवाचक**
(क) उत्तम पुरुष (First Person) – अहं गच्छामि, अम्हे गच्छाओ ।
(ख) मध्यम पुरुष (Second Person) – तुम गच्छसि, तुम्हे गच्छित्था / गच्छह ।
(ग) अन्य पुरुष (Third Person) – सो गच्छइ, ते गच्छंति ।

→ (2) **निश्चयवाचक** (Demonstrative Pronoun) एसो गच्छइ – ये जाते हैं । एए गच्छंति – ये जाते हैं । सो लिहइ – वह लिखता है । ते लिहंति – वे लिखते हैं । इमो भणइ – यह कहता है। इसे भणंति – ये कहते हैं ।

→ (3) **अनिश्चयवाचक** (Indefinite Pronoun) किंचि अत्थि – कोई है । सव्वे वाला – सभी बालक। सव्वेहि = सभी के द्वारा ।

→ (4) **सम्बन्ध वाचक** (Relative Pronoun) जो गच्छइ, जे गच्छंति ।

→ (5) **प्रश्नवाचक** (Interrogative Pronoun) को गच्छइ ? के गच्छन्ति ?

पुर्लिग सर्वनाम 'सव्व'

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वो	सव्वे
द्वितीया	सव्वं	सव्वे, सव्वा
तृतीया	सव्वेण	सव्वेहि, सव्वेहिं
चतुर्थी	सव्वस्स	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वाओ	सव्वत्तो सव्वेहि, सव्वेहिंतो
षष्ठी	सव्वस्स	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं
सप्तमी	सव्वम्मि, सव्वस्सिं, सव्वे	सव्वेसु, सव्वेसुं ।

● **नियम** – 'सव्व' पुर्लिग सर्वनाम की तरह क, ज, त, उहय, इम, आदि के रूप भी चलते हैं ।

नपुंसकलिंग सर्वनाम सव्व

प्रथमा	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाणिं, सव्वाइं
द्वितीया	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाणिं, सव्वाइं

● **नियम** – शेष तृतीया से सप्तमी तक पुलिंग की तरह रूप बनेंगे ।

स्त्रीलिंग 'सव्वा'

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा	सव्वाओ
द्वितीया	सव्वं	सव्वाओ, सव्वाउ
तृतीया	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाहि, सव्वाहिं
चतुर्थी	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाण, सव्वाणं
पंचमी	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाहि, सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो
षष्ठी	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वाण, सव्वाणं
सप्तमी	सव्वाए, सव्वाइ	सव्वासु, सव्वासुं ।

'अम्ह' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहं, हं	अम्हे
द्वितीया	मं, ममं	अम्हे
तृतीया	मए, मया	अम्हेहि, अम्हेहिंतो
चतुर्थी	मम, मम्ह, अम्ह, मे, महं	अम्हाण, अम्हाणं
पंचमी	ममत्तो, ममाओ	ममत्तो, ममाओ
षष्ठी	मम, मम्म, मम्ह, मे, महं	अम्हाण, अम्हाणं
सप्तमी	ममंहि मम्हि	अम्हेसु, अम्हेसुं ।

'तुम्ह' सर्वनाम शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुमं	तुम्हे
द्वितीया	तुम, तुमं, तुं	तुम्हे
तृतीया	तए, तया	तुम्हेहि, तुम्हेहिं
चतुर्थी	तुमं, तुहं, तुम्म, तुम्ह	तुम्हाण, तुम्हाणं
पंचमी	तुमत्तो, तुमाओ	तुमाहि, तुम्हाहिंतो ।
षष्ठी	तुमं, तुहं, तुम्ह, तुम्ह	तुम्हाण, तुम्हाणं
सप्तमी	तुमंहि, तुम्हिं	तुम्हेसु, तुम्हेसुं ।

हिन्दी कीजिए

सा पहावई देवी, तीसे पभावईए देवीए पुत्तो आसि । ते साली णवएसु घडएसु पक्खिवंति । ते साली ववंति । तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स चउत्था पुत्ता, चत्तारि सुण्हाओ होत्था । चउण्हं सुण्हाणं आमंतेइ सो । तुमं रमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा । सा उज्झिया एममट्ठं पडिसुणेइ । मम हत्थाओ गेण्हइ । ताओ सुण्हाओ संतुट्ठा । एए पंच सालिअक्खए गेण्हह । अम्हं समणो समणी वा भवंति । अम्हाणं चिंतेज्जयव्वं जो उत्तमो धम्मो सा अम्हाणं अत्थि । अम्हतो आगाराओ रहिओ महव्वई जाया । जे महव्वई हवंति, ते सव्वओ समभावं धारेंति ।

प्राकृत कीजिए

उस समय वाराणसी नगरी थी । उसके बाहर एक सुन्दर तालाब था, जिसमें निर्मल जल और सुगंधित पुण्डरीक खिले थे । वे रमणीय थे । उन्हें देखकर मन प्रसन्न होता था । वे सहस्त्र केसर युक्त थे । वहाँ मच्छ, मगर, गाह जाति के जलचर जीव थे । वे उस सरोवर में सुखपूर्वक विचरण करते थे । उसमें रहते हैं । उसके समीप मालुकाकच्छ था । उसमें दो पापी सियाल रहते थे । वे पापाचरण करते थे । वे मांस चाहते थे । वे दोनों मांस की गवेषण करते हुए वहाँ घूमते थे । अन्य किसी दिन सन्ध्या हो जाने पर वे दोनों वहाँ आए जहाँ दो कूर्मक थे । वे दोनों वहाँ बैठ जाते हैं । कूर्मक किनारे आते हैं । वे आहार की खोज करते हैं तथा आहार की खोज करते हुए मालुकाकच्छ से बाहर निकलते हैं । वे उस किनारे के चारों ओर घूमते हैं ।

पापी सियाल वहाँ पर स्थित थे । वे दोनों उन्हें देखते हैं । वे शीघ्र भागते हैं । कूर्मक/कछुआ डर जाते हैं । उसके भय से कांपते हैं । फिर वे दोनों हाथ-पैर और ग्रीवा को शरीर में छिपा लेते हैं तथा वहाँ ही मौन स्थित हो जाते हैं । सियाल उन्हें चलाते हैं, घुमाते हैं, हटाते हैं, स्पर्श करते हैं, घसीटते हैं, क्षुभित करते हैं, नखों से फाड़ते हैं, तीक्ष्ण दांतों से चीथते हैं । उन कूर्मकों के शरीर को बाधा पहुँचाते है, फिर भी निश्चल स्थित रहते हैं ।

क्रियाओं के अर्थ –

असि - थी, फुल्लिआ - खिले, दंसिऊण = देखकर, विहरंति - विचरण करते हैं । णिवसंति = रहते हैं । इच्छंति = चाहते हैं । गवेसंति = खोजते हैं । भएंति = डरते हैं । वेवंति = कांपते हैं । उव्वत्तेंति = घुमाते हैं, आसारेंति = हटाते हैं । घट्टेंति = घसीटते हैं । खोभेंति = क्षुभित करते हैं । अक्खोडेंति - फाड़ते हैं । आलुंपंति = चीथते हैं । फंसेंति = स्पर्श करते हैं ।

पाठ – ग्यारह

विशेषण

जो संज्ञा शब्दों की विशेषता व्यक्त करते हैं, वे विशेषण हैं । 'विसेसयणं विसेएणं' उत्तमो बालो, तिरयणं ।

विशेषण के भेद

(1) संख्यावाचक (Numeral Adjective) – संख्यावाचक विशेषण से विशेष्य की संख्या का बोध होता है । एगो अप्पा, दुवे जीवा ।

(क) निश्चय संख्यावाचक (Definite numeral Adjective) – जिससे निश्चित संख्या का बोध होता है । जैसे – एगो धम्मो, दुवे बाला, ति-रयणं । इस निश्चित संख्यावाचक के भी निम्न भेद हैं –

(अ) **गणनावाचक** – एक से संख्यात, असंख्यात तक । एगो सीलो, दो अणुजा, ति-णिंदगो, चउ-तित्थो, पंचसमिई, छव्वाणि दव्वाणि, सत्त-पयत्था, अट्ठाणि कम्माणि, नावा पयत्था, दहधम्मो, एगारहपडिमा, बारहाणुवेक्खा आई ।

(आ) **क्रमवाचक** – पढमा विहत्ती, वीआ कक्खा, तइया सेणी, चउत्थी गई, पंचमंठाणं छट्ठंसो, सत्तम-सत्ता, अट्ठम-परिणामो । णवम बंहचेरो, दसम अपरिग्गहो ।

(इ) **आवृत्तिवाचक** – तावसा दुगुणं झाणं कुव्वंति । अस्सिं समए चउगुणी संखा ।

(ई) **समुदायवाचक** – दो वि मासा अत्थि = दो ही मास हैं । तिण्णि बाला = तीनों बालिकाएं ।

(उ) **विभाग वाचक** – सव्वे जीवा वि इच्छंति । अस्स संघस्स सव्वे समणा गुणी अत्थि । पइदिणं पडिक्कमणं कुव्वेंति समणा । गेही पइदिणं वावारं करेंति ।

(ख) अनिश्चय संख्यावाचक – जिससे किसी संख्या का ज्ञान न हो । यथा – अप्प बाला अत्थि-थोड़े बालक हैं । किंचण खणं तिट्ठंति समणा – कुछ क्षण श्रमण ठहरते हैं ।

किंचि – कुछ – किंचि समणा, किंचि समणी ।

केई – केई भासंति फुडं = कुछ स्पष्ट करते हैं ।

परोप्परं/अण्णुण्णं – जीवाणं परोप्परं उवयारं = एक दूसरे जीवों का उपकार

बहू – बहूणि कम्माणि अत्थि – बहुत कर्म हैं ।

अणेग – अणेग गुणा अत्थि – अनेक गुण हैं ।

कइवय – कइवया गेही वयाणं पालेंति = कितने ही गृहस्थ व्रतों का पालन करते हैं।

(2) परिणाम वाचक (Adjective of Quantity) जिससे माप, तोल, प्रमाण आदि का बोध होता है ।

(अ) तोल –

(1) दस ग्राम-सुवण्ण-कंगणाणि = दस ग्राम के सुवर्ण कंगन ।

(2) एगकिलोगामस्स मिट्ठण्णं = एक किलोग्राम की मिठाई ।

(3) छट्ठं को धण्णं = छटांक धान्य ।

(4) गुंजा रत्तिगाए तुलेंति = वे रत्ती गुंजा से तोलते हैं ।

(आ) माप – तिण्णिहस्थपमाणं दंडं = तीन हाथ प्रमाण दण्ड ।

पंण्णासमिलिगाओ तेलो = पचास मिलिग्राम तैल ।

एग लीटर पमाण दुद्धं = एक लीटर दूध ।

(इ) मुल्ल – (मूल्यवाचक) एगमालाए मुल्लो पणविंस रुप्पो = एक माला का मूल्य पच्चीस रुपया।

पंच-पण्ण किंचि णत्थि - पांच पैसे का कुछ नहीं ।

सत्त सत्तर-पण्णस्स पोत्थगं - सात रुपये 70 पैसे की पुस्तक है ।

अट्ठाणगा - अठन्नी, चउण्णी - चार आना, आण - आना ।

दिण्णासे - दीनार सुवर्ण मुद्रा, वराडिगा - कौड़ी, रुप्पगो = रुपया ।

पण्णो = पैसा ।

(ई) समय वाचक – (1) अहोरत्तो - रात-दिन, कला कलेंति - मिनट तक कल शब्द करते हैं।

खणो णो संजाइ = क्षण / छिन नहीं व्यतीत होता है । पक्खो हवेज्जा वासो ण जाएज्जा

एक पक्ष / पखवाड़ा हो गया, पर वर्षा नहीं हुई । पलं सेजाइ = पल बीत रहा है ।

एगो पहरो जाओ सो ण आ गओ - एक प्रहर हो गया, पर वह नहीं आया ।

विकला विकला जाए = सेकंड भी समाप्त हो गए । मास खमणं किच्चा अप्पं [illegible] = मास खमण करके आत्मा को धन्य करता है । घंटाए वाइत्तेणं छत्ता कक्खाए आगच्छंति = घंटा [illegible] छात्र कक्षा में आते हैं । वस्सं पंचं वालो जाओ - बालक पांच वर्ष का हो गया । [illegible] पच्छा परिणया जाया । बालिकाओं का अठारह वर्ष बाद परिणय हो ।

(3) गुण वाचक (Adjective of Quality) जिससे किसी व्यक्ति के गुण-दोषादि का [illegible] जाता है वहां गुणवाचक विशेषण होता है । इससे जाति, क्रिया, व्यक्ति या वस्तु की [illegible] है ।

जं लिंगं जं वयणं या अ विहत्ति-विसेसस्स ।

तं लिंगं तं वयणं सेव विहत्ति-विसेणस्सावि ॥

(अ) गुण – उत्तमो वालो = उत्तम बालक । सुसीला बालिगा = सुशील बालिका, सोहणं रुवं = शोभन रूप । सेट्ठो जणो = उत्तम मनुष्य, सुही पाणी = सुखी प्राणी ।

(आ) दोष – दुट्ठो जणो = दुष्ट मनुष्य, कुरूवा इत्थी = कुरुप स्त्री, अधमो पुरिसो = अधम पुरुष ।

(इ) रंग – संखो धवलो होइ = शंख धवल होता है । किण्हाणि केसाणि = कृष्ण बाल हैं । सुवण्णो पीय-वणस्स होइ = सुवर्ण पीला है । आगासो णीलो = आकाश नीला है । हरिय-वणपफई = हरित वनस्पति। रत्तो अरुणो = अरुण लाल है ।

(ई) काल – पज्जुपण्णे असंती अत्थि - वर्तमानकाल में अशान्ति है । मज्झ कालम्मि आइरिय हेमचंदेण पाइय-वागरणं लिहियो = मध्यकाल में आचार्य हेमचंद्र ने प्राकृत-व्याकरण लिखी । पुरम्मि कालम्मि चउवीसा तित्थयरा - प्राचीनकाल में चौबीस तीर्थंकर हुए । तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवया महावीरेण पवेइया ।

(उ) देश – भरहखेत्ते वाराणसी णयरी = भरतक्षेत्र में वाराणसी नगरी ।

अमेरिगाए देसम्मि डालरा पासिद्धा = अमेरिका देश में डालर प्रसिद्ध है ।

वइसालीए खत्तिग-कुण्डगामे तिसलाए एगं पुत्तं दिण्णा = वैशाली क्षत्रिय कुंडग्राम में त्रिशला ने एक पुत्र को जन्म दिया ।

(ऊ) दिशा – पच्छिम भागम्मि मेहा गज्जंति = पश्चिम भाग में मेघ गर्ज रहे हैं ।

दाहिण-खेत्तम्मि बाहुबलिस्स विसालपडिमा = दक्षिण क्षेत्र में बाहुबली की विशाल प्रतिमा है ।

(ए) आकार – विथिण्ण-वक्खस्थल-जुत्तो वीरो = चौड़े वक्षस्थल युक्त वीर हैं ।

तिहुवणस्स आयारो मणुजवं अत्थि = त्रिभुवन का आकार मनुष्य की तरह है ।

(ऐ) दशा – सो दुव्वलो णरो चिट्ठो = वह दुर्बल नर बैठा ।

जो पज्जावरणं रक्खइ सो णिरोगी होइ = जो पर्यावरण की रक्षा करता है, वह निरोग होता है ।

जो सच्छो होइ हिट्ठ-पुट्ठो वि = जो स्वस्थ होता है, वह हृष्ट-पुष्ट भी होता है ।

(ओ) स्थान – मंच-उच्च ठाणम्मि समणा चिट्ठंति = मंच के ऊपरी स्थान पर श्रमण बैठते हैं ।

कूडा उण्णयस्स राजंति = उन्नत पर्वत के कूट सुशोभित होते हैं ।

बहिठाणे सीयो - बाहिरी स्थान पर शीत है । अब्भिंतर - तवा छच्चेव = आभ्यन्तर तप छह है । बहिस्तवेण कायथिरो = बाह्य तप से काय स्थिर होता है ।

(4) तुलनात्मक विशेषण (Degrees of Comparison)

वस्तुओं के गुण-दोष का पारस्परिक मिलान का नाम तुलना है। जैसे - सो महत्तरो अत्थि = वह महत्तर है। वीरेण वीरमतो महावीरो = वीर से वीरतम महावीर हैं। मजिंदो थूलतमो अत्थि = गजेन्द्र स्थूलतम है। सो पेयसो अत्थि = वह अधिक प्रिय है।

साहू	साहुत्तरो/साहुयरो	साहुतमो
महं	महत्तरो	महतमो
चउरो	चउरत्तरो/चउरयरो	चउरतमो
सुक्को	सुक्कत्तरो/सुक्कयरो	सुक्कतमो
लहु	लहुयरो	लहुतमो
पडु	पडुयसो	पडिट्ठो
बहू	भूयसो	भूइट्ठो

● तुलनात्मक अवस्थाएं

(अ)	**मूलावस्था**	(Positive Degree)	देवो लहू अत्थि।
(आ)	**उत्तरावस्था**	(Comparative Degree)	देवो इंदेण लहू अत्थि।
(इ)	**उत्तमावस्था**	(Supuralative Degree)	सव्वेसिं पियो लहू वालो।

● प्राकृत कीजिए -

श्रमण पंच महाव्रत धारण करते हैं, वे तीन गुप्तियों से गुप्त होते हैं। वे मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग से रहित विचरण करते हैं। वे गुणस्थान में प्रवेश करते हैं। वे व्रतियों से अधिक श्रेष्ठ हैं। वे निर्ग्रन्थ धर्म का पालन करते हैं। वे उत्तम धर्म मार्ग पर चलते हैं। उन्होंने काय क्लेश का विचार न करते हुए तप किया। उन्हें मोक्षमार्ग प्रिय हैं। समितियां उनकी चर्या है। उनकी अनुप्रेक्षात्मक दृष्टि है। वे शून्य स्थान पर रहते हैं।

● निम्न विशेषण शब्दों का प्रयोग कीजिए -

अंधो (अन्धः), अरिहा (अर्हा-योग्य), इट्ठो (इष्ट-प्रिय), उच्छण्णो (उत्सन्न-नष्ट), संपण्णो (सम्पन्न-समाप्त), उज्जु (ऋजु - सरल), एत्तिअ/इत्तिअ (इयत्-इतना), एरिसी (ईद्दशी - इस तरह की), कसिणो (कृष्ण-काला, पूर्ण), खर (खर-कठोर), खीण (क्षीण-नाश), णिच्चल (निश्चल), णिल्लज्जो (निर्लज्ज-लज्जा रहित), दुक्करो (दुष्कर), मुक्खो (मूर्ख), जेट्ठो (ज्येष्ठ-वड़ा)

● संज्ञा शब्द या सर्वनाम के लिंगानुसार विशेषण का प्रयोग किया जाता है। यथा - (पुं.) धवलो मेहो (स्त्री.) धवला साटी (नपुं.) धवलं दुद्धं।

पाठ – बारह

वाच्य विचार

● वाच्य सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं के कारण तीन है –

(1) **कर्तृवाच्य** (Active Voice) – कर्तानुसार प्रयोग – सो महावीरो होइ, सा लेहं लिहइ ।

(2) **कर्मवाच्य** (Passive Voice) – जिसमें कर्म की प्रधानता होती है । यथा – तेणं पढिज्जइ ।

(3) **भाववाच्य** (Impersonal Voice) – भाव की प्रधानता । यथा – तेणं हसिज्जइ ।

● **सामान्य कर्तृवाच्य** (सकर्मक क्रिया)	कर्मवाच्य
सो पोत्थअं पढइ = वह पुस्तक पढ़ता है ।	तेण पोत्थअं पढिज्जइ = उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है ।
तुमं सत्थं पढइ = तू शास्त्र पढ़ता है ।	तुए सत्थं पढिज्जसि = तुम्हारे द्वारा शास्त्र पढ़ा जाता है ।
अहं पवयणं देमि = मैं प्रवचन देता हूं ।	मए पवयणं दोइज्ज = मेरे द्वारा प्रवचन दिया जाता है ।

● **सामान्य कर्तृवाच्य** (अकर्मक क्रिया)	भाववाच्य
सो जुज्झइ = वह युद्ध करता है ।	तेण जुज्झिज्जइ = उसके द्वारा युद्ध किया जाता है ।
तुमं हससि = तू हँसता है ।	तुए हसिज्जइ = तेरे द्वारा हँसा जाता है ।
अहं सयामि = मैं सोता हूं ।	मए सइज्जइ = मेरे द्वारा सोया जाता है ।

कर्मणि रूप

● **'मुण' – समझना**

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुणीअइ, मुणीअए मुणिज्जइ, मुणिज्जए	मुणीअंति, मुणीअंते मुणिज्जंति, मुणिज्जंते
मध्यम पुरुष	मुणअसि, मुणीअसे मुणिज्जसि, मुणिज्जसे	मुणीअह, मुणीइत्था मुणिज्जह, मुणिज्जित्था
उत्तम पुरुष	मुणीआमि, मुणिज्जामि	मुणीआमो, मुणिज्जामि

- **भविष्यत् काल –**

प्रथम पुरुष	मुणीहिइ	मुणीहिंति
मध्यम पुरुष	मुणिज्जिहिसि	मुणिज्जिहिह, मुणिज्जिहित्था
उत्तम पुरुष	मुणिज्जिहिमि	मुणिज्जिहिमो

- **विधि/आज्ञार्थक**

प्रथम पुरुष	मुणीअउ, मुणिज्जउ	मुणीअंतु, मुणिज्जंतु
मध्यम पुरुष	मुणीअहि, मुणिज्जहि	मुणीअह, मुणिज्जह
उत्तम पुरुष	मुणीआमु, मुणिज्जामु	मुणीआमो, मुणिज्जामो

पाठ – तेरह

पर्यायवाची शब्द

पज्जववाइ – सद्दा	पर्यायवाची शब्द (अनेकार्थी शब्द)
अंग (अङ्गः)	शरीर, देह, भाग, हिस्सा ।
अग्गि (अग्नि)	असाल, पावग, वण्हि, सिही, जाला, किसाणु ।
अक्ख (अक्ष)	इन्द्रिय, अप्पा, धुरी, आधार, आसय ।
अक्खि (अक्षि)	चक्खु, णयण, णेत्त, दिट्ठी, लोयण ।
अंधयार (अन्धकार)	तम, तिमिर, तमिस्स ।
असुर	दइच्च, दाणव, णिसायर, रयणीयर, रक्खस ।
अप्पा (आत्मा)	णाण, जीव, चेयंण, अलंक्करण ।
आगम	वचण, पवयण, णिरुवण, परुवणा, सुत्त, गंथ ।
आगास (आकाश)	णह, गगण, अंबर, अंतरिक्ख, खे, ठाण, अवगारा ।
इच्छा	अभिलाषा, कामणा, वंछा, मणोरह ।
इंद	सक्क, पुरंदर, सुरवइ, सुरिंद, देविंद, महवा ।
इत्थी (स्त्री.)	ललणा, कामणी, णारी, महिला, अबला ।
कमल	जलज, पंकज, पउम, अरविंद, उप्पल, सरोज, इंदीवर, पुण्डरीग, णीरज, राजीव।
किरण	कर, मयूह, मरीई, जोइ, पहा, कंती ।
कोयल	कोइल, पिग, सारिगा, कुहुकिणी, वणप्पिया ।
गणेस	गणणायग, गणहर, गणवइ, लंबुदर, विणायग ।
गंगा	देवण, सुरणई, भागीरथी, मंदागिणी, तिपहगा ।
उण्ह	ताव, आतव, गिम्ह, तेअ ।
गिह (गृह)	भवण, आलय, णिवास, धाम, कुंज, णिर्मयण, आवास ।
चंद	इंदु, सुहायर, शसि, तारावई, हिमांशु ।
जल	णीर, उदग, तोय, अंबु, अमिय (अमृत), वारि, खीर ।

णई	सरिआ, तरंगिणी, तडिणी, जल लोलणी, जलमाला, खीरवाहिणी, णीरधरी ।
धणु	चाव, कोयंड, सरासण ।
पवण	वाउ, समीर, वाय, अणिल ।
भज्जा (भार्या)	वामा, सहधम्मिणी, अर्द्धांगिणी ।
पव्वय (पर्वत)	गिरि, तेल, जग, धरणीहर, धराहर, महीधर, भूधर ।
पक्खी (पक्षी)	खेपर, णहपर, विहंगम, खग ।
पुप्फ (पुष्प)	सुमण, कुसुम, पसूण ।
पुत्त (पुत्र)	सुय, तणय, अप्पज, कुमार ।
पुत्ती (पुत्री)	सुया, तणया, अप्पजा, कुमारी, कण्णा, दुहिया ।
बाण	सर, सिलीमुर, विसिह ।
माया (माता)	जणणी, अम्मा, पसूइणी ।
मेह (मेघ)	जलहर, पयोहर, पयोद, जलद ।
रुक्ख (वृक्ष)	दुम, विडव, तरु, महीरुह, साही ।
समुद्द (समुद्र)	सिंधु, रयणाया, उयहि, खीरहि, जलहि, पयोहि, सायर, णीरहि ।
समूह	दह, ओह, गुण, पुंज ।
सत्तू (शत्रु)	अरि, रिउ, बइरी, विवक्सी, अराई ।
सज्ज (सूर्य)	दिणयर, रवि, भाणु, आइच्च, पहायर, दिणेस, दिवायर, मत्तंड ।
हस्त	कर, पाणि ।
हत्थि (हस्ति)	करि, गज, कुंजर, णाग, वारण, मातंग ।
सिंह	केसरी, मिगराय, णगिंद, हरि, मिगवइ, सीह ।

पाठ – चौदह

संधि-विचार

● **संधि** – दो वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं ।

● **संधि के भेद** – (क) स्वर-संधि (ख) व्यञ्जन-संधि (ग) अव्यय संधि ।

(क) स्वर-संधि – स्वर संधि के निम्न भेद हैं –

(1) दीर्घ संधि (2) गुण संधि (3) ह्रस्व-दीर्घ संधि (4) संधि-निषेध (5) स्वर लोप संधि।

(1) दीर्घ संधि – समान स्वर होने पर दीर्घ संधि होती है ।

समानानां तन दीर्घः (1/2/1)

यथा – अ + आ = अ = उण्ह + अभितत्तो = उण्हाभितत्तो

अ + आ = आ = विसम + आयवो + विसमायवो

आ + अ = आ = रमा + अहीणो = रमाहीणो

आ + आ = आ = विज्जा + आलयं = विज्जालयं

इ + इ = ई = मुणि + इणो = मुणीणो

इ + ई = ई = मुणि + ईसरो = मुणीसरो

ई + इ = ई = लच्छी + इन्दो = लच्छीन्दो

ई + ई = ई = लच्छी + ईसरो = लच्छीसरो

उ + उ = ऊ = साहु + उदयं = साहूदयं

उ + ऊ = ऊ = धेणु + ऊसवो = धेणूसवो

ऊ + उ = ऊ = बहू + ऊअरं = बहूअरं

ऊ + उ = ऊ = बहू + ऊसवो = बहूसवो

● **निम्न संधि युक्त वाक्यों का विग्रह करिये** – जहाइण्णसमारुढें, जीवाजीवा, रमाहारो, निरामिसा, णिराणंदा, देवीड्ढी, रयणपुराहिवई, णदीन्दो, बहूढा, महूदयं, विरहाणलतवियडी, परीसरो ।

(2) गुण संधि – अ या आ से पर इ या उ वर्ण हो तो अ + इ, ई = ए, आ + उ, ऊ = ओ गुण हो जाता है । (अ – वर्णस्ये – वर्णादिनैदोदरत् 1/2/6)

यथा - अ + इ = ए = वास + इसी = वासेणी

आ + इ = ए = रामा + इअरो = रामेअरो

अ + ई + ए = वासर + ईसरो = वासरेसरो

आ + ई = ए = तहा + ईव = तहेव

अ + उ = ओ = तव + उअरं = तवोअरं

आ + उ = ओ = रमा + उवचिअं = रमोवचिअं

आ + ऊ = ओ = विज्जुला + ऊसासा = विज्जुलोसासा

अ + ऊ = ओ = सास + ऊसासा = सासोसासा

● निम्न संधियों का विग्रह कीजिए

दिसेस, पाअडोरू, महेसि, राएणि, णरेस, सुरेस, सुज्जोदय, पुव्वोदय, णाणोदय, णाणेस, जहेव, समणोवासग, अणासवा, जिणिंदोवदेस, जस्सेह, कहेह, पुण्णोदर, रसावेक्ख, जुत्ताहार, णिरावेक्ख, सुहोवजुत्त, असुहोवओग, साणुकंपा, पज्जाओत्तीह, अहोज्जमाण, दव्वाभावं, तित्थयसयरिय, णेव ।

(3) ह्रस्व–दीर्घ संधि – समासागत शब्दों में रहे हुए स्वर परस्पर ह्रस्व से दीर्घ, दीर्घ से ह्रस्व हो जाते हैं । (दीर्घ–ह्रस्वो मिथो वृतौ 1/4) यथा -

(क) ह्रस्व का दीर्घ –

अन्त + वेई = अन्तावेई

सत्त + वीसा = सत्तावीसा

पइ + हरं = पईहरं, पइहरं

वारि + मई = वारीमई, वारिमई

भुअ + यंत = भुआयंत, भुअयंत

वेणु + वणं = वेणूवणं, वेणुवणं

(ख) दीर्घ का ह्रस्व –

जुबू + दीव = जंबुदीव

नई + सोत्तं = नइसोत्तं, नईसोत्तं

मणा + सिला = मणसिल, मणासिला

गोरी + हरं = गोरिहरं, गोरीहरं

लच्छी + पई = लच्छिपइ, लच्छीपई

सीया + मुह = सीयमुह, सीयामुह

पुहई + यल = पुहइयल, पुहईयल

बहू + मुह = बहुमुह, बहूमुह

● **निम्न संधियों का विग्रह कीजिए –**

जणणिसुय, णरवईउलं, जुबईहरं, महणयरं, सम्मादिट्ठी, दिणरयणिकरी, मालिनरिन्दस्स, अउज्झदरे, बहूउलं, वीवीहूसवो, सुयकेवलीभणिय, सुयकेवलिमिसिणो, केवलिगुण, मिच्छादिट्ठी ।

(4) संधि निषेध –

(1) 'इ' और 'उ' के बाद विजातीय स्वर होने पर संधि नहीं होती है । (न युवर्णस्यास्वे 1/6)
यथा – दणु + इंद = दणुइंद, पहावलि + अरुणो = पद्धावली अरुणो
न वेर – वग्गे वि अवयासो, बहु + अवऊढो = बहुअवऊढो

वि + अ = विअ, महु + इँ = महुइँ, माला + ए = मालाइ, माला + इ = मालाइ कयाइ अन्नया, फलाइ + एंति, हु एव, होइ आणंदो, महुअरि, वेसं होइ अमाहुणो, तिज्जाइ उद णं व थलाओ, वट्टइ आउसु, वंत इच्छति आवेउं, सो करिस्सइ उज्जोयं, जो न सज्जइ एएहिं

(2) 'ए' और 'ओ' के बाद विजातीय स्वर होने पर संधि नहींहोती है । (एदोतोः स्वरेः 1/7)
यथा – रुक्खादो + आअओ = रुक्खादो आअओ

वणे + अडइ = वणे अडइ, लच्छीए + आणंदो = लच्छीए आणंदो

देवीए + एत्थ = देवीए एत्थ, एओ + एत्थ = एओ एत्थ

अहो + अच्छरियं = अहो अच्छरियं

पडिणीए असंबुद्धे, एगो एगत्थिए सद्धिं, आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चे अकुए, न कोवए आयरियं, जो एवं पडिसंचिक्खे, अप्पडिरूवे अहाउयं, इमंमि लोए अदुवा परत्थ, उइ दुप्पूरए इमे आया, इत्थी विप्पजहे अणगारे, जे के इमे, सावए आसि वाणिए, जुईए, उत्तिमाए, गोयमो इणमब्बती, छिन्नो मे संसुओ इमो, संसारो अण्णवो वुत्तो

(3) उद्वृत्त स्वर का किसी स्वर के साथ संधि नहीं होती है ।(स्वरस्योद्वृत्ते 1/8)
उद्वृत्त स्वर से तात्पर्य है, व्यञ्जन के लोप होने पर अवशिष्ट बचे हुए स्वर ।

● यथा – निसा + अरो = निसाअरो, रयणी + अरो = रयणीअरो, बुद्ध + उत्तो = बुद्धउत्तो, सोरिय +उरम्मि = सोरियउरम्मि, तित्थ + अरो = तित्थयरो, दिवा + अरो = दिवाअरो, वणिय + उलम्मि = वणिय उलम्मि

(4) क्रिया पद के प्रत्यय इ, अंति आदि के बाद स्वर आने पर भी संधि नहीं होती है । (त्यादेः 1/9)

होइ + इह, पेच्च + इह = पेच्चइह, होइअसहुणो, करिस्सइ + उज्जोयं = करिस्सइ उज्जोयं

(5) स्वर लोप संधि – स्वर से परे स्वर हो तो शब्द के स्वर का प्रायः लोप हो जाता है । (लुक् 1/10)

यथा - तिअस + ईसो = तिअसीसो, नीसास + ऊसास = नीसासूसास

णर + इंदो = णरिंदो, महा + इंदो = महिंदो

दीह + आउया = दीहाउया, धम्म + इट्ठे = धम्मिट्ठे

अभिसेय + अत्थं = अभिसेयत्थं

पवणुद्धयपल्लवकरग्गो, जहिच्छियं, मणभिरामं, कुलगरवंसुप्पत्ती, पुरिग्गिमच्छी, परिओसुब्भिन्नरोगञ्चा, तस्सुत्तमे, आउ-वलुञ्छेह, अत्थेत्थ, नत्थेत्थ संदेहो, परवयणुल्लावी, तस्सुवरिं, इक्खागुकुलुब्भवो, भवणंतरनिलुक्को, निखयक्खा, तहेव, जोगुवओगा, दव्वगुणुप्पादग, विणिच्छओ, तेणिह

(ख) व्यञ्जन संधि – इस संधि का प्रयोग प्राकृत में नहीं है। परन्तु व्यञ्जनों का अनुनासिक आदि होने से कुछ प्रयोग देखे जा सकते हैं।

(1) 'अ' के बाद आए हुए संस्कृत विसर्ग के स्थान पर प्रायः 'ओ' हो जाता है। (अतो डो विसर्गस्स 1/37)

यथा - सर्वतः = सव्वओ, पुरतः = पुरओ, अन्तः = अन्तो, गणः = गणो, मार्गतः = मग्गओ, भवतः = भवओ, सन्तः = संतो, पुणः = पुणो, कुतः = कुदो, अतः = अओ

(2) पद के अंत में होने वाले 'म' का अनुस्वार होता है। (मोनुस्वारः 1/23)

वयणं, वणं, गिरिं

(3) 'म्' से परे स्वर रहने पर विकल्प रे, अनुस्वार होता है। उसभं + अजियं = उसभमजियं, धणमेय, एवमेव, सयमेव

(4) ङ, ञ, ण, न का अनुस्वार होता है। (1/25)

कंचुओ, लंछणं, छंमुहो, उक्कंठा, संझा, विंझो

(ग) अव्यय संधि

(1) पद से परे अपि के 'अ' लोप होता है।

यथा - केण + अवि = केणवि, कहं वि, तं वि, किं वि, रामं वि, धणं वि।

(2) पद से परे इति होने पर 'इति' के 'इ' का लोप हो जाता है और स्वर से परे 'ति' का द्वित्व 'त्ति' हो जाता है। (इतेः स्वरा शत् तश्च द्विः 1/42)

यथा - किं + इति = किं त्ति, जंति, जुत्तं त्ति।

रामो + इति = रामो त्ति, पुत्तो त्ति, पुरिसोत्ति, माला त्ति इत्यादि।

(3) 'एतत्' आदि सर्वनामों से परे अव्ययों तथा अव्ययों से परे 'त्यद' आदि होने पर आदि स्वर का विकल्प से लोप होता है। (त्यदाद्यव्ययात् तत्स्वरहव लुक् 1/40)

यथा - एस + इमो = एसमो, अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ

जइ + एत्थ = जइत्थ, जइ + अहं = जइहं

जइ + इमा = जइमा, अम्हे + एव्व = अम्हेव्व

● अभ्यास कीजिए -

अप्पाणं पि, अप्पाणं अवि, दो वि, णवि, सव्वे पि, अबंधो त्ति, एगो त्ति, केणवि, फलत्ति, किरियत्ति, कम्मत्ति, अप्पत्ति, सो वि समयत्ति, तिट्ठं त्ति, गुरुत्ति

पाठ – पन्द्रह

समास विचार

● **समास** – संक्षिप्तिकरण को समास कहते हैं। अर्थात् दो या दो से अधिक शब्दों को एक साथ रखना, तथा जिससे एक अर्थ प्रकट हो जाय और सामर्थ्य विशेष के होने पर प्रायः समास होता है। (नाम नाम्नैकार्थ्ये समासो बहुतम् 3/1/18)

● **समास के भेद** (1) बहुव्रीहि (2) अव्ययीभाव (3) तत्पुरुष और (4) द्वन्द्व

(1) बहुव्रीहि – जिस पद से किसी विशेष अर्थ का ज्ञान हो, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

यथा – पीअं अंबर जस्स सो = पीआंबरो (पीताम्बर)

आरूढो वाणरो जं रूक्ख सो आरूढवाणरो रूक्खो, णिआणि इंदियाणि जेण सो = जिइंदियो मुणी

णिआ परीसहा जेण सो = जिअपरीसहो गोयमो, महावीरो

णरो मोहो जाओ सो = नरमोहो साहू

घोरं बंभचेरं जस्स सो = घोरबंभचेरो जंतू

आसा अंबरं जंसिं ते = आसंवरा

सेयं अंबरं जेसिं ते = सेयंबरा

● **बहुव्रीहि के भेद** – मूल भेद – (अ) समानाधिकरण (एकार्थं चाऽनेकं च 3/9/22)

(आ) व्याधिकरण (उष्ट्र–मुखादयः 3/9/23)

● **व्याधिकरण के भेद** – (क) द्विपद (ख) बहुपद (ग) सहपूर्वपद (घ) संख्योत्तरपद (च) संख्योभयपद (छ) व्यतिहारलक्षण (ज) दिगंतरालक्षण

(क) द्विपद – चक्कं पाणिम्मि जस्स सो चक्कपाणी (चक्रपाणिः)

चक्कं हत्थे जस्स सो चक्क हत्थो भरहो (चक्रहस्तो भरतः)

(ख) बहुपद – धुओ सव्वो किलेसो जस्स सो = धुव सव्वकिलेसो जिणो।

(ग) सहपूर्वपद – सीसेस सह = ससीसो आयरिओ।

पासेण सह = सपासो रक्खसो।

लक्खणेण सह = सलक्खणो रामो।

(घ) संख्योत्तरपद – पंच वत्ताणि जस्स सो = पंचवत्तो सीहो ।
चयारि मुहाणि जस्स सो = चउम्मुहो ।
एगो दंतो जस्स सो = एगदंतो ।

(च) संख्योभयपद – तिण्णि णेत्ताणि जस्स सो तिणेत्तो ।

(छ) व्यतिहारलक्षण – चरणं चेअ धणं जाणं = चरणधणा सहावो ।

(ज) दिगंतराललक्षण – दाहिणं पुव्वं चेअ दिसो जस्स सो ।

इसके अतिरिक्त

(प) विशेषणपूर्वपद – णीलो कंठो जस्स सो णीलकंठो मोरो ।
महंता बाहुणो जस्स सो महाबाहू ।

(फ) उपमानपूर्वपद – चंदो इव मुंह जाए चंदमुही कन्ना ।
गजाणण इव आणणो जस्स सो गजाणणो ।

(ब) तत् बहुव्रीहि – न अत्थि णाहो जस्स सो अणाहो ।
न अत्थि विणयो जस्स सो अविणयो ।

(भ) प्रादि बहुव्रीहि – प – पगिट्ठं पुण्णं जस्स सो पपुण्णो जणो ।
नि – णिग्गया लज्जा जस्स सो = णिलज्जो ।
वि – विगओ धवो जाए सा = विहवा ।
अव – अवगतं रूवं जस्स सा = अवरूवो ।
अइ – अइक्कंतो मग्गो जेण सो = अइमग्गो रहो ।
परि – परिअअं जल जाए सा = परिजला, परिहा ।
निर – णिग्गया दया जस्स सो = णिद्दयो जणो ।

● **समास तोड़िए –** उट्ठ-मुहा, वसहसंधा, सपुत्तो, स-कम्मो, सफलं, अणवज्जो, अण्णाणं, णिस्सहाओ, पत्तणाणो, दिण्णवओ, नियागट्ठी, अणगारो, अजिओ, महावीरो, संमई, वड्ढमाणो, णट्ठदंसणो, सत्थ-पारगामी, जिइंदियो, जियकसायो ।

(2) अव्ययीभाव – अव्यय की प्रधानता जिसमें हो, वह अव्ययीभाव समास है ।
(अव्ययम् 3/1/21)

● **अव्ययीभाव के प्रयोग –**

(1) **विभक्ति अर्थ –** अप्पंसि अंपंतो = अज्झप्पं ।
हरिम्मि इइ = अहिहरि ।

(2) **समीप** – दिसाए समीव = उवदिसा ।
गुरुणो समीव = उवगुरु ।

(3) **पश्चात्** – भोयणस्स पच्छा = अणुभोयणं ।
जोगस्स पच्छा = अणुजोगं ।
जिणस्स पच्छा = अणुजिणं ।

(4) **समृद्धि** – मद्दाणं सामिद्दी = सुमद्दं ।

(5) **अभाव** – मच्छिकाणं अभाओ = णिम्मच्छिगो ।
मोहस्स अभावो = णिम्मोहो ।

(6) **अव्यय नाश** – हिमस्स अच्चओ = अइहिमं ।
पावस्स णद्धो = अपावं ।

(7) **असम्प्रति** – निद्दा संपइ ण जुज्जइ = अइणिद्दं ।

(8) **अणु** – रूवस्स जोग्गं = अणुरूवं ।

(9) **पइ** – नयरं नयरं ति = पइनयरं ।
पइ – दिणं दिणंति = पइदिणं ।
पइ – घरे घरे ति = पइघरं ।

(10) **अनतिक्रम** – सत्तिं अणइक्कमिअ = जहासत्ति ।
सत्तिं अणइक्कमिअ = जहाविहि ।

(11) **योग** – चक्केण जुगवं = सचक्कं ।

(12) **संप्रति** – छत्ताणं संपइ = सछत्तं ।

● **अभ्यास** – जहासत्ति, णिविग्घं, सहरी, उवगिरं, उवगंगं, सचक्कं, अणुजोगं, अणुभावं, पइजम्मं, पइफलं, अणुभवं, पत्तेमं, अणासवा, णिराणंदा, णीसम्मा ।

● **(3) तत्पुरुष** – जिसमें उत्तर पद की प्रधानता हो, उसे तत्पुरुष कहते हैं ।
(गति - त्वन्यस्तत्पुरुषः 3/1/42)

● **तत्पुरुष के भेद** – (1) प्रथमा तत्पुरुष (2) द्वितीया तत्पुरुष (3) तृतीया तत्पुरुष (4) चतुर्थी तत्पुरुष (5) पंचमी तत्पुरुष (6) षष्ठी तत्पुरुष (7) सप्तमी तत्पुरुष (8) उपपद तत्पुरुष (9) नञ् तत्पुरुष (10) अलुक् तत्पुरुष

(1) प्रथमा तत्पुरुष – इसमें पुव्व, अवर, अहर और उत्तर पद की प्रधानता होती है ।

पुव्वं कायस्स = पुव्वकायो, अवरं कायस्स = अवरकायो

उत्तरं गामस्स = उत्तर गामो, अहरं भागस्स = अहरभामो

(2) द्वितीया तत्पुरुष – इसमें सिअ, अतीत, पडिअ, गअ, अइअत्थ, अस्सिअ, पत्त और आवण्ण पद की प्रधानता होती है ।

किसणं सिओ = किसणसिओ, इंदिया अतीतो = इंदियातीतो

अग्गिं पडिओ = अग्गिपडिओ, सिवं गओ = सिवगओ

सुहं पत्तो = सुहपत्तो, मेहं अइअत्थो = मेहाइअत्थो

वीरं अस्सिओ = वीरस्सिओ, कट्ठं आवण्णो = कट्ठावण्णो

(3) तृतीया तत्पुरुष – इसमें पहला पद तृतीयांत होता है ।

यथा – जिणेण सरिसो = जिणसरिसो, णहेहिं भिन्नो = णहभिन्नो

आयरेण णिउणा = आयारणिउणा, रसेण पुण्णं = रसपुण्णं

दयाए जुत्तो, मायाए सरिसो = मायासरिसो

(4) चतुर्थी तत्पुरुष – इसमें पहला पद चतुर्थी विभक्ति का होता है ।

यथा – णाणस्स अज्झयणं = णाणज्झयणं

मोक्खस्स णाणं = मोक्खणाणं

कुण्डलस्स सुवण्णं = कुंडलसुवण्णं, कुम्भस्स मट्टिआ = कुम्भमट्टिआ, धणस्स लोहो = धणलोहो

(5) पंचमी तत्पुरुष – इसमें पहला पद पंचमी विभक्ति का होता है ।

यथा – संसाराओ भीओ = संसार भीओ, दंसणाओ भट्ठो = दंसणभट्ठो, चोराहि भयं = चोरभयं, अण्णाणाओ दुहं = अण्णाणदुहं

(6) षष्ठी तत्पुरुष – इसमें पहला पद षष्ठी विभक्ति का होता है ।

यथा – रायस्स पुत्तो = रायपुत्तो, देवस्स आलयं = देवालयं, विज्जाए आलयं = विज्जालयं, रुक्खाणं साहा = रुक्खसाहा णरस्स इंदो = णरिंदो, णायस्स पुत्तो = णायपुत्तो ।

(7) सप्तमी तत्पुरुष – इसमें पहला पद सप्तमी विभक्ति का होता है । निम्न प्रयोगों के होने पर सप्तमी होती है । चण्डा, धुरु, पवीण, अंतर, अहि, पटु, पण्डिअ, कुशल, चवल, णिउण, सिद्ध, सुक्क और बंध ।

यथा - कलासु कुसली = कलाकुसली, सभासु पण्डिओ = सभापण्डिओ, विज्जाए दक्खो = विज्जादक्खो, कसायेसु बंधो = कसायबंधो ।

(8) उपपद तत्पुरुष – जब तत्पुरुष समास में उत्तर पद किसी क्रिया का होता है, तब उपपद तत्पुरुष समास होता है ।

यथा - कुम्भं कुणइ = कुम्भकारो, धणं देइ = धणओ, सव्वं जाणइ = सव्वण्णु, धम्मं जाणइ = धम्मण्णु ।

(9) नय तत्पुरुष – ण सच्चं = असच्चं, ण गओ = अगओ ।

(10) अलुक् तत्पुरुष – जिसमें विभक्ति प्रत्ययों का लोप नहीं होता है, वहां अलुक् समास होता है । यथा -

अंतेवासी, देवानंपियो, जुहिट्ठिरो

● नोट - प्र आदि उपसर्ग, अरि, अव, परि, निर के बाद गत्, कंत, कुट्ठ, गिलाण आदि धातुओं का प्रयोग होने पर भी तत्पुरुष समास होता है ।

(प्रात्यव - परि - निरादयो गत-क्रांत-क्रुष्ट-ग्लान-क्रान्ताद्यर्थाः प्रथमाद्यन्तैः 2/1/47) यथा -

पगओ आयरिओ = पायरियो (प्राचार्यः)

उग्गओ बेलं = उव्वेलो (उद्वेतः)

अइक्कंतो पल्लंकं = अइपल्लंको (अतिपल्यङ्क)

● समासांत पदों का विग्रह कीजिए

विज्जारहिओ, रक्खपुरिसो, तवोवणं, अमुल्लं, गणोविआरो, जिणमंदिरं, रायभिट्ठो, मयसुण्णो, गयउत्तो, अजसो, तवोहणं, रुसाणणो, हंसगामणी, गयगामणी, समचउरससंठाणो, जिअपरिसहो, गणिआयरिओ, धम्मपुत्तो, लेहसाला, समाहिठाणं, देवत्थुई, जिणिंदो, लोयहिओ, रुवसमाणा, चक्खुकाणा, पादखंजो, मोक्खगओ, कल्लाणपत्तो, दुहपत्तो, राप्पभीओ, हिमालयागओ, रिणमुत्तो, अण्णाणभयं आदि ।

(4) द्वन्द्व समास – जब दो या दो से अधिक संज्ञाएं एक साथ आती है, तब द्वन्द्व समास होता है।
(चार्थे द्वन्द्व सहोक्तौ 3/1/117)

● **द्वन्द्व समास के भेद** – (1) एक-शेष समास (2) इतरेतर (3) समाहार द्वन्द्व ।

(1) एक-शेष समास – यथा - जिणो अ जिणो = जिणा (जिनेन्द्र)

नेत्तं ये नेत्तं त्ति = नेत्ताइं (नेत्रे)

माआ य पिआ य त्ति = पिअरा (पितरौ)

सासू अ ससुरो अ त्ति = ससुरा (श्वशुरौ)

इंदो य अग्गी य त्ति = इंदाग्गी (इंद्राग्नी)

मयूरो य मयूरी य त्ति = मयूरा (मयूरो)

(2) इतरेतर द्वन्द्व समास –

पुण्णं य पावं य = पुण्णपावाइं

जीवा य अजीव य = जीवाजीवा

सासू य बहू य = सासू बहूओ

सूहं य दुहं य = सुहदुहाइं

हत्था य पाया य = हत्थपाया

(3) समाहार द्वन्द्व समास –

असणं य पाणं य एएसिं समाहारो = असणपाणं ।

तवो अ संजमो य एएसिं समाहारो = तवसंजमं ।

णाणं य दंसणं य चरियं य एएसिं समाहारो = णाण-दंसण चरियं ।

राओ य दोसो य भयं य मोहो य एएसिं समाहारो = राअदोसभयमोहं

अभ्यास

सुरासुरा, सारासारं, पत्तपुप्फणि, भक्खाभक्खाणि उसहवीरा, वानरमोरहंसा, लक्खण-रामा, सीया-रामा, बहूणणंदा, सुक्काणि, हिमा, लाहालाहा, अहरोतरा, हंस-चक्क-वाका, वदरामलकं, गंगासोणं, कुरूखेतं, गंगा ज उणे, दहि-पयती, पाणिपाया, चरियासणाइं, सयणासणाइं, आवेसण-सभा-पवासु, आरामागारे, आधाय-णइ-गीयाइं, सुब्भि-दुब्भि-गंधाइं । ओयण-मंथु-कुमारसेणं, जाती-मरण-मोयणाए, साहिट्ठ-जहिट्ठ-दंसणं, मण-वयण-कायगुप्ते, सुसमामुसमासु, आहार-पाण-चंदण-सयणासण-मज्जणाइविणिओगं

● **अन्य समास –**

(क) कर्मधारय (ख) द्विगु समास

(क) कर्मधारय समास – जब प्रधान पद विशेषण हो और दूसरा पद विशेष्य हो, तब कर्मधारय समास होता है ।

(विशेषणं विशेष्यणैकार्य कर्मधारयश्च 3/1/66) यथा – णीसं य तं उप्पलं = णीलुप्पलं

● **कर्मधारय के भेद –**

(1) विशेषणपूर्वपद (2) विशेष्यपूर्वपद (3) विशेषणोभयपद (4) उपमानपूर्वपद (5) उपमानोतरपूर्वपद (6) सम्भावनापूर्वपद (7) अवधारणापूर्वपद

(अ) विशेषणपूर्वपद – रसो अ एसो घडो = रसघडो, उत्तमो य पुरिसो = उत्तमपुरिसे, सेट्ठो अ तंधणं = सेट्ठधणं, महंतो सो वीरो = महावीरो ।

(2) महंतो य सो राया = महाराया, वीरो य सो जिणिंदो = वीरजिणिंदो ।

(3) रत्तो अ एसो सो आसो = रत्तसेओ आसो, सीअं य उण्हं य तं जलं = सीयुण्हजलं, रत्तं य पीअं य वत्थं सं = रत्तपीअवस्थं ।

(4) चंदो इव मुहं = चंदमुह, घणो इव सामो = घणसामो, वज्जो इव देहो = वज्जदेहो

(5) मुंह चारोव्व = मुहचारो जिणो चंदोव्व = जिणचंदो,

(6) संजमो एवं धणं = संजमधणं, तवो चिअ धणं = तवोधणं, पुण्णं चेअ पाहेज्जं = पुण्णपाहेज्ज

(7) णाणं चेअ धणं = णाणधणं, पयमेव पउमं = पयपउमं

● **नोट (1)** – एक, सव्व, जर, पुराण, नव, केवल के अर्थ में कर्मधारय समास होता हैं ।
(पूर्वकालैक-सर्व-जरत-पुराण-नव-केवलम् 3/1/67)

● **एका च एसो वासो** = एकवाले, सव्वं य अण्णं तं सव्वण्णं

● **जरं य एसो, णरो** = जरणरो, पुराणो य एसो कवि = पुराणकवी, नवा य एसा उत्ती = नवोत्ती,

● **केवलं य तं णाणं** = केवलणाणं ।

● नोट (2) – दिशावाची, तहित और अधिक के योग में कर्मधारय समास होता है ।
(दिगधिकं संज्ञा – तहितोतरपदे 3/1/68)

● **दाहिणाउ कोसला** = दाहिणकोसला, दाहिणाए सालाए = दाहिणसाला

● **अभ्यास –**

णीलगगणं, रत्तपत्तं, सेअधडो, महाजोई, कमलणयणं, उत्तमकुलं ।

(ख) द्विगु समास –

संख्यावाची शब्द का पूर्व में प्रयोग होने पर द्विगु समास होता है । (संख्या समाहारे च द्विगुश्चानाम्यय्म् 3/1/66)

यथा – तिगुत्ती, चउक्कसाया ।

● **द्विगु समास के भेद**

(1) एकवद्भावी (2) अनेकवदभावी

(1) एकवद्भावी – नवण्हं तच्चाणं समाहारो = णवतच्चं ।
चउण्हं कसायाणं समूहो = चउक्कसायं ।
तिण्हं लोगाणं समूहो = तिलोयं ।

(2) अनेकवदभावी – तिण्णिलोया = तिलोय ।

चउरो दिसाओ = चउदिसा

● **समासांत पदों का विग्रह कीजिए –** (सभी समासों के प्रयोग)

णातिवेल, णायपुत्तो, धम्म-पारगा, अणासवा, णालिय, णापुडो पियमप्पियं, अट्ठपुत्ताणि, सीओदग, जिणसासणं, उण्हातितते, जलोवणीयस्स, विज्जाणुसासणं, इत्थीविसयगिद्धे, पाणवहं, जाई जरा-मच्चुभयामिमुया, विमोक्खणट्ठा, पंचकुसीलसंवुडे, जहारूवेण, अम्मापियरो, एगभूओ, महारण्णं, विगयमोहो, जिण-भयहारो, सव्वलोगप्पभंकरो, णत्थि, धोरपरक्कमे, पंचमहव्वपधम्मं, सुहावहे, सव्वसुतमहोयही, भवोहन्तकरा, सच्चामोसा, उल्लंघ-पलुंघणे, संरम्भ-समारम्भं, गामाणुगामं, दिव्व-माणुस-तेरिच्छ, रागदोसो, रागाउरे, वीयरागो, णिट्ठाणिद्दा, पयल-पयला, णोकसायजं, पंचविहधणं, तिरिय-नराणं, कुलघरवग्गस्स, निग्गंची, महव्वयाइ, महव्वलो, देवाणुप्पिया, सुहंसुहेणं, वयोकम्मं, चोद्दसमं, अहोरत्तेहिं, देवराया, अमयफलाइं, जियसत्तू, उदगरयणं, जेट्ठपुरं, केवलवरणाणदंसणे, समणोवासा, सावगधम्मं आदि ।

पाठ – सोलह

तद्धित विचार

तद्धित प्रत्यय – संज्ञा शब्दों में लगने वाले प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं। तद्धित के तीन भेद कहे गये हैं। (1) सामान्य वृत्ति (2) भाववाचक और (3) अव्ययवायक

(1) **केर –** इदम – इम अर्थ (इससे सम्बन्धित) के लिए केर आदेश होता है। (**इदमर्थम्य केर: 2/147**)

(2) **इक्क, क्क, केर –** 'पर' और 'राज' शब्द में 'इक्क, क्क और केर' प्रत्यय होते हैं। (**पर राजक्यां कू – डिक्कौ च 2/148**) यथा – परक्क, परकेरं, रायक्कं, राइक्कं, रायकेरं

(3) **एच्चय –** युस्मद – तुम्ह, अस्मद–अम्ह में 'अज' के स्थान पर 'एच्चयं' प्रत्यय होता है। (**युष्मदस्मदोऽज– एच्चयः 2/149**) यथा – तुम्हेच्चयं, अम्हेच्चयं

(4) **'व्व' –** 'वत्' के स्थान पर 'व्व' प्रत्यय होता है। (**वतेर्व्वः 2/150**) यथा – महुरव्व

(5) **'इक' –** इअ – 'ईन' के स्थान पर इक प्रत्यय होता है। (**सर्वांगादानस्येकः 2/151**)

(6) **इक –** इअ – पहिओ (**पयो णस्येकट् 2/152**)

(7) **णय –** अप्पणयं (आत्मीयम्) (**ईयस्यात्मतो णयः 2/153**)

(8) डिम, तण (**त्वस्य डिमा–त्तणो वा 2/154**) पीणिमा (पीतत्वं), पुप्फिमा (पुप्यत्वम्), पीणिमा (पीतत्वं)

नोट – पोणत्तं, पुष्कत्तं

(9) **एल्ल –** 'तैल' प्रत्यय के स्थान पर 'एल्ल' प्रत्यय होता है। अङ्क शब्द को छोड़कर। (2/155) यथा – सुराहि जलेण कडुएल्लं (सुरभि-जलेन-कटु-तैलम्)

(10) **इन्तिअ –** यावत् – 'ज', तावत् – 'त' में इत्तिअ' प्रत्यय होता है। एतावत् का मात्र इत्तिः आदेश होता है। (**यत्तदेतदोनोरित्तिअ एतल्लक् च 2/156**) यथा – ज + इत्तिअ = जित्तिअ, त + इत्तिअ = तित्तिअ, एतावत् – इत्तिअं।

(11) **एत्तिह, एत्तिल, एद्दह –** इदम् – इम, किं – क, यत् – ण, तत् – त, एतत् – [illegible] एत्तिल, इद्दह प्रत्यय होते हैं (**इदं किमश्च डेत्तिका–डेत्तिअ–डेद्दहा : 3/157**)

यथा – इम – एत्तिहं, एत्तिलं, एद्दहं, जेत्तिहं, जेत्तिलं, जेद्दह।

क – केत्तिहं, केत्तिलं, केद्दिहं, तेत्तिहं, तेत्तिलं, तेद्दहं।

(12) **हुत्तं** (वार अर्थ में) - (**कुत्वसो हुतं 2/158**) यथा - सयहुतं, सहस्सहुतं, पियहुतं ।

(13) **आलु, (आल्विल्लोल्लाल वंत मंतेत्तेरं–मणामतो : 2/159)** यथा - णेहालू, दयालू, ईसालू ।

इल्ल – लज्जिल्लो, सोहिल्लो, छाइल्लो, जामइल्लो ।

उल्ल – विभाउल्लो, मंसुल्लो, दप्पुल्लो ।

आल – सद्दालो, जडालो, फडालो, रसालो, जोण्हालो ।

वंत – धणवंतो, गुणवंतो, भतिवंतो ।

मंत – हणुमंतो, महमंतो, सिरिमंतो, पुण्णमंतो ।

इत्त – कव्वइत्तो, माणइत्तो ।

इर – गव्विरो, रेहिरो ।

मण – धणमणो ।

(14) **त्तो, दो** – 'तस्' प्रत्ययात के त्तो, दो आदेश होते हैं । (**तो दो तसो वा 2/190**)
यथा - सव्वत्तो, सव्वदो, तत्तो, तदो, एकत्तो, एकदो, अन्नत्तो, अन्नदो, कत्तो, कदो, जत्तो, जदो ।

(15) **हि, ह, त्थ** – 'अप्' प्रत्यायांत के - हिं, 'ह' और 'त्थ' आदेश होते हैं । (**भपो हि, ह–थ्याः 2/191**)

यथा - जंहि, जह, जत्थ ।

तहि, तहं, तत्थ, कहि, कह, कत्थ ।

अन्नहि, अन्नह, अण्णत्थ ।

(16) **सि, सिअं, इआ** – एक के बाद रहे हुए 'दा' प्रत्यय के स्थान पर 'सि', 'सिअं', 'इआ' प्रत्यय होते हैं । (**वैकाद्द : सि ति अं इआ 2/162**)

यथा - एक्कसि, एक्कसिअं, एक्कइआ (एकदा)

(17) **इल्ल, उल्ल** – भव अर्थ (विदामात अर्थ) में 'इल्लं, उल्लं प्रत्यक्ष होते हैं । (**डिल्ल – डुल्लौ भवे 2/163**)

यथा - पुरिल्लं, हेट्ठिल्लं, उवरिल्लं, अप्पुल्लं ।

(18) **इल्ल, उल्ल इत** – स्वार्थ में ('क' से सम्वन्धित प्रत्यय में) इल्ल, उल्ल और इत प्रत्यय होते हैं । (**स्वार्थे कश्च वा 2/164**)

यथा - चंविल्लो, चंदुल्लो, चंदिओ ।

(19) **ल्ल** – 'नव' और एक में 'ल्ल' प्रत्यय होता है । (**ल्लो नवैकाद्वा 2/164**)

यथा - नवल्लो, एकल्लो ।

(20) **ल्ल** – 'ऊपर का कपड़ा' इस अर्थ में 'ल्ल' प्रत्यय होता है । (**उपरे : संख्याने 2/166**)

यथा - उवरिल्लो - अवरिल्लो ।

(21) **मया, उमया–अमया** – 'भू' शब्द का इस अर्थ में 'मया' और 'अमया' प्रत्यय होते हैं । (**भ्रुवो मया डमया 2/167**)

यथा - भुमया, भुअमया, भमया ।

(22) **डिअग – इअम** – शनैः में डिअम् - इअम् प्रत्यय होता है । (**शनै सो डिअम् 2/168**)

यथा - एणिअं ।

(23) **उयंर** – अयं, डिय-इयं - मनाक् शब्द से परे स्व अर्थ में 'अयं' और 'इयं' प्रत्यय होते हैं । (**मनाको न ता डयं च 2/169**)

यथा - मणयं, मणियं ।

(24) **डालिअ** – आलिअं - मिश्र - शीस में आलिअ प्रत्यय होता है । (**मिश्राड़अलिअ : 2/170**)

(25) **र – दीर्घ** – दीह में 'र' प्रत्यय होता है । (**से दीर्घात् 2/171**)

यथा - दीहर ।

(26) **ल – विधुत** – विज्जु, पत्र - पत्त, पीत - पीव, अन्ध में 'ल' प्रत्यय होता है । (**विद्युत – पत्र– पीतान्धाल्ल : 2/173**)

यथा - विज्जुल, पत्तल, पीवल, अन्धल ।

(27) **तर** – अर, तम - अम प्रत्यय

सिक्खअर, सिक्खअम, थोवअर, थोवअम, अप्पअर, अप्पअम, पिअअर, पिअअम, अहिअअर, अहिअअम।

(28) कुछ अन्य तद्धित शब्द

धणी, अत्थिओ, तवस्सी, पीणया, रायण्णो, आरिस, जेया, कया, सव्वमा, तया, सव्वहा आदि ।

पाठ सत्तरह

स्वर विचार

स्वर–परिवर्तन

(1) ह्रस्व - स्वर का दीर्घ - य, र, व, श, स, सं के पूर्व या पश्चात् लोप होने पर श, ष, स के आदि स्वर का दीर्घ हो जाता है। (लुप्त – य–र–व–श–ष–सां दीर्घः 1/43)

यथा - शस्य य लोपे - पासइ (पश्यति), कासवो (कश्यपः)

र लोपे - बीसमइ (विश्राम्यति), मीसं (मिअम्)

व लोपे - आसो (अश्वः), वीसासो (विश्वासः)

श लोपे - दूसासणो (दुश्शासनः, मणासिला)

अ लोपे - सीसो (शिष्य), मणूसो (मनुष्यः)

इसके अतिरिक्त - कासओ (कषकः), वासा (वर्षाः), वासो (वर्षः), वीसाणो (विष्वाणः), वीसुं (विष्यक्), नीसित्तो (निष्वित्तः), सासं (सस्यार), ऊसो (उस्रः), वीसम्मो (विश्रम्मः), विकासरो (विकस्वरः), नीसो (निःस्वः), नीसहो (निस्सहः)

(2) ह्रस्व –स्वर का विकल्प से दीर्घ (**अतः समृद्धयादो वा 1/44**)

यथा - सामिद्धी (समिद्धिः), पासिद्धी, पसिद्धी (प्रसिद्धिः), पायडं, पयडं (प्रकटं), पाडिवआ, पडिवआ (प्रतिपदा), पासुत्तो, पसुत्तो (प्रसुप्तः), पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी (प्रतिसिद्धिः), पावासू, पवासू (प्रवासित्), सारिच्छो, सरिच्छो (सदृशः), माणंसी, मणंसी (मनस्विन्), माणंसिणी, मणंसिणी (मनस्विनी), आहिआई, अहिआई (अभियातिः), पारोहो, (परोहः), पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी (प्रतिस्पर्द्धिन)

(3) ह से परे दीर्घ होता है (दक्षिणे हे 1/45) दाहिणो (दक्षिणः) दक्खिणो (वि.)

(4) आदि 'अ' को 'इ' - (**इः स्वप्नादौ 1/46**)

यथा - सिविणो सिमिणो (स्वप्नः), ईसि (ईषत्), विलिअं (व्यलीकम्), विअणं (व्यजनम्), गुड्डगो (मृदङ्गः), किविणो (कृपणः), उत्तिमो (उत्तमः), मिरिअं (मरिचम्), दिण्णं (दत्तम्)

(5) अ को इ - इइंगालो (अङ्गारः), णिडालं (लिलाटम्) (1/47)

(6) मध्यम 'अ' को इ (मध्यम-कतमे द्वितीयस्य 1/48), (सप्तपर्णे वा 1/49)

यथा - मज्झिमो (मध्यमः), कइयो (कतमः) छत्तिवणो (सप्तपर्णः)

(7) मयट् प्रत्ययात 'क' आदि 'अ' का 'अइ' (**मगटय इर्वा 1/50**) मयट्-मय

यथा - विसमइओ (विषमयो)

(8) आदि 'अ' को ई - (**ई हरे वा 1/51**)

यथा - हीरो (हर:)

(9) 'अ' को उ - (**ध्वनि – विष्वचोरुः 1/52**)

यथा - झुणी (ध्वनि:), वीसुं (विष्वक्)

खुडिओ (**खण्डितः**) (1/53)

गउओ (गवय:), गउआ (**गवया**) (1/54)

पढुमं (प्रथमं), पुढुमं (**प्रथमम्**) (1/55)

अहिण्णू (अभिज्ञ:), सव्वण्णू (**सर्वज्ञः**) (1/56)

कयण्णू (कृतज्ञ:), आगमण्णू (**आगमज्ञः**) (1/56)

(10) अ को ए - (**एच्छय्यादौ 1/57**)

यथा - सेज्जा (शय्या), सुन्देरं (सौन्दर्यम्)

गेन्दुअ (कन्दुकं)

उक्केरो (उत्कर:), वेल्ली (**वल्ली**) (1/58)

पेरंतो (पर्यन्त:), अच्छेरं (**आश्चर्यम्**) (1/58)

बम्हचेरं (**ब्रह्मचर्य**) (1/59), अन्ते उरे (अन्त:पुर) (1/60)

(11) अ को ओ - (**ओतपदमे 1/61**) पोम्मं (पद्म)

नमोक्कारो (नमस्कार:), परोप्परं (**परस्परं 1/62**)

ओप्पेइ (अर्पयति), ओप्पियं (**अर्पितम्**) (1/63)

सोवइ (स्वपिति)

(12) अ को आ, एवं आइ - (**नात्पुनर्यादाई वा 1/65**)

यथा - न उणा (न पुन:), न उणाइ (न पुन:)

(13) 'अ' का लोप - (**वालाण्वरण्ये लुक 1/66**)

यथा - अ ला ऊ - लाऊ (अलाबू), अरण्णं - रण्णं (अरण्यं)

(14) आ का अ - (**वाव्ययोत्खातादावदातः 1/67**)

जहा - जह (यथा), तहा - तह (तथा)

अहवा - अहव (अथवा), उक्खायं - उक्खयं (उत्खातं)

चामरो - चमरो (चमरः), कालओ - कलओ (कालकः)

ठाविओ - ठविओ (स्थापितः), पाययं - पययं (प्राकृतं)

कुमारो - कुमरो (कुमारः), बाम्हणो - बम्हणो (ब्राह्मणः)

पुव्वाण्हो - पुव्वण्हो (पूर्वाग्रह), दावग्गी - दवग्गी (दावाग्निः)

चाडू - चडू (चाटुः), खाइरं - खइरं (खादिरं)

(15) आ का अ (**घञ् वृद्धेर्वा 1/68**)

पवाहो - पवहो (प्रवहः), पहारो - पहरो (प्रहरः)

पयारो - पयरो (प्रकारः), पत्थावो - पत्थवो (प्रस्तावः)

मरहट्ठो - महाराष्ट्रः (**महाराष्ट्रः 1/69**), आअरिओ (**आचार्यः**) (**1/69**)

(16) अनुस्वार सहित 'आ' का अ - (**मांसादिष्वनुस्वा 1/70**)

यथा - मंसं (मांसं), पंसु (पांसु)

कंसं (कास्यं), कंसिओ (कांसिकः)

वंसिओ (वांशिकः), पंडवो (पाण्डवः)

संसिद्धिओ (सांसिद्धिकः), संजत्तिओ (सांयात्रिकः)

सामओ (श्यामाकः) (**श्यामाके मः 1/71**)

(17) आ का इ - (**इः सदादौ वा 1/72**)

यथा - सया - सइ (सदा), निसा-अरो-निसि-अरो (निशाचरः)

कुप्पासो - कुप्पिसो (कूर्पासः)

आइरिओ (आचार्यः) (**आचार्ये चोच्च 1/73**)

(18) आ का ई - (**ईः स्त्यान - खल्वाटे 1/74**)

यथा - ठीणं, थीणं (स्त्यानम्), खल्लीडो (खल्वाटः)

(19) आ का उ - (**उः सास्ना-स्नातके 1/75**)

यथा - सुण्हा (सास्ना), थुवओ (स्तानकः)

(20) आ का ऊ - **(ऊद्धासारे 1/76)**

यथा - आसारो - ऊसारो (आसार:)

अज्जू **(आर्या 1/77)**

(21) आ का ए - **(एद् ग्राह्ये 1/78)**

यथा - गेज्झं (ग्राह्यं) दारं-वारं-देरं (द्वारम्) **(द्वारे वा 1/79)**

पारावओ - पारेवआं (परापत:) **(पारापते रो वा 1/80)**

मेत्तं (मात्रं) **(मात्रटि वा 1/81)**

(22) आ का उ और ओ - **(उदोद्वार्द्रे 1/82)**

यथा - उल्लं, ओल्लं (आर्द्रम्)

ओली (आली) **(औदाल्यां पंक्तौ 1/83)**

(23) दीर्घ का ह्रस्व - दीर्घ स्वर से आगे संयुक्त अक्षर पर दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है ।

(ह्रस्वः संयोगे 1/84)

यथा - अम्बं (आम्रम्), तम्बं (ताम्रम्), विरहग्गी (विरहाग्नि:), अस्सं (आस्यम्), मुणिंदो (मुनीन्द्र:), तित्थं (तीर्थम्), गुरुल्लावा (गुरुल्लापा:), चुण्णो (चूर्ण:), णरिंदो (नरेन्द्र:), मिलिच्छो (म्लेच्छ:), अहसट्ठं (अधरोष्ठं, णीलुप्पलं)

(24) इ का ए - **(इत एद्वा 1/85)**

यथा - पिण्डं - पेण्डं (पिण्डम्), धम्मिल्लं - धम्मेल्लं (धम्मिल्लम्), सिन्दूरं - सेन्दूरं (सिन्दूरम्), विण्हू - वेण्हू (विष्णु:), पिट्ठं - पेट्ठं (पिष्टम्), विल्लं - वेल्लं (विस्वम्), किंसुअं - केंसुअं (किंशुकं), **(किंशुके वा 1/86)**, मिरा - मेरा (मिरा) **(मिरायाम् 1/87)**

(25) इ का अ **(पथि – पृथिवी – प्रतिश्रुन्मूषिक – हरिद्रा – विभीतकेष्वत् 1/88)**

यथा - पहो (पथिक्), पुहइ, पुढवी (पृथिवी), पडंसुआ (प्रतिश्रत्), मसूओ (मूषिक:), [illegible] (हरिद्रा), बहेडओ (विभीतक:), सिढिलं - सढिलं (शिथिलं), इङ्गअं - अङ्गुअं (इंगुदम् 1/89), तित्तिरि - तित्तिरो (तित्तिरि:) **(तित्तिरौ र: 1/90)** इअ (विअसिअ-कुसुम-सरो (इति विकम्मित-कुसुम) **(इतौ तौ वाक्यादौ 1/91)**

(26) इ का ई - **(ईजिह्वा – सिंह – त्रिंशत् विंशतौ त्या 1/92)**

यथा - जीहा (जिह्वा), सीहो (सिंह:), तीसा (त्रिंशत्), वीसा (विंशत्), [illegible] (निःश्वासः) [illegible] (निर्श्वास:)

(27) इ का उ - **(द्विन्योरुत् 1/94)**

यथा - दु (द्वि), दुमत्तो (द्विमात्रः), दुआई (द्विअतिः), दुविहो (द्विविधः), दुरेहो (द्विरेफः), दु-वयणं (द्वि-वचनम्)

(28) इ का ओ - **(प्रवासीक्षौ 1/95)**

यथा - पावासुओ (प्रवासिकः), उच्छू (इक्षुः), जडुट्ठिलो (युधिष्ठरः) **(युधिष्ठिरे वा 1/96)** दुहा किज्जइ (द्विधा क्रियते), दुहा - इअं **(द्विधा कृतम् 1/97)**

(29) इ का ओ - **(ओच्च द्विधाकृगः 1/98)**

यथा - दोहा - किज्जइ (द्विधाक्रियते), दोहा - इअं (द्विधा-कृतम्),

निज्झरो-ओज्झरो (निर्झरः) **(वा निर्झरे ना 1/98)**

(30) ई का अ - **(हरीतक्यामीतोत् 1/99)**

यथा - हरडई (हरीतकी)

(31) ई का आ - **(आत कश्मीरे 1/100)**

यथा - कम्हारा (कश्मीराः)

(32) ई का इ - **(पानीयादिष्वत् 1/101)**

यथा - पाणिअं (पानीयम्), अलिअं (अलीकम्), जिअइ (जीवति), जिअउ (जीवतु), विलिअं (व्रीडितम्), करिसो (करीषः), सिरिमो (शिरीषः), दुइअं (द्वितीयम्), तइअं (तृतीयम्), गहिरं (गभीरम्), उवणिअं (उपनीतम्), आणिअं (आनीतम्), पलिविअं (प्रदीपितम्), ओसिअतं (अवसीदतम्), पसिअं (प्रसीदम्), गहिअं (गृहीतम्), वम्मिओ (वल्मीकः), तयाणिं (तदानीम्)

(33) ई का उ - **(उज्जीर्णे 1/102)**

यथा - जुण्णो (जीर्णः)

(34) ई का ऊ - **(ऊर्हीन-विहीने वा 1/103)**

यथा - हीणो - हूणो (हीनः), विहीणो - विहूणो (विहीनः), तूहं (तीर्थ) **(तीर्थे हे 1/104)**

(35) ई का ए - **(एतपीयूषापीड - विभीतक कीदृशेदृशे 1/105)**

यथा - पेऊसं (पीयूषं), आमेलो (आपीडः), वहेडओ (विभीतकः), केरिसो (कीदृशः), एरिसो (ईदृशः), नीडं - नेडं (नीडम्), पीढं - पेढं (पीठम्) **(नीड-पीठे वा (1/106)**

(36) उ को अ - **(उतो मुकुलादिष्वत् 1/107)**

यथा - मउलो (मुकुलः), मउरं (मुकुरं), मउडं (मुकुडम्), अगरुं (अगुरुम्), जहुट्ठिलो (युधिष्ठिरः), सोअमल्लं (सौकुमार्यम्), गलोई (गुडूची)

उवरिं - अवरिं - (उपरिं) (**वोपरौ 1/108**)

गुरुओ - गरुओ (गुरुकः) (**गुरौ के वा 1/109**)

(37) उ का इ - इ (**भ्रूकुटौ 1/110**) भिउडी (भ्रुकुटिः)

पुरिसो (पुरुषः), पउरिसं (पौरुषम्) (**पुरुषे रोः 1/111**)

(38) उ का ई - (**ईः क्षुते 1/112**) छीअं (क्षुतम्)

(39) उ का ऊ - (**ऊसुभग – मूसले वा 1/113**)

यथा - सुहओ - सूहवो (सुभगः), मुसलं - मूसलं (मुसलम्), ऊसुओ (उच्छुकः)

ऊससइ (उच्छ्वसति) (**अनुत्साहोत्सन्नेत्सच्छे 1/114**)

दुसहो - दूसहो (दुःसहः), दुहओ - दूहओ (दुर्भगः) (**र्लुकि दुरो वा 1/115**)

(40) उ का ओ - (**ओतसंयोगे 1/116**)

यथा - तोण्डं (तुण्डम्), मोण्डं (मुण्डम्), पोक्खरं (पुष्करम्), कोट्टिमं (कुट्टिमम्), पोत्थअं (पुस्तकम्), लोद्धओ (लुब्धकः), मोत्था (मस्ता), मोग्गरो (मुद्गरः), पोग्गलं (पुग्गलम्), कोण्ढो (कुण्ढ). कोन्तो (कुन्तः), वोक्कतं (व्युत्क्रान्तम्), कुउहलं - कोऊहलं-कोउहल्लं ([illegible]) (**कुतूहले वा ह्रस्वश्च 1/117**)

(41) ऊ का अ - (**अदूतः सूक्ष्मे वा 1/118**) सुण्हं - सण्हं (सूक्ष्मम्) आर्षे - सुहुमं ([illegible])

दुऊलं - दुअल्लं (दूकूलम्) (**दूकूले वा लश्च द्विः 1/119**)

(42) ऊ का ई - (**ईर्वोद्व्यूढे 1/120**) उव्वूढं - उव्वीढं (उद्व्यूढम्)

(43) ऊ का उ - (**उ भ्रू – हनूमत – कण्डूय – वातूले 1/121**)

यथा - भुमया (भ्रूमया), हणुमंतो (हनूमत्), कण्डुअइ (कण्डूयति), वाउलो (वातूलः)

(44) ऊ का उ - (**मधूके वा 1/222**) महूअं - महुअं (मधूकम्)

(45) ऊ का इ और ए - (**इदेतौ नुपूरे वा 1/123**)

यथा - नुउरं - नेउरं - निउरं (नूपुरम्)

(46) ऊ का ओ - (**ओत्कूष्माण्डी–तूणीर–कर्पूर–स्थूल–ताम्बूल–गुड्ची–मूल्ये 1/124**)

यथा - कोहण्डी, कोहली (कूष्माण्डी), तोणीरं (तूणीरम्), कोप्परं (कर्पूरं), [illegible] ([illegible]), [illegible] (ताम्बूलम्), गलोई (गुडूची), मोल्लं (मूल्यम्), थूणा - थोणा ([illegible]), [illegible] (तूणम्) (**स्थूणा–तूणे वा 1/125**)

(47) ऋ का अ - **(ऋतोत् 1/126)**

यथा - धयं (घृतम्), तणं (तृणम्), कयं (कृतम्), वसहो (वृषभः), मओ (मृगः), धट्ठो (धृष्टः), मउअं **(मृदुकम् 1/127)**

(48) ऋ का आ - **(आत्–कृशा–मृदुक–मृदुत्वे वा 1/127)**

यथा - कासा (कृशा), माउक्कं (मृदुकं) माउसणं (मृदुत्वम्)

(49) ऋ का इ - **(इत्कृपादौ 1/128)**

यथा - किवा (कृपा), किसा (कृशा), हिययं (हृदयम्), मिट्ठं (मृष्टम्), दिट्ठं (दृष्टम्), दिट्ठी (दृष्टिः), सिट्ठं (सृष्टम्) सिट्ठी (सृष्टिः), गिट्ठी (गृष्टिः), पिच्छी (पृथ्वी), भिऊ (भृगुः), भिङ्गो (भृङ्गः), भिङ्गारो (भृंगारः) सिङ्गारो (श्रृंगारः), सिआलो (श्रृंगालः), गिद्धी (गृद्धिः), किसो (कृशः), किसाणू (कृशानुः), किसारा (कृसरा), किच्छं (कृच्छम्), तिप्पं (तृप्तम्), किसिओ (कृषितः), निवो (नृपः), किच्चा (कृत्या), किइ (कृतिः), धिई (धृति), किवो (कृपः), किविणो (कृपणः), इसी (ऋषि), वित्तं (वृत्तम्)

(50) ऋ का इ - **(पृष्ठे वानुत्तरपदे 1/129)**

यथा - पिट्ठी (पृष्ठिः), मसिणं (मसृणं), मिअङ्को (मृगाङ्कः), मिच्चू (मृत्यु), सिंगं (श्रृंगं), धिट्ठो (धृष्टः) **(मसृण–मृगाङ्क–मृत्यु–श्रृंग–धृष्टे वा 1/130)**

(51) ऋ का उ - **(उदृत्वादौ 1/131)**

यथा - ऊऊ (ऋतु), परामुट्ठो (परामृष्टः), पुट्ठो (स्पृष्टः), पउट्ठो (प्रवृष्टः), पुहई (पृथिवी), पउत्ती (प्रवृत्तिः) पाउसो (प्रावृषः), पाउओ (प्रावृतः), भुई (भृतिः), पहुडि (प्रभृति), पाहुडं (प्राभृतम्), परहुओ (परभृतः), निहुअं (निभृतम्), निउअं (निवृतम्), विउअं (विवृतम्), संवुअं (संवृतम्), वुतंतो (वृत्तान्तः), निव्वुअं (निर्वृतम्), निव्वुई (निवृत्तिः), वुंदं (वृन्दम्), वुन्दावणो (वृन्दावनः), वुड्ढो (वृद्धः), वुड्ढी (वृद्धि), उसहो (सृषभः), मुणालं (मृणालम्), उज्जू (ऋजुः), जामाउओ (जामातृकः), माउओ (मातृकः) भाउओ (भ्रातृकः), पिउओ (पितृकः), पुहुवी (पृथ्वी), निवुत्तं (निवृत्तम्) वुन्दारया (वृन्दारकाः) **(निवृत्त – वृन्दारके वा 1/132)**, माउ - मण्डलं (मातृ - मंडलम्), माउ–हरं (मातृ–गृहम्), पिउ–हरं (पितृगृहम्), माउ–सिआ (मातृ–श्वसा), पिउ–सिआ (पितृष्वसा), पिउ–वणं (पितृवनम्), पिउ–वई (पितृ–पतिः) **(गौणान्त्यस्य 1/134)**, मुसा, मूसा, मोसा (मृषा) **(उदूदोन्मृषि 1/136)**

(52) ऋ का रि - **(रि केवलस्य 1/140)** आदि में व्यञ्जन से रहित ऋ का 'रि' होता है ।

यथा - रिद्धी (ऋद्धिः), रिच्छो (ऋच्छ), रिसहो (ऋषभः), रिऊ (ऋतुः), रिसी (ऋषि), रिणं (ऋणं), सरिच्छो (सदृशः), **(ऋणर्त्वृभषत्वृषौ वा 1/141), 1/142)**

(53) ऋ का अरि - (**अरिर्दृप्ते 1/144**)

यथा - दरिओ (दृप्तः)

(54) ऋ का इलि - (**लृत इलिः क्लृप्त–क्लृन्ने 1/145**)

यथा - किलित्तो (क्लृप्तः), किलिन्नो (क्लृन्नः)

(55) ए का इ - (**एतइद्धा वेदना–चपेटा–देवर केसरे 1/146**)

यथा - वेअणा - विअणा (वेदना), चवेडा - चविडा (चपेटा), देअरो - दिअरो (देवरः) केसरो-किसरो (केसरः)

(56) ऐ का ए - (**ऐत एत् 1/148**)

यथा - सेला (शैलाः), एरावणो (ऐरावणः), केलासो (कैलाशः), वेज्जो (वैद्यः), केटवो (केटभः), वेहव्व (वैधव्यम्)

(57) ऐ का इ - (**इत्सैन्धव शनैश्चरे 1/149**)

यथा - सिंधवं (सैधंवम्), सणिच्छरो (शनैश्चरः), सेन्नं - सिन्नं (सैन्यम्) (**सैन्ये वा 1/150**)

(58) ऐ का अइ - (**अइ–दैत्यादौ च 1/151**)

यथा - सइण्णं (सैन्यम्), दइच्चो (दैत्यः), दइन्नं (दैन्यम्), अइसरियं (ऐश्वर्यम्), भइरवो (भैरवः), वइजवणो (वैजवनः), दइवअं (दैवतम्), कइअवं (कैतवम्), वइसाहो (वैशाखः), वइसालो (वैशालः), वइदब्भो (वैदर्भः), वइस्साणरो (वैश्वानरः), सइरं (स्वैरं), चइत्तं (चैत्यम्), वेरं - वइरं (वैरम्), केलासो - कइलासो (कैलाशः), केरवं-कइरवं (कैरवं), वेसवणो - (वइसवणो (वैश्रवणः), वेसम्पायणो-वइसम्पायणो (वैशम्पायनः), वेआलिओ-वइआलिओ (वैतालिकः), वेसिअं-वइसिअं (वैशिकम्), चेत्तो - चइत्तो (चैत्रः) (**वैरादौ वा 1/152**), देव्वं-दइव्वं-दइवं (दैवम्) (**एच्च दैवे 1/153**)

(59) ओ को अउ - (**ओतोद्वान्योन्य – प्रकोष्ठातोद्य–शिरोवेदना–मनोहर–सहोरूहेत्कोश्च वः 1/156**)

यथा - अन्नन्नं-अनुन्नं (अन्योन्यम्), पवट्ठो-पउट्ठो (प्रकोष्ठः), आवज्जं (आउज्जं (आतोद्यं) सिर-वियणा-सिरो-विअणा (शिरो-वेदना), महरहरं - मणोहरं (मनोहरं), सररुहं - सरोरुहं (सरोरूहम्)

(60) ओ का ऊ - (**ऊत्सोच्छवासे 1/157**) सूसामो (सोच्छवासः)

(61) ओ का अउ एवं आअ - (**ग्व्यउ – आअः 1/158**) गउओ, गउआ, गाओ (गो)

(62) औ का ओ - (औत ओत्) कोमुई - कौमुदी, जोव्वणं (यौवनम्)

(63) औ का उ – **(उत्सौन्दर्यादिषु 1/160)**, सुन्देरं (सौन्दर्यम्), कोच्छेअयं – कुच्छेअयं **(कौक्षेयम्)** **(1/161)**

(64) औ का अउ – **(अउः पौरादौ च 1/162)**, पउरो (पौरः), चउरो ,(चौरः) कउरवो (कौरवः)

(65) औ का ए – **(एत् त्रयोदशा वा स्वरस्स सस्वर व्यञ्जनन 1/165)**

यथा – तेरह (त्रयोदशः), तेवीस (त्रयोविंशति), तेतीस (त्रयस्त्रिंशत्), थेरो (स्थविरः), वेइल्लं (विचकिलम्), एक्कारो (अयस्कारः) **(स्थविर–विचकिलायस्कारे 1/166)**, कयलं-केलं (कदलम्) **(वा कदले 1/167)**, कण्णियारो – कण्णेरो **(वेतः कर्णिकारे 1/168)**

(66) स्वर-सहित व्यञ्जन का ओ – **(ओत्–पूतर–बदर–नवमालिका–नव–फलिका–पूगफले 1/170)**

यथा – पोरो (पूतरः), बोरं (बदरम्), नो – मालिका (नव-मालिका), नोहलिया (नवफलिका), पोष्फलं (पूगफलम्), मऊहो – मोहो (मसूखः), लवणं-लोणं (लवणम्), चउग्गुणो – चोग्गुणो (चतुर्गुणः), चउत्थी-चोत्थी (चतुर्थी), चउद्दहो-चोद्दहो (चतुर्दशः), चउव्वारो-चोवारा (चतुर्वारः), सुउमालो-सोमालो (सुकुमारः), कोउल्लहं – कोहलं (कुतूहलम्), उऊहलो-ओहलो (उद्‌खलः)

उदूहलं – ओक्खलं (उलूखलम्) (1/174)

– अवयरइ-ओअरइ (अवतरति), अवयासो-ओयासो (अवकाशः), अवसरइ-ओसरइ (अपसरति), अवसारिअं – ओसारिअं (अपसारितम्)

– उवहरिअं – ओहरिअं – उहसिअं (उपहसितम्), उवज्झाओं – ओज्झाओ – उज्झाओ (उपाध्यायः), उववासो – ओसासो-ऊआसो (उपवासः)

पाठ – अठारह

सरल व्यञ्जन विचार

व्यञ्जन परिवर्तन

(1) क का ख – खीलो (कील:), खुब्जो (कुब्ज:), खप्परं (कर्पूरम्) (कुब्ज–कर्पूर–कीले क: खोऽपुष्पे 1/18)

(2) क का ग – (**मरकत–मदकले ग: कंदुके त्यादे: 1/182**)

यथा – मरगयं (मरकतम्), मयगलो (मदकल:), गेन्दुअं (कन्दुकम्), एगो (एक:)

(3) क का च – (**किराते च: 1/183**) चिलाओ (किरात:)

(4) क का भ या ह – (**शीकरे भ–हौ वा 1/184**)

यथा – सीभरो सीहरो (शीकर:)

(5) क का म – (**चंद्रिकायां म: 1/185**)

चंदिमा (चंद्रिका)

(6) क का ह – (**निकष–स्फटिक–चिकुरेह: 1/186**)

यथा – निहयो (निकष:), फलिहो (स्फटिक:), चिहुरो (चिकुर:)

(7) ख, घ, थ, ध, भ का ह – (**ख–घ–थ–ध–भाम् 1/187**)

ख – यथा – साहा (शाखा, मुह (मुखं), लिह (लिख्)

घ – यथा – मेहो (मेघ:), माहो (माघ:), जहणं (जघनम्)

थ – यथा – णाहो (नाथ:), कह (कथ), मिहुणं (मिथुनम्), जहा (यथा)

ध – यथा – साहू (साधु:), बधिरो (वहिर:), इंद-हणू (इंद्र-दानृ:)

भ – यथा – सहा (सभा), णहं (नभम्), सहावो (स्वभाव:)

(8) थ का ध या ह – (**पृथकि धो वा 1/188**)

पिधं-पुधं-पुहं (पृथक्), अध-अह (अथ)

(9) ख का क – (**श्रृंखले ख: क: 1/189**)

सङ्कलं (श्रृंखलम्)

(10) ट का ड - **(टो डः 1/195)**

यथा - घडो (घटः), पडो (पटः), णडो (नटः), भडो (भटः), चविडा (चपेटा), फाडेइ (फाटयति)

(11) ट का ढ - **(सटा–शटक–कैटभे ढः 1/196)**

यथा - सढा (सटा), सराढो (शटकः), केढवो (कैटभः)

(12) ट का ल - **(स्फटिके लः 1/197)**

यथा - फलिहो (स्फटिकः), चविला (चपेटा), पाल (पाट) (चपेटा–पाटौ वा 1/98)

(13) ठ का ढ - **(ठो ढः 1/199)**

यथा - मढो (मठः), कमढो (कमठः), कुढारो (कुठारः), पढ (पठ्)

(14) ड का ल - **(डो लः 1/202)**

यथा - वलयामुंह (वडयामुहम्), गरूलो (गरुडः), तलायं (तडागम्), कील (क्रीड)

(15) ण का ल - **(वेणौ णो वा 1/203)**

यथा - वेणू - वेलू

(16) च का छ - **(तुच्छे तश्च – छौ वा 1/204)**

यथा - तुच्छं - छुच्छं (तुच्छम)

(17) त का ट - **(तगर – त्रसर–तूवरे टः 1/205)**

यथा - टगरो (तगरः), टसरो (त्रसरः), टूवरो (तूवरः)

(18) त का ड - **(प्रत्यादौ डः 1/206)**

यथा - पडिवन्नं (प्रतिपन्नं), पडिहासो (प्रतिभासः), पडिहारो (प्रतिहारः), पाडिप्फद्धी (प्रतिस्पद्धि), पडिसारो (प्रतिसारः), पडिनिअसं (प्रतिनिवृत्तम्), पडिमा (प्रतिमा), पडिवया (प्रतिपदा), वेडिसो (वेतसः), **(इत्वे वेतसे 1/207)**

(19) त का ण - **(गर्भितातिभुक्तके णः 1/208)**

यथा - गब्भिणो (गर्भितः), अणिउंतयं (अतिमुक्तकम्),
रुण्णं (रुदितम्), दिण्णं (दितम्) **(रुदिते दिनाण्णः 1/209)**

(20) त का र - **(सप्तरौ रः 1/210)**

यथा - सत्तरी (सप्ततिः)

(21) त का ल - **(अतसी–सातवाहने लः 1/211)**

यथा - अलसी (अतसी), सालवाहणे (सातवाहन),

पलिअ - पलिलं (पलितं) **(पलिते वा 1/212)**

(22) त का ह - **(वितस्ति–वसति–भरत–कातर–मातुलिंगे हः 1/214)**

यथा - विहत्थी (वितस्तिः), वसही (वसतिः), भरहो (भरतः), काहलो (काहरः) माहुलिङ्ग (मातुलिङ्गम्)

(23) थ का ढ - **(मेढि–शिथिर–शिथिल–प्रथमे थस्य ढः 1/215)**

यथा - मेढी (मेथिः), सिढिलो (शिथिरः), सिढिलो (शिथिलः) पढमो (प्रथमः)

णिसीढो (निशीथः), पुढवी **(पृथिवी) (1/216)**

(24) द का ड - **(दशम्–दष्ट–दग्ध–दोला–दण्ड दर दहि दम्भ–दर्भ–कदन–दोहदे दो वा डः 1/217)**

यथा - डसणं (दशनम्), डट्ठा (दष्टः), डड्ढो (दग्ध), डोला (दोला), डण्डो (दण्डः), डरो (दरः), डाहो (दाहः), डम्भो (दम्भः), डम्भो (दर्भः) कडणं (कदनम्), डोहलो (दोहलः),

डस (दंश्), डह (दह्) **(दंश–दहोः 1/218)**

(25) द का र - **(संख्या–गदगदे रः 1/219)**

यथा - एआरह (एकादश), बारह (द्वादश), तेरह (त्रयोदश), गग्गरं (गद्गदं)

करली (कदली), **(कदल्यामद्रुमे 1/220)**

(26) द का ल - **(प्रदीपि–दोहले लः 1/221)**

पलीवेइ (प्रदीयति), पलित्तं (प्रदीप्तम्), दोहलो (दोहद),

कलम्बो **(कदम्बे वा 1/222)**

(27) ध का ढ - **(निषधे धो ढः 1/226)**

निसढो (निषधः)

ओसढं (औषधम्) **(वौषधे 1/227)**

(28) न का ण - **(नो णः 1/228)**

यथा - णाणं (ज्ञानम्), जाण (जान), णयणं (नयनम्),

नरो–णरो (नरः), नई–णई (नदी), नमो–णमो (नमः), नेड–णेड (नेमि) [illegible]

(नादौ 1/229)

(29) प का व - **(पो वः 1/231)**

सवहो (शपथः), पदीवो (प्रदीपः), पाव (पाप), उवमा (उपमा) [illegible]

(30) प का फ - **(पाटि–परुष–परिघ–परिखा–पनस–पारिभद्रे फः 1/232)**

यथा - फाल (पाट), फरूसो (परूषः), फलिहो (परिधः), फलिहा (परिखा), फणसो (पनसः), फालिहद्दो (पारिभद्रः)

(31) क का भ या ह - **(फो भ–हौ 1/236)**

यथा - रेभो - रेहो (रेफः), सिभा (शिफा), मुत्ताहलं (मुक्ताफलं),

सभलं-सहलं (सफलम्), सेहालिआ (शेफालिका), गुह–गुभ (गुफ्)

(32) न का ण - **(लाहल–लांगल–लांगुले वादे र्णः 1/256)**

यथा - लङ् गलं-णङ् गूलं (लांगूलम्), लाहलो - णाहलो (लाहलः), लङ्गूलं-णङ्गूलं (लांगूलम्),

णिडालं - णडालं (ललाटम्) **(ललाटे च 1/257)**

(33) श, ष का स - **(श–सोः सः 1/260)**

यथा - सद्दो (शब्दः), कुसो (कुशः), जसो (यशः), दस (दश), सुद्धं (शुद्धम्), सुहं (शुभम्), कसायो (कषायः), निहसो (निकषः), घोस (घोष), सेसो (शेषः), विसेसो (विशेषः)

(34) श, ष का ह - **(दश् – पाषाणे हः 1/262)**

यथा - दह (दश), पाहाणो (पाषाणः)

(35) ह का घ - **(हो घोनुस्वारात् 1/264)**

यथा - सिंघो (सिंहः), संघारो (संहारः), दाघो (दाहो)

(36) आदि ष, श, स का छ - **(षट्–शमी–शाव–सुधा–सप्तपर्णेष्वादेश्छः 1/265)**

यथा - छट्टो (षट्), छप्पओ (षट्पदः), छमी (शमी), छावो (शावः), छुहा (सुधा), छत्तिवण्णो (सप्तपर्णः),

सिरा–छिरा (शिरा) **(शिरायां वा 1/266)**

व्यञ्जन – लोप

(1) क, ग, च, ज, त, द, प, य, व व्यञ्जनों का प्रायः लोप होता है। यदि ये सभी व्यञ्जन मध्य और अंत में हों। **(क–ग–च–ज–त–द–प–य–वां प्रायो लुक् 1/177)**

क - यथा - तित्थअरो (तीर्थकरः), लोओ (लोकः), एओ (एकः)

ग - णओ (नगः), णअरं (नगरं), कंअणं (कंगनम्)

च - कवअं (कवचम्), वयणं (वचनम्), सई (शची)

ज - रअअं (रजकम्), राआ (राजा), गओ (गजः)

त - गओ (गतः), सुगओ (सुगतः), रिऊ (ऋतु)

द - मअणो (मदनः), वयणं (वदनम्), आई (आदिः)

प - सुउरिसो (सुपुरुषः), रिऊ (रिपुः)

य - णिओओ (नियोगः), विओओ (वियोगः), विणअं (विनयम्)

व - लाअण्णं (लावण्य), विउहो (विवुधः)

स्वर-सहित व्यञ्जन लोप -

(1) **(लुग भाजन-दनुज-राजकुले जः सस्वरस्य न वा 1/267)**

ज - लोप - भायणं-भाणं (भाजनम्), दणु-वहो (दनुज-वधः)
राय-उलं-राउलं (राजकुलम्)

क/ग लोप - वायरणं - वारणं **(व्याकरणम्) (1/268)**
पायारो - पारो (प्रकारः)
आगओ - आओ (आगतः)

य लोप - **(किसलय - कालायस - हृदये यः 1/269)**

यथा - किसलयं-किसलं - कालायसं - कालासं
हिअयं - हिअं (हृदय)

द लोप - **(दुर्गादेव्युदुम्बर-पादम्पतन-पादपीठन्तर्दः 1/270)**

यथा - दुग्गा वी (दुर्गा देवी), उउम्बरो - उम्बरो (उदुम्बरः)
पाद-पा-वयणं (पाद-पतनम्), पाय-वीढं-पावीढं (पादपीठम्)

व का लोप - **(यावत्तावज्जीविता वर्तमानावट-प्रावरक-देव-कुलैगमेवे वः 1/271)**

यथा - जाव - जा, ताव - ता, जीविअं - जीअं
आवत्तमाणो - आत्तमाणो, आवडो-अडो
पावारओ - पारओ, देव-उलं - दे - उलं, एवमेवं - एमेवं

अन्त्य - व्यञ्जन - लोप

(1) **(अन्त्य-व्यञ्जनस्य 1/11)**

राज (राजन्), अप्प (आत्मन्), जाव (यावत्), ताव (तावत्), जसो (यशस्)

● **नोट** - मध्य-व्यञ्जन का लोप नहीं होता है ।

पाठ – उन्नीस

संयुक्त व्यञ्जन विचार

संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन –

(1) क्क – **(शक्त–मुक्त–दष्ट–रुग्ण–मदुत्वे को वा 2/2)**

यथा – सक्को (शक्तः), मुक्को (मुक्तः), डक्को (दष्टः) लुक्को (रुग्याः), माउक्कं (मुदुत्वम्)

नोट – उक्त शब्दों के व्यञ्जन लोप होने पर उससे समान व्यञ्जन का द्वित्व हो जाता है।

यथा – सत्तो (शक्तः), मुत्तो (मुक्तः), दट्ठो (दष्टः), लुग्गो (रूग्णः), माउत्तणं (मृदुत्वम्)

(2) आदि (शब्द के पहले) क्ष का ख – **(क्षः खः क्वचितु छ–झौ 2/3)**

यथा – खओ (क्षयः), खमा (क्षमा), खायओ (क्षायकः)

क्वचित् – छ, झ – छीण, झीण (क्षीणम्)

(3) मध्य या अंतिम क्ष का क्ख –

यथा – भिक्खा (भिक्षा), दिक्खा (दीक्षा), सिक्खा (शिक्षा), लक्खणं (लक्षणम्), अक्खयं (अक्षतम्), रूक्खो (वृक्षः)

(4) ष्क या स्क का क्ख – **(स्क – स्कयोर्नाम्नि 2/4)**

यथा – पोक्खरं (पुष्करम्), निक्खं (निष्कम्), खंधो (स्कंधो), (इव शब्द से पूर्व स्क का ख ही होता है।)

सुक्खं (शुष्कम्), खंदो (स्कंदः) **(शुष्क–स्कंदे वा 2/5)**

(5) आदि क्ष्, स्फ् का ख – **(क्ष्वेटकादौ 2/6)**

यथा – खोडओ (क्ष्वोटकः), खोडओ (स्फोटकः)

(6) स्त का ख – **(स्तम्भे स्तो वा 2/8)** खम्भो (स्तम्भः)

(7) स्त का थ – या ठ – **(थ–ठाव स्पंदे 2/9)**

यथा – थम्भो (स्तम्भः), ठम्भो (स्तम्भः)

(8) क्त का ग्ग या त्त – **(रक्ते गो वा 2/10)** रग्गो, रत्तो (रक्तः)

(9) त्य का च्च – **(त्यो ऽ चैत्ये 2/13)**

सच्चं (सत्यम्), पच्चयं (प्रत्ययम्)

णच्चं (नृत्यम्), भिच्चं (भृत्यम्)

पच्चूहो (प्रत्यूषः) (प्रत्यूषे पश्च हो वा 2/14)

(10) त्व का च्च, थ्व का च्छ, द्व का ज्ज, ध्व का ज्झ
(त्व-थ्व-द्व-ध्वां च-छ-ज-झाः क्वचित् 2/15)

यथा - त्व - भोच्चा (भुत्वा), णच्चा (ज्ञात्वा), सोच्चा (श्रुत्वा)

थ्व - पिच्छी (पृथ्वी)

द्व - विज्जो (विद्वान)

ध्व - बुज्झा (बुद्ध्वा)

(11) क्ष का च्छ - **(छोऽस्यादौ 2/17)**

यथा - अच्छिं (अक्षिम्), उच्छू (इक्षुः), लच्छी (लक्ष्मी), कच्छो (कक्षः), कुच्छी (कुक्षिः), मच्छिया (मक्षिका), वच्छो (वृक्षः), कच्छा (कक्षा),

रिच्छो (ऋक्षः) **(ऋक्षे वा 2/19)**

(12) थ्य, श्च, त्स और प्स का च्छ **(ह्स्वात् थ्य-श्च-त्स-प्सामनिश्चले 2/21)**

यथा - थ्य - पच्छं (पथ्यम्), मिच्छा (मिथ्या)

श्च - पच्छिमं (पश्चिमम्), पच्छा (पश्चात्)

त्स - उच्छाहो (उत्साहः), संवच्छलो (संवत्सरः), चिइच्छइ (चिकित्सति), मच्छरो (मत्सरः)

प्स - जुगुच्छ (जुगुप्सा), अच्छरा (अप्सरा)

(13) द्य, य्य, र्य का ज्ज **(द्य-य्य-र्या जः 2/24)**

यथा - द्य - विज्जा (विद्या), मज्जं (मद्यम्), वेज्जो (वैद्यः)

य्य - सेज्जा (शय्या)

र्य - कज्जं (कार्यम्), सुज्जो (सूर्यः), वज्जं (वर्यम्), पज्जं (पर्यायम्) अज्जो (आर्यः)

(14) ध्य या ह्य का ज्झ - (साध्वस - ध्य - ह्यां झः 2/26)

यथा - ध्य - उवज्झाओ (उपाध्यायः), सज्झाओ (स्वाध्यायः)

ह्य - मज्झं (मह्यम्), गुज्झं (गुह्यम्), सज्झं (सह्यम्)

(15) त्त का ट्ट - **(वृत्त–प्रवृत्त–मृत्तिका–पत्तन–कदर्थिते टः 2/29)**

यथा - वट्टो (वृत्तः), पवट्टो (प्रवृत्तः), मट्टिका (मृत्तिका) पट्टणं (पत्तनम्)

(16) र्त का ट्ट - **(र्तस्याधूतादौ 2/30)**

यथा - केवट्टो (केवर्तः), वट्टुलं वर्तुलम्, णट्टं (नर्तम्)

नोट - र्त का त्त

यथा - मुत्तो (मूर्तः), मुहुत्तो (मुहूर्तः), मुत्ती (मूर्तिः), कित्ती (कीर्ति), कत्तरी (कर्तरी), भत्तहरी (भर्तृहरी), धुत्तो (धूर्तः), कत्तिओ (कार्तिकः)

(17) स्थ, ष्ट का ट्ठ -

यथा - अट्ठी (अस्थि), उवट्ठिई (उपस्थिति)

कट - कट्ठं (कष्टम्), दुट्ठं (दुष्टम्), इट्ठं (इष्टम्), दिट्ठी (दृष्टिः), सिट्ठी (सृष्टि), लट्ठी (लष्टि), मुट्ठी (मुष्टिः), पुट्ठी (पुष्टिः)

(18) र्द का उड् - **(संमर्द – वितर्दि–विच्छर्द च्छर्दि–कपर्द–मर्दिते र्ड : 2/36)**

यथा - संमड्डो (संमर्दः), विअड्डी (वितर्दिः), विच्छड्डओ (विच्छर्दः, छड्डई (छर्दिः), कवड्डो (कपर्दः), मड्डिओ (मर्दितः),

गड्डहो (गर्दभः) **(गर्दभे वा 2/37)**

(19) न्द का ण्ड - **(कंदरिका–भिन्दिपाले ण्डः 2/38)**

यथा - कण्डलिआ (कंदरिका), भिण्डीवालो (भिन्दिपालः)

(20) ग्ध, ध्द का ड्ढ - **(दग्ध – विदग्ध – वृद्धि वृद्धे ढः 2/40)**

यथा - दड्ढो (दग्धः), विदड्ढो (विदग्धः), वुड्ढी (वृद्धिः), वुड्ढो (वृद्धः)

सड्ढा (श्रद्धा), इड्ढी (ऋद्धि), अद्धं - अड्ढं **(अर्द्धम् 2/41)**

(21) म्न या ज्ञ का ण्ण - शब्द के प्रारंभ में ण और मध्य एवं अंत में ण्ण - **(म्नज्ञो र्णः 2/42)**

यथा - म्न - णिण्णं (निम्नम्), पज्जुणो (प्रद्युम्नः)

ज्ञ - णाणं (ज्ञानम्), णाया (ज्ञाता)

(22) स्त का त्थ - **(स्तस्य थोऽसमस्तः स्तम्बे 2/45)**

यथा - थुई (स्तुतिः), हत्थी (हस्तिः), अत्थि (अस्ति), पत्थरो (प्रस्तरः)

(23) ष्प या स्प का प्फ - **(ष्प–स्पयोः फः 2/53)**

यथा - पुप्फं (पुष्पम्), सप्फं (शष्पम्), वुहप्फई (वृहस्पतिः), निप्फेसो (निष्प्रेसः), फंदणं (स्पंदनम्)

(24) र्य का र - (**ब्रह्मचर्य - तूर्य-सौन्दर्य-शौण्डीर्य र्यो रः 2/63**)

यथा - बम्हचेरं (ब्रह्मचर्यम्), तूरं (तूर्यम), सुंदेरं (सौन्दर्यम्), सोण्डीरं (सौण्डीर्यम्), धीरं (धैर्यम्) (धैर्ये वा 2/64) पेरन्तो (पर्यन्तम्) (2/65), अच्छेरं (आश्चर्यम्) (2/66)

(25) क्ष्म, श्म, ष्म, स्म, ह्म का म्ह - (**पक्ष्म-श्म-ष्म-स्म-ह्मां-म्हः 2/74**)

यथा - क्ष्म - पम्हाइं (पक्ष्मन्)

श्म - कुम्हाणो (कुश्मानः), कम्हारा (कश्मीराः)

ष्म - गिम्हो (ग्रीष्मः), उम्हा (ऊष्मा)

स्म - विम्हओ (विस्मयः)

ह्म - बम्हा (ब्रह्मा), सुम्हा (सुह्माः), बम्हणो (ब्राह्मणः)

(26) क्ष्म, श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण , क्ष्ण, का ण्ह - (2/75)

यथा - क्ष्म - सण्हं (सूक्ष्मम्)

श्न - पण्हो (प्रश्नः)

ष्ण - विण्हू (विष्णुः), जिण्हू (जिष्णुः), कण्हो (कृष्णः)

स्न - जोण्हा (ज्योत्स्ना), पण्हुओ (प्रस्तुतः)

ह्न - वण्ही (वन्हि)

ह्ण - पुण्वण्हो (पूर्वाह्न), अनवरण्हो (अपराह्न)

क्ष्ण - तिण्हं (तीक्ष्णम्), सण्ह (श्लक्ष्णम्)

व्यञ्जन-आगम -

(1) समासांत में विकल्प से व्यञ्जन का आगम हो जाता है। (**समासे वा 2/97**)

यथा - नई-गामो-(णइग्गागो) (नदी-ग्रामः)

कुसुम-पयरो-कुसुमप्पयारा (कुसुम-प्रकारः)

देव-थुई-देवत्थुई (देवस्तुतिः)

बद्ध-फलं-बद्धप्फलं (बद्धफलम्)

- तेल्लं (तैलम्), वेइल्लं (विचकिलम्) (2/98)

उज्जू (ऋजुः), पेम्मं (प्रेमम्), जोव्वणं (यौवनम्)

- सेवा - सेव्वा (सेवा), नीडं-नेड्डं (नीडम्)

नहा - नक्खा (नखाः), निहिओ - निहित्तो (निहितः)

खाणू-खण्णू (स्थाणुः), थीणं - थिण्णं (स्त्यानम्)

स्वर आगम –

यथा - छमा (क्ष्मा), सलाहा (श्लाघा), रयणं (रत्नम्) (2/101)

सणेहो (स्नेहः), अग्गी - अगणी (अग्निः) (2/102)

पलक्खो (प्लक्षः)

अरिहइ (अर्हति), सिरी (श्री), हिरी (ह्री), कसिणो (कृत्स्नः)

किरिया (क्रिया), दिट्ठिआ (दिष्टया) (2/104)

आयरिसो (आदर्शः), दरिसणं (दर्शनम्)

वरिसं (वर्षम्), हरिसो (हर्षम्)

तविओ (तप्तः) (2/105)

किलिन्नं (क्लिन्नम्), किलिट्ठं (क्लिष्टम्)

किलेसो (क्लेषः), सिलिओ (श्लोकः), सिलिट्ठं (श्लिष्टम्)

सुइलं (शुक्लम्) (लात् 2/106)

सिआ (स्यात्), भविओ (भव्यः), चेइअं (चैत्यम्), चोरिअं (चौर्यम्),

भारिआ (भार्या), वीरिअं (वीर्य), सूरिओ (सूर्यः), धीरिअं (धैर्यम्)

सोरिअं (शौर्यम्) (2/107)

सिविणो - सिसिणो (स्वप्नः) (2/108)

सणिद्धं - सिणिद्धं (स्निग्धम्) (2/109)

कसणो - कसिणो (कृष्णः) (2/110)

अरूहो - अरहो - अरिहो (अर्हन्) (2/211)

पउमं - पोम्मं (पद्मं), छउमं - छेम्मं (छद्मम्)

मुरक्खो (मूर्खः), दुवार (द्वारम्) (2/112)

तणुवी (तन्वी), लहुवी (लह्वी), गरुवी (गुर्वी)

पहुवी (पृथ्वी), बहुवी (बह्वी), मउवी (मृद्वी) (2/113)

सुवे-जणा (स्वे जनाः), सुवे कयं (श्वः कयम्) (2/114)

जीआ (ज्या) (2/105)

वर्ण – विपर्यय –

कणेरू (करेणू), वाणारसी (वाराणसी), (2/116)

आणालो (आलातः) (आलाने लनो 2/117)

अलचपुरं (अचलपुरं) (2/118)

मरहट्ठो (महाराष्ट्रः) (महाराष्ट्रे ह रोः) (2/119)

दहो (ह्रदः) (2/120), हलिआरो (हरितातः) (2/121)

लहुअं - हलुअं (2/122)

णडालं - (ललाटम्)

पाठ – बीस

निबन्ध

1. असंखयं जीवियं मा पमायए

अस्सिं संसारम्मि सव्वे पाणा सव्वे सत्ता सव्वे भूता सव्वे सत्ता सुहमिच्छंति, दुहं अप्पियं । पुरिसत्थेणं च सुहं अधिगच्छंति । णराण मित्तं पुरिसत्थो उज्जमो परिस्समो य । तेणं विणा कज्जाणि ण सिद्धंति । सव्वाणि कज्जाणि उज्जमेणं एव सिज्झंति ।

अलं कुसलस्स पमाएणं – पण्णासील – जणस्स साहगस्स य पमाएणं किंचि पयोजणं अत्थि। ते नु चिंतंति - दुभ-पत्तए पुडुयए जहा, णिवडइ राइगणाण अच्चए । एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम। मा पमायए ।। जह रुक्खम्मि पत्ताणि पतंति पंडुयए तहेव मणुजाणं जीवणं अत्थि, अवस्समेव एगाउ एग-दिणम्मि णिवडइ । अओ चिंतेज्ज असंखयं जीवियं - सुत्तव्व जीवणं, छिंण्णंतं ण पुणो एगमेव होइ । जे साहगा समणा य समणी सावगा य साविगा णिय-कत्तव्वं पडि उट्ठिए/जग्गिरे अत्थि, ते '**भारंडपक्खी व चरप्पमत्तो**' अहवा जह भारंडापक्खी अपमत्तो होऊण उज्जग-सीलवंती एव चरइ तहेव साहगा विचरंति । जइ एरिस णत्थि तह "**सव्वओ** पमत्तस्य णेयं । अओ अपमत्त-पुव्वगं चरेज्ज ।"

अप्पाण–रक्खी चरमप्पमत्तो (उत्त. 4/10) जे जणा सम्मदिट्ठी अत्थि, अणण्णपरमं णाणी अत्थि, चारित्तपहम्मि चरेंति ते सया खिप्पमुवेइ मोक्खं । मुत्तिपहं/णिव्वाणमग्गं/रयणत्तयं मग्गं पत्तेंति । तम्हा उट्ठिए नो पमायए (आ. 1/5/2) जग्गियवंता हवेज्जा, उज्ज मसीला हवेह । जहा सुत्तस्स सिंहस्स मुहे मिगा ण पविसंति तहा णाणा मणोरहेहि ण कज्जाणि सिज्झंति । सव्वे उज्जमा करणिज्जा । अपमत्तेण उज्जमो साहसं धीरत्तणं बुद्धि-सत्ति-परक्कमा वि आगच्छंति ।

पमाओ पंचविहो – मज्जं विसय-कसाया णिद्दा विगहा य पंचमी मणिया ।
इस पंचविहो एसा होई पमाओ या अप्पमाओ ।। (उत्त.)

पमादाओ विरत्ती अप्पमादो । '**जे छेय से विप्पमायं न कुज्जा**' जे रथस्स गई जाणेंति से धीरा अत्थि। **धीरे मुहुत्तमवि णो पगाएए ।**'

2. माया मित्ताणि णासइ

'माया' किं अत्थि ? इणं पण्हं समाहाणं अत्थि, माया छलकपड-रूवो अत्थि एसा बहिरंग-रूवो बहुसुंदरो अइलुहावत्तणं च । विणीयो आकस्सगो य माणस-माणसं । जहेट्ठम्मि सा माया अइदुक्खदाई, किलेसप्पदायगा, हिदय-घायगा मण सोग-संकुलत्तणं कुव्वंती य ।

चउ-कसाएसु इमाए तइय-ठाणं अत्थि । इमाए भासा-भासंता जीहा णत्थि, सा असिधारा अत्थि, महु-संसिलिट्ठा अत्थि । सा जीवणं परिपुट्ठं ण कुणइ, अवि तु **मित्ताणि णासइ** । एसा माया होइ अणत्थाय । जहिसं अंतरम्मि मायाए अंसो हवइ तो णाणारूवं पत्तेइ, माया जुत्तो सरलप्पा णत्थि । भगवईए उत्तो -

माया विउव्वइ, तो अमायी विउव्वइ ।

माया मिच्छादिट्ठी – जो जणो अस्सिं लोगंसि मायावी अत्थि सो "माई मिच्छादिट्ठी" इणं वयणमवि भगवईए अत्थि । अओ जो मिच्छादिट्ठी अत्थि **"सो माई पमाई पुण एइ गब्भं"** अहवा मायाए पुणो पुणो जम्मं मरणं च होइ । ठाणम्मि भासितो -

वंसीमूल–केतण–समाणं मायं अणुपविट्ठे ।
जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जंति ॥ स्था 4/2 ॥

वंसस्स जडसमा माया अत्थि, जो अप्पं णइरियम्मि णयइ ।

मायमज्जवभावेण – माया अज्जव-भावेण णस्सइ । उत्तरज्झयणे वि उत्तं - माया विजएणं अज्जवं जणयइ। मायं जो जयइ सो अज्जवभावं पत्तेइ । जइ एरिस-भावो णत्थि - तं तु

जइ वि य नगिणे किसे चटे, जइ वि य भुंजित–मासमंतसो ।
जे इह मायाहि मिज्जई, आगंता गब्भाय णंतसो ॥ (सूत्र 1/2/1/91)

जेहेट्ठे जो मायाए जुत्तो अत्थि सो अणंतसंसार-सायरे परिभमति । जो अज्जवभावेण जुत्तो अत्थि सो रिजुत्तणं पत्तेइ । सो एव 'तुमेव मित्तं तुमेव सत्तू' इणं वयणं णेऊण अस्सिं संसारम्मि सव्वेसिं जणाणं अप्पसम मण्णए ।

3. आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं

तजातिज्ज-विजातिज्ज-ठोस-वत्थुणो एमसमूहं 'पिंडं' अत्थि । तं आहारं वि भासए आहारस्स चउविहो- **"असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।"** तं आहारं एसणा आहारेसणा/पिंडेसणा अत्थि । तं आहारं मि- च एसण्ज्जिं । दसवेयालयम्मि भासिओ -

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रस ।
ण य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥ (दस. 1/2)

आहारस्स गवेसणा विहिपुव्वगं अवितव्वं । भमरसमवित्तिं पालेयव्वं । जे समणा मुत्ता अत्थि, [illegible] अत्थि ते दायाए पदत्त-आहारं गिण्हेंति । जहोत्तं -

एमे ए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाण–भत्तेसणे रया ॥ (दस. 1/3)

भिक्खाडणं – विहि-णिसेह-पुव्वगं भिक्खत्थं चरेज्ज । समभावं धारिऊण [illegible] लालसा-आसा-इच्छा-गिद्धिं परिचत्तिऊण भिक्खाडणं समाचरेज्ज । तं जहा -

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ ।
इमेण कमजोगेण, भत्तपाणं गवेसए ॥ (दस. 5/83)

आयारम्मि पिंडेसणाए अज्झयणम्मि (1) गवेसणा (2) गहणेसणा गासेसणा इमा तिविह-एसणाए विवेयणं अत्थि । तम्मि सचित-विहीण-आहारं एसणिज्ज भासिओ ।

भिक्खापरीए दोसा – जिणसुत्तेसुं आगमेसुं च आहाकम्मे, उद्देसिये, पूइकम्मे, मीसजाए, ठवणे, पाहुडियाए, पाओअरे, कीए, पामिच्चे इच्चाइ-वियालीस-दोसाणं विवेयणं अत्थि । तेसिं दोसाणं णिवारणं किच्चा मियमेसणिज्जं इच्छे । एसणासमिईए पिण्डवायं गवेसए । तं जहा –

एसणा समिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिंडवाये गवेसए ॥

भिक्खाचरियाए विवेगो – विवेक-सील-समणा, पण्णवंता साहू या साहगा भिक्खाचरियाए खभं धारेज्ज, मज्जयं णिक्खवेज्ज, अज्जयं चरेज्ज, मणसा वयसा कायसा सदेव संजम-तव-चाग-पुव्वगं समणत्तणं पालेज्ज। समणत्तणम्मि णिम्मवित्ती ण हवेज्ज –

अदीणे वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ मोयणम्मि मायन्ने एसणारए ॥ (दस 5/239)

भारस्स जाआ मुणी भुंजएज्जा – आहारस्स एसणा वि संजमभारं हेउं करेज्जा । जे भिक्खू या भिक्खुणी संतुट्ठी य संजमी हुंति ते संतोसओ वित्तिं करेंति । ते "पक्खी पत्तं समादाय, णिर वेक्खो परिव्वए" । संजमी साहगा णाणी मुणी णिरवेक्खा हुंति, ते पक्खि व्व चरेंति । णीरसं आहारं संजए भुंजिज्ज ।

अलाभुत्ति न सोएज्जा – भिक्खू वा भिक्खुणी सया हि मज्जाणुसारं निद्दोस-आहारं अलाभे त्ति ण सोएज्जा, ण सोगं करेंति । ते तवो त्ति अहियाए' मुणिऊण णिच्चं अलोलुवी अगिद्धी वि हुंति । तं जहा –

अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादंते समुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥ (उत्त. 35/15)

अओ साधगमुणी अवगुणाणं चइत्ता आहारं इच्छे । तं जहा ।

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे ।

तत्थ भिक्खु सुप्पणिहि-इंदिए तिव्व-लज्ज-गुणवं विहरेज्जासि ॥

4. खामेमि सव्व जीवा

जत्थेव सया संती, सहिस्णुतं, णेहो, कारुण्णं मित्तिभावं च तत्थेव खमा हवइ । खमा परोप्परं समभावं उप्पज्जेति । संती जाइ । इमत्तो अण्णेसिं मणस्स जएज्जा, अण्णेसिं कुवियाराणं विरोहजण्ण-जीवणं स समेज्जइ ॥ कडुत्तं, वइरं, विरोहं पडिसोहं च सम्मएज्जा ।

महाजणा णाणीजणा खमा सीला हुंति । ते अण्णेसिं दोसाणं दिट्ठी कया वि ण देंति । ते सव्वे जीवाणं सव्वे सत्ताणं, सव्वे पाणाणं सव्वे भूताणं च णियसरिच्छमेव मण्णंते । ते कोहाओ विप्पमुत्ता हुंति । ते पियं अप्पियं संतीए सहेंति । जहोत्तं -

पियमप्पियं सव्वतितिक्खएज्जा । (उत्त. 21/15)

जे खमा सीला जणा हुंति ते धम्मे थिर-चित्तं होऊण समभाव-पुव्वगं चिंतेंति ।

खामेमि सव्व जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ (पंच प्रति)

एरिसा एव तेसिं पउत्ती णत्थि, अवि तु ते चिंतेंति - जे जणा अण्णेसिं अवराहं, दोसाणं कोहभावाणं च ण खमेंति, ण तेसिं दोसाणं बहिगुणं मण्णिऊण ण खएंति ते मित्तत्तणं सेउं तुट्टेंति । जम्हा तेसिं विगास-पहो वि अविरुज्झो होइ । जणाणं च आवस्सगं अत्थि अण्णेसिं दोसाणं, अण्णेसिं अवराहाणं विमुंचिऊण गुणाणं हि सरेज्ज । सज्जणा भाणुसमा हुंति । ते तेजं देंति, अंधयारं हणेंति । दोसाणं आच्छादएंति, गुणाणं पगडएंति। कहेज्जइ -

जसं संचिणु खंतिए – खमाभावेण जसं संचिणु । जे मुणी या णाणी होंति ते पुढविसमा अत्थि। जहा पुढवी सव्वं सहजरुवेण सहेइ तहा मुणी साहगा सज्जणा वि 'पुढविसमो' हवेज्जा ।

खंतिएणं जीवे परिसहे जिणइ – जे जणा खंतिं धारेंति, तेणं खंतिएणं परिसहाणं वि जिणेंति । पासविग- सत्तीणं उवसमेंति । मणं समभावे कुणंति । सव्वेसिं जीवरासीणं पडि धम्मणिहिअ - चित्तेण सव्वे खमावइत्ता सव्वेसिं खमामि एरिस - भावणाजुत्ता ते '**वेरं मज्झंण केणइ**' अस्स भावस्स धारेंति ।

5. समियाए धम्मे

आयारंग - सुत्तस्स देसणाए इणं वयणं अत्थि "**समियाए धम्मे आरिएहि पवेइए**" आरिय-पुरिसेहिं, समण-भगवंतेहि आइरिएहिं समत्तं, समभावं, समित्तं, समिअं, समं च धम्मो भासिआ/पण्णत्ता । जत्थेव समिया होइ तत्थेव सव्वेसिं किरियाणं हियस्स भावणा होइ ।

धम्म-देसणम्मि धम्मस्स अणेगाणि लक्खणाणि कियाणि । **दयाविसुद्धो धम्मो, रयणत्तयं च धम्मो, दंसणमूलो धम्मो, अहिंसा धम्मो, संजमों धम्मो, तवो धम्मो य । चारित्तं खलु धम्मो** वि पण्णत्तं। जत्थेव दंसण-णाण-पहाणाओ चारित्तं **हवइ** तत्थेव समो हवइ । समो समभावो समत्तो समत्तो य मोहक्खोहविहीण-अप्पम्मि हवइ । अण्णम्मि - **खमा** - अज्जव - मज्जव - सच्च - सोच - तव - चाग - अकिंचण - बंहचेरं दसविहो धम्मो पण्णत्तो ।

मूलत्तो धम्मो दुविहो – सुयधम्मे चेव चारित्त धम्मे चेव । (स्थानां 2/1) तिविहो - सम्मदंसण-णाण - चरित्ताणि । चउविहो - खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे । (स्था. 4/4) वि अत्थि । किन्तु जं धम्मं समभावं - पदेइ सो धम्मो समियाए धम्मो । दसवेयालयम्मि धम्मस्स एस सरुवो - धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ।

धम्मो दीवो – जरा मरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणीणं ।
धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं ॥ (उत्त. 23/68)

धम्मस्स समायरणेणं उत्तमा गई, उत्तमं सरणं उत्तमो तवो संजमो य अहिंसा वि उत्तमा । जे जणा धम्मं कुणेंति तस्स रयणीओ सफला जंति । जे जणा अधम्मं कुणेंति तस्स रयणीओ विफला जंति । अओ जं सेयं समाचरेंति । तं सोच्चा अहिंसा संजमं तवं खंतिं च आराहएंति । तं जहा -

जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंतिमहिंसयं । (उत्त 3/81)

दिव्वं च गइं गच्छंति चारित्ता धम्मारियं - जे आरिया, साहगा य सम्मं धम्मं आचरेंति, ते दिव्वं गई च पत्तेंति ।

धम्मस्स विणओ मूलो – पण्हवागरणम्मि पण्णत्तं - विणओ वि तवो तवो पि धम्मो । जत्थ विणओ मूलम्मि होइ तत्थ तवो हवइ । तवेण उज्जुभावो हवइ । जहोत्तं -

"सोही उज्जुअभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।" (उत्त. 3/12)

सरलप्पणम्मि सोही हवइ, सुद्धी हवइ । सुद्धप्पणम्मि एव धम्मो थिरो जाइ । तम्हा धम्मं चर ! सुदुच्चरं। जो धम्मो आचरणम्मि दुच्चरो अत्थि सो समियाए आचरणेणं च सुदुच्चरो वि जाइ ।

मेहावी जाणिज्ज धम्मं – जे णाणी, मइमंता, पण्णावंता या साहगा अत्थि ते 'समियाए धम्मो' मुणिऊण माणुसत्तणं मूलं धम्मं आराहए । पवित्तचित्तम्मि ठिरम्मि सो धम्मो णिव्वाणमभिगच्छइ । अओ जो धम्मो जीवाणं समियं भावं उपज्जेइ तं धम्मं आचरेज्ज ।

6. कोहो पीइं पणासइ

कोहो णियस्स परस्स घातस्स अणुवगारस्स वियारेण उप्पज्जइ । जो कूरत्तणं परिणामं जम्मेइ । कोहो अप्पीई परिणामो अत्थि, जो पीइं पणस्सए । सच्चं सीलं विणयं चवि हणेज्ज । पण्हवागरणम्मि उत्तं-कुद्धो चंडिक्किओ मणूसो आलियं भणेज्ज, पिसुणं भणेज्ज, फरुसं भणेज्ज, अलियं-पिसुणं-फरुसं-भणेज्ज, कलहं करेज्जा, वेरं करिज्जा, विकहं करेज्जा इच्चाई । सो सच्चं सीलं विणयं हणेज्जा ।

कोहो पीइं पणासए – कोहो अग्गी समा अत्थि, तत्तो वि भीसणो । जहा अग्गी जणं जालेज्जइ। जो तस्स जलणम्मि आगच्छइ सो अवसं च आच्छेज्जइ । कोहस्स दावाणलम्मि कोवंतो/रोसंतो जलेइ/डहेइ। सो जइ खमाओ भावितो अत्थि । खंतीइ भाविओ भवइ अंतरप्पा संजय - कर - चरण - णयण - वयणो सूरो सच्चज्जव संपण्णो ।

उवसमेण हणे कोहं – कोहेण माणसिग - दुक्खं जाएज्ज । तं कोहं उवसमेण हणेज्ज । कोहणिग्गहेणं च खमासीलत्तणं च उप्पज्जइ । खमाए मित्ती । जीवाणं पडि सम्मभावणा जाएज्जा । जणेसुं एसा भावणा उवएज्जए-

**सव्वे पाणा पिआउया सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवहा ।
पियजीविणो जीविउकामा, सव्वेसिं जीवियं पियं** ॥ (आ. 2/2/3)

8. चरे पयाइं परिसंकमाणो

असंखयं जीवियं । जम्मं जीवणं, बालत्तणं च जीवणं, जोवणं वि जीवणं बुड्ढत्तणं च जीवणं मिच्चू वि जीवणमत्थि । रोगो सांगो चिंताई वि जीवणं असंखयं जीवणं । धम्माचरेणं विणा उज्जमेणं विणा य जीवणं असंखयं च । तत्तो णिवारिउं के वि ण समत्था । अंतिम-समयम्मि मिच्चुं मुहं आगच्छंति जणाणं के वि ताण भूया णत्थि । ण हु मंगलो, कोउगो, जोगो, विज्जामंतो मणितंतो ओसही वि ण असंखयं जीवणं णिवारेइ । किण्णु जो दोसाणं दंसिऊण पयाइं च साहधाणं पुव्वगं चलेइ अप्पमत्तो हवेइ सो असंखयं जीवणं परिमुंचइ।

"सएण विप्पभाएण पुढो वयं पकुव्वह" - आयारम्मि इणं विवेयणं च अत्थि । पमत्तजणा सयमेव पमादेणं च असंखयं जीवणं जणेइ । अओ मा पमायए । उत्तरंज्झयणम्मि अरिसं विसए उत्तं -

कुसग्गे जह ओसविंदुए, थोवं चिट्ठइ लंबमाणए ।
एवं मणुमाण जीवियं समयं गोयम । मा पमायए ॥ (उत्त. 10/2)

अप्पाण–रक्खी चरमप्पमतो – जो अप्पाण-रक्खी अत्थि सो भारंडपक्खिव्व समाचरेइ । जह भारंडपक्खी सया हि जग्गिअभूओ समाचरेइ तहेव साहगो अप्पमत्तभूओ सया हि संखयं हवइ । सो धीरो होइ । जो धीरो होइ सो अप्पमत्तो पच्चक्खाण-परिण्णा-पुव्वगं चागं च कुणंतो **मलावधंसी**–कम्माणं मलाणं झएज्जा । वुत्तं च -

थंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं आसे जहा सिक्खिय – वम्मधारी ।
पुव्वाइं वासाइ चरेऽपमत्तो तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ॥

जह सिक्खिओ आसो जुज्झम्मि छंदेण णिरोहेणं च विजयं च उवेइ । तह अप्पमत्तेणं मुणी पुव्वाइं कम्माइं खिप्पमुवेइ । सो मोक्खं वि उवेइ ।

मज्जं विसएं कसायं णिद्दं विग्गहं च पमादो । तेणं विरत्ती अप्पमत्तो । जो सव्वओ पमत्तो होइ सो एवं भयं उवेइ । जत्थेव णत्थि पमादो सो अप्पभत्तो भयमुत्तो होइ । अओ **जे छेय से** विप्पमायं न कुज्जा। मणुसस्स जीवणं महतपुण्ण-अंगो संखयं परिसंकमणं अत्थि ।

9. नाहं रमे पक्खिणी पंजरे वा

णाहं रमे पक्खिणी पंजरे वा, संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा परिग्गहारंभ–नियत्तदोसा ॥ (उत्त. 14/41)

जहां पक्खिणी पंजरम्मि बद्धो, आबद्धो या रमेज्जा सुहं आणंदं च ण अणुहवेइ तहा जीवो संसारसागरम्मि आबद्धोकिंचणं ण पत्तेइ, ण किंचणं सुहं । सुहं अत्थि अकिंचणत्ते, संसारछिन्नत्ते, उज्जुकडे, णिरामिसे विसयाहिसासे मुत्तो अपरिग्गहत्ते अणारंभरुवचरिए एव सुहं होइ ।

धीरे य सीला तवसा उदास – जे अस्सिं संसारम्मि धीरा सीला तवस्सी अत्थि ते उदारा हवेंति। जे उदारा पडिबुद्धा होंति ते कोंचपक्खिव्व हंस-समो जासं दलिसु छंदेण अप्प सहावेण रआ अणंत आगासम्मि

विहरंति । इसुगारस्स माऊ पुत्तं परियं पस्सिऊणं चिंतइ इमे मे पुत्ता में पिऊ/पियतमा गेहं मुंचिअण समण चरियं चरेज्जा । अहं वि चरेज्जा ।

तं जहा - **जहेव कुंचा समइक्कमंता तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।**
पलंति पुत्ता य पई मज्झं ते हं कहं नाणु गमिस्समेक्का ॥ (उत्त. 14/36)

णिखेक्खो परिव्वए – जे पण्णा साहगा अत्थि ते णिरवेक्खए समाचरेंति । ते होंति महव्वई, तिगुत्तगुत्ता, संजता समिइ-समिता उज्जुदंसिणो ।

तं जहा - **पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया ।**
पंचनिग्गहणा धीरा, णिग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ (दस. 3/11)

जे णिरवेक्खा होंति ते दंता संता वि अत्थि ।

जहुतं - **समणं संजयं दंतं हणेज्जा को वि कत्थइ ।**
नत्थि जीवस्स नासो त्ति एवं पेहेज्ज संजए ॥ (उत्त. 2/27)

जे समणा अत्थि संजता दंता हुंति । ते दसविह धम्मं पालेंति । आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं - आहारस्स एसणा परिमिअं सुद्धं आहारं च अणवेसयंता सया हि झाणं सज्झायं तवं च आचरेंति । जहुत्तं -

पढमं पोरसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई ।

तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीए सज्झायं ॥ (उत्त. 26/12)

एवं जे सासणे विगयमोहाणं पुव्विं भावणभाविया । ते एव अचिरेण कालेणं दुक्खस्संतमुवगया ।

10. पण्णा समिक्खए धम्मं

जे पण्णावंता बुद्धिमंता य होंति ते धम्मस्स समिक्खए । जे पण्णावंता होंति ते 'सव्वेसिं जीवियं पियं' भावणाए कुणेंति । पण्णावंता ते एव होंति जे सयस्स/अप्पस्स दोसाणं, अप्पाणं च हीणत्तणं च [illegible] तेसुं च संसोहणं करेउं जणणसीला हवेंति ।

एवं खु नाणिणो सारं – णाणिणो सारो णाणिणो गुणो सव्वेसिं जीवाणं रक्खणं च । णाणस्स [illegible] लक्खणो 'पढमं णाणं तओ दया' (दस. 4/10) अत्थि । जहा उत्तमम्मि आसम्मि समारुढो [illegible] णंदि घोसेणं च परक्कमी होइ तहा पण्णा सीलो णाणेण समागओ सूरो होइ । सो णिय-[illegible] कुणेइ सो इह जम्मम्मि य परजम्मम्मि य पगासए ।

णाणेण विणा न हुंति चरमगुणा – णाणी णाणेण हि राजए । तेणं णाणेणं विणा [illegible] णाणिस्स णाणं उवजोगो अत्थि णियं च परं च पगागए । णाणी/पण्णावंतो दीवसमो होंति । **तो** [illegible] जोइगमो' भावं उप्पज्जइ ।

णाणी तो पमायए कया वि – जो णाणी होइ सो पमायं वि करेइ । [illegible] जाणणं णिरक्खणं च अपुव्वसत्ती होइ ।

पण्णा हवेंति धीरा – जो पण्णा हवेंति ते धीरा वि । अपण्णा धीरा ण । ते न कम्मुणा कम्म खवेंति बाला । कण्णाणी अम्मलीला ण हवेंति, ण ते कम्माणं खवेंति । णाणी कम्माणं खवेंति उवसमेंति।

सव्वेसिं णाणं णाणीहिं देसियं - पंचविह - णाणं णाणीहिं भासियं । दब्वाणं गुणाणं च पज्जवाणं च देसियं । धम्मं अधम्मं गइं अगइं च वि देसिय ।

सोच्चा जाणइ कल्लाणं - णाणी धम्मं धम्ममग्गं धम्म - कल्लाणकारी गुणं च सोच्चा जाणइ । सो चिंतइ णिच्चं -

एक्को हु धम्मो णरदेव ! ताणं न विज्जइ अन्नमिहेइ किंचि । संजमो तवो अहिंसा परमो धम्मो' अणुचिंतइ सया सम्मणाणं सम्मदंमणं सम्मचारितं च समिक्खए । सो समिक्खए दयाकिसुद्ध धम्मं च ।